श्री चर्पट पंचक दर्शन

काव्यानुवादक स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी "अच्युत"

ओ३म्

- श्री चर्पट पंचक दर्शन -

जगत गुरू श्री शंकराचार्यचार्य जी महाराज कृत-
१- चर्पट पंजरिका,
२- मनीषा पंचकम्
३- साधना पंचकम्
४- कौपीन पंचकम्
५- श्री कनक धारा स्त्रोतम्

वेदों से
१-वज्रसूचिकोपनिषद व्याख्यान
२-ऋग्वेद का श्री सूक्त टीका सहित

श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत" कृत-
१-अष्टोत्तरशत नाम माला
२-श्री रामप्रकाश छन्द संग्रह
३-श्री रामप्रकाश पद संग्रह

भाष्यानुवाद एवँ पद्यात्मक
रचना
श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिराम जी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में वेदान्त विद श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रंथों के रचियता, यशस्वी टीकाकार, एवं सम्पादक
तत्वज्ञ स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"
श्रीमहन्त - उत्तमआश्रम (आचार्यपीठ) , जोधपुर

प्रकाशक- उत्तमआश्रम (आचार्यपीठ)
कागातीर्थमार्ग, जोधपुर-३४२००६
Phone: 0291 2547024,
Mob.No.9414418155
Email: uttamashram@gmail.com

ओ३म्

"श्री चर्पट पंचक दर्शन" के भाष्यानुवाद एवँ काव्यानुवादक
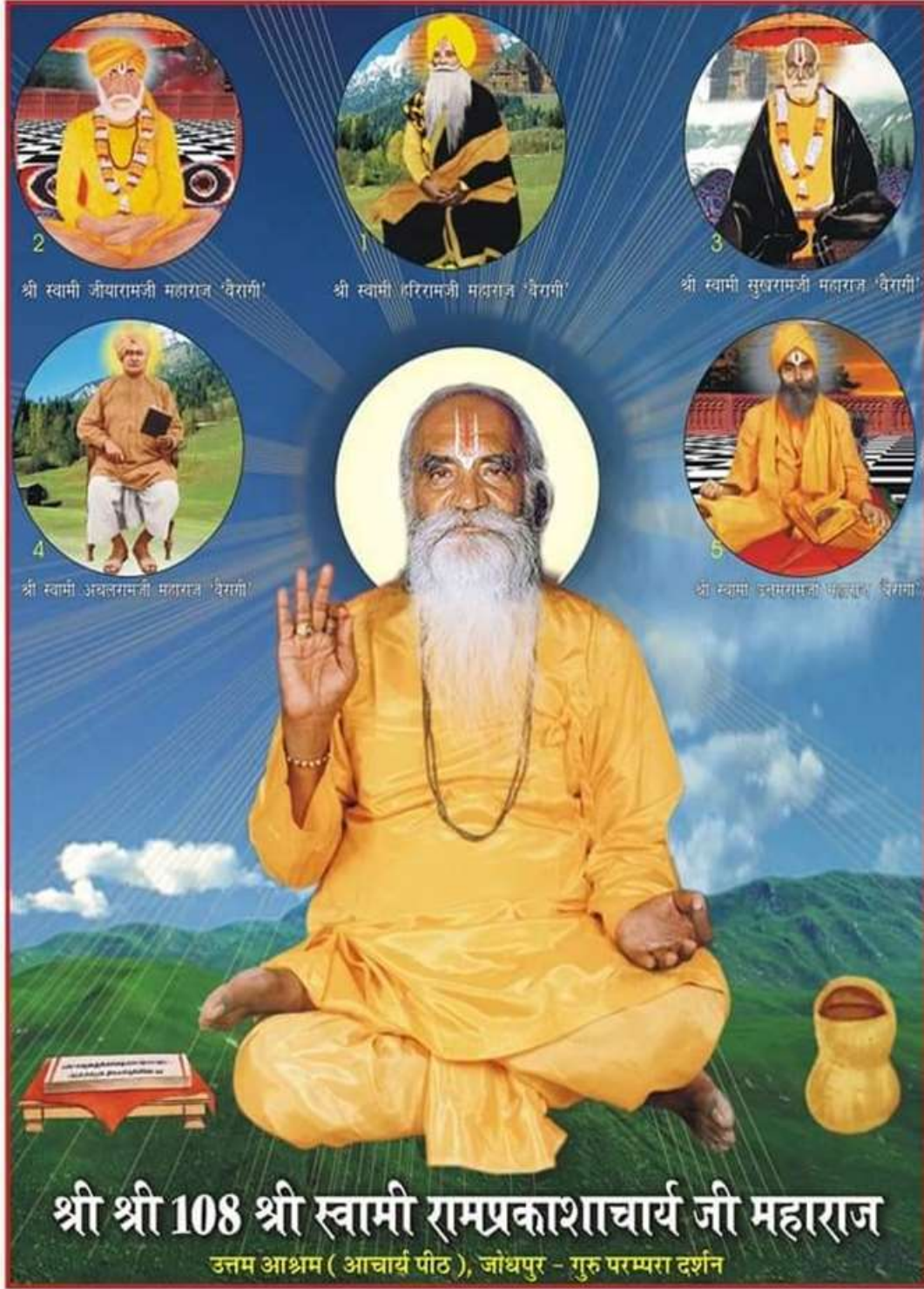
श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिराम जी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में वेदान्त विद श्री श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रंथों के रचियता, यशस्वी टीकाकार, सम्पादक एवं लेख

विषयानुक्रमणिका

कुल छन्द – सवैया २७९, इन्दव ११, घनाक्षरी ७, दोहा ५०, सोरठा १, कुण्डलिया १, = ३४९

सम्पादक की लेखनी से –

भारतीय वसुन्धरा पर अनादि काल से अनन्त ऋषि मुनि महापुरुष हुए हैं और उन्होंने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार शास्त्रों के सार को इकट्ठा करके लोक हितार्थ सरल भाषा में उपदेश दिया तथा साहित्य का निर्माण किया ऐसे ही युगपुरुष आज से हजार वर्ष पहले महान संत शिरोमणि आद्य जगत गुरू स्वामी श्री शंकराचार्य जी ने वेदांत विद्या की व्यवस्था में लोग हितार्थ कई शास्त्रों का निर्माण किया, उनमें "चर्पट पञ्जरीका स्त्रोत " नामक एक ग्रन्थ उपदेश कारक है चर्पट का शाब्दिक तात्पर्य है चपत अर्थात् चांटा, पञ्जरिका का पिंजड़ा और स्तोत्र का स्तुति हेतु उच्चारित शब्द,अज्ञान में पड़े हुए मूर्खों को उपदेश रूपी चांटा मार कर असार संसार से तरने के लिए उपदेश रूपक यह मूल रूप से बारह पदों में सरल संस्कृत में लिखा गया सुंदर स्तोत्र है, इसे द्वादश मंजरिका/भज गोविन्दम्/मोह मुगदर/मोह नाशक भी कहते हैं, कही कहीं पदों की संख्या कम ज्यादा मिली है । श्री शंकराचार्य जी ने संसार के मोह में ना पड़ कर भगवान् की भक्ति करने का उपदेश दिया है कि संसार असार-अश्वास्त है और भगवान् का नाम शाश्वत है। उन्होंने मनुष्य को व्यर्थ ज्ञान में समय ना गँवाकर और भौतिक वस्तुओं की लालसा, तृष्णा व मोह छोड़ कर भगवान् का भजन करने की शिक्षा दी है। अन्तकाल में मनुष्य की सारी अर्जित विद्याएँ और कलाएँ किसी काम नहीं आएँगी, काम आएगा तो बस हरि नाम वह शक्ति जो आपको सांसारिक बंधनों से मुक्त कर दे ।

प्रस्तुत ग्रंथ का नाम "चर्पट पंचक दर्शन" है जिसमे चर्पट पंजरिका, मनीषा पंचकम्, साधना पंचकम्, कौपीन पंचकम्, श्री कनक धारा स्त्रोत्रम् , वज्रसूचिकोपनिषद व्याख्यान, ऋग्वेद का श्री सूक्त है, जिसमें पांच ग्रंथ चर्पट पंजरिका, मनीषा पंचकम् , साधना पंचकम्, कौपीन पंचकम्, श्री कनक धारा स्त्रोत्रम्, श्री जगत गुरू शंकराचार्य जी कृत अद्भुत लघु रचना है और वेद से वज्रसूचिकोपनिषद व्याख्यान और श्री सूक्त है । इन लघु ग्रंथों का भाष्यानुवाद और काव्यानुवाद पूज्यपाद श्री गुरुदेव भगवान् स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी "अच्युत" ने बहुत सुन्दर इन्दव, घनाक्षरी व दोहा छन्द में काव्यानुवाद किया जो संस्कृत के न जानने वालों के लिए समझना सरल है । ग्रंथ के अंत में अष्टोत्तरशत नाम माला, श्री रामप्रकाश छन्द संग्रह, श्री रामप्रकाश पद संग्रह अनुपम दोहा, सवैया पदमय विविध विषय सम्पन रचना है । "चर्पट पंचक दर्शन" की उपादेयता और श्रेष्ठता पाठक वृन्द को स्वाध्याय मनन से सिद्ध होगी।

दोहा छन्द

चर्पट, मनीषा, साधना, वज्रसूचिक, श्री सूक्त ।
श्रवन स्वाध्याय मनन ते, जग से होय विमुक्त ।।१।।
वज्रसूचिक उपनिषद में, वर्ण व्यवस्था ज्ञान ।
कर्म विभाजन वर्ण का, अद्भुत उपाख्यान ।।२।।
"कनक धारा स्त्रोत" का, शुद्ध मन करे जो पाठ ।
सुख सम्पति धन धान से, जीवन ठाट अरु बाट ।।३।।
"विष्णु सहस्त्रनाम" जप, होय दरिद्रता दूर ।
विद्या वित् सुख ऐश्वर्य, मंगल विजय भरपूर ।।४।।
श्रवण किये संसय मिटे, मनन किये मन शुद्ध ।
श्री शंकर कृपा करे, जीव होय विशुद्ध ।।५।।
श्री गुरू रामप्रकाश वर, किया काव्य अनुवाद ।
कंठ धरे कोविद बने, हरत ताप विषाद ।।६।।

श्री गुरूचरणाम्बुज किंकर
जेठू दास वेदान्ती

ओ३म्

अथ श्री चर्पट पञ्जरिका – यतिवर श्री मत आद्य शंकरा चार्य जी कृत

मूल श्लोक

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।
सम्प्राप्ते सन्निहिते मरणे, नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे ॥१॥

भाषानुवाद -हे भटके हुए प्राणी ! सदैव परमात्मा का ध्यान कर क्योंकि तेरी अंतिम सांस के वक्त तेरा यह सांसारिक ज्ञान तेरे काम नहीं आएगा , सब नष्ट हो जाएगा। हे मूर्ख मति वाले मानव ! गोविन्द का भजन - स्मरण (सुमिरण) कर ले ।।१।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भूल भटक मत मोह ग्रसित नर, हरदम ध्यान हरि भज प्यारा ।
ज्ञान साँसारिक काम न आवत, अन्त समय सब नासत धारा ।।
कला अनन्त रटे बहु नासत, परम पुरुषार्थ कर जनम सुधारा ।
मोह मति श्वास खोय मत व्यर्थ, "रामप्रकाश" वदे सन्त सारा ।।१।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

मूढ़ जहीहि धनागमतृष्णां, कुरु सद्‌बुद्धिं मनसि वितृष्णाम् ।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं, वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥२॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! हम हमेशा मोह माया के बंधनों में फँसें रहते हैं कि हमें सुख की प्राप्ति नहीं होती । हम हमेशा ज्यादा से ज्यादा पाने की कोशिश करते रहते हैं। सुखी जीवन बिताने के लिए हमें संतुष्ट रहना सीखना होगा। हमें जो भी मिलता है उसे हमें खुशी खुशी स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि हम जैसे कर्म करते हैं, हमें वैसे ही फल की प्राप्ति होती है । गोविन्द का भजन कर ले ।।२।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

मोह माया के बन्धन बन्ध के, सुख कदापि मिले नही प्यारा ।
कर्म किये फल पावत है सब, पूण्य करो शुभ जनम सुधारा ।।
आशा की फाँस सदा दुःख दायक, त्याग किये सुख पावत धारा ।
मोह मति श्वास खोय मत व्यर्थ, "रामप्रकाश" वदे सन्त सारा ।।२।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

नारीस्तनभरनाभीनिवेशं, दृष्ट्वा - माया - मोहावेशम् ।
एतन्मांस - वसादि - विकारं, मनसि विचिन्तय बारम्बाररम् ॥ ३॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मूढ़मते ! हम स्त्री की सुन्दरता से मोहित होकर उसे प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करते हैं । परन्तु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह सुन्दर शरीर केवल हाड़ मांस गन्द सें भरा सौन्दर्यीकरण किया हुआ है । गोविन्द का भजन कर ले ।।३।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

युवती सुन्दर कुच से मोहित, चर्चित प्राप्त उपाय निहारे ।
हाड रु माँस विकार भरी यह, सुरँग मल को ढाक्यो है सारे ।।
मोह माया वश मोहित मूर्ख, अन्त समय दुःख रूप निहारे ।
चर्पट पञ्झरिका मार रहे सब, “रामप्रकाश” वदे सन्त सारा ।।३।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

नलिनीदलगतसलिलं तरलं, तद्वज्जीवितमतिशय चपलम् ।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं, लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥४॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे बन्धु ! हमारा मानव जीवन क्षण-भंगुर उस पानी की बूँद के समान है , जो कमल की पंखुड़ियों से गिर कर समुद्र के विशाल जल स्रोत में अपना अस्तित्व खो देती है। हमारे चारों ओर प्राणी तरह तरह की कुण्ठाओं एवं कष्टों से पीड़ित हैं- ऐसे जीवन में कैसी सुन्दरता ? गोविन्द का भजन कर ले ।।४।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

क्षणिक जीवन जल की बुदबुद, कँज दल टूट के सिन्धु बहावे ।
देखत जग में कुण्ठा को खोवत, अस्तित्व हीन सब पीड़ित जावे ।।
आयु विहाय कोरे घट जल क्षण, बूँद घटे जिमि आयु बितावे ।
मोह मति जन चर्पट पावत, “रामप्रकाश’ यों सन्त समझावे ।।४।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः, तावत् निज परिवारो रक्तः ।
पश्चात् धावति जर्जर देहे, वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥५॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! जिस परिवार पर तुम ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और जिसके लिए निरंतर परिश्रम करते रहे, वह परिवार तुम्हारे साथ तभी तक है , जब तक कि तुम उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हो । गोविन्द का भजन कर ले ।।५।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जेहि परिवार पे वार दिये सब, तन मन जीवन सर्वस्व ढायो ।
परिश्रम निशिदिन होय रह्यो कछु, भोजन भोग पशुवत भायो ।।
स्वार्थ परता होय रहे सब, परमार्थ हेतु में नाहि कमायो ।
चर्पट पञ्झरिका शँकर घोषित, “रामप्रकाश’ सब सन्तन गायो ।।५।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

यावत्पवनो निवसति देहे तावत् पृच्छति कुशलं गेहे ।

गतवति वायौ देहापाये, भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥६॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! तुम्हारे मृत्यु के एक क्षण पश्चात् ही वह तुम्हारा दाह-संस्कार कर देंगे। यहाँ तक की तुम्हारी पत्नी जिसके साथ तुम ने अपना पूरा जीवन व्यतीत किया - वह भी तुम्हारे मृत शरीर को घृणित दृष्टि से देखेगी । गोविन्द का भजन कर ले ।।६।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

इष्ट मित्र परिजन सब मिल कर, दाह सँस्कार करे अन्त आये ।
जीवन साथी ना साथ रहे जिन, जीवन साथ में नेह लगाये ।।
घृणित दृष्टि से देख डरे सब, होलीका के सम आग जलाये ।
मोह मे मोहित होय के व्यर्थ, "रामप्रकाश" नही हरि गुण गाये ।।६।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

बालस्तावत् क्रीडासक्तः, तरुणस्तावत् तरुणीसक्तः ।
वृद्धस्तावत् चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥७॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मूढ मते ! कुल सारे बालक क्रीडा में व्यस्त हैं और नौजवान अपनी इन्द्रियों को संतुष्ट करने में समय बिता रहे हैं। वृद्ध जन केवल चिंता एवँ तृष्णा करने में व्यस्त हैं । किसी के पास भी उस परमात्मा को स्मरण करने का समय नहीं है । गोविन्द का भजन कर ले ।। ७।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

क्रीड़ा मे रत बालक है कुल, तरुण रहे भज जाल कमावे ।
भोग रु रोग मे लोग रहे सब, वृद्ध चिन्ता महि आयु बितावे ।।
हरि गुण गाय सके नही क्षण भर, समय अभाव अभाग गमावे ।
चित के चिन्तन बिन है व्यर्थ, "रामप्रकाश" यों सन्त सुनावे ।।७।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

का ते कांता कस्ते पुत्रः, संसारोऽयं अतीव विचित्रः ।
कस्य त्वं कः कुत अयातः तत्त्वं चिन्तय यदिदं भ्रातः ॥८॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद - हे मानव ! कौन है हमारा सच्चा साथी ? हमारा पुत्र कौन हैं ? इस क्षण- भंगुर, नश्वर एवं विचित्र संसार में हमारा अपना अस्तित्व क्या है ? यह ध्यान देने वाली बात है। हे मूरख मानव ! गोविन्द का भजन कर । गोविन्द का भजन कर ले ।।८।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

चिन्तनीय है नित कौन विचार है, क्षण भर नश्वर देह हमारो ।
अन्त समय महि कौन सँगात है, सुत वित नारि को अस्तित्व हारो ।।
दृश्यमान है नश्वर श्राव्य जग, विचित्र माया को खेल है सारो ।
गोविन्द नाम भजो नर मूरख, "रामप्रकाश" अन्त एक सहारो ।।८।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

सत्संगत्वे निःसंगत्वं, निःसंगत्वे निर्मोहत्वम् ।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः ॥९॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! संत महात्माओं के साथ उठने बैठने से हम सांसारिक वस्तुओं एवं बंधनों से दूर होने लगते हैं। ऐसे हमें सुख की प्राप्ति होती है। सत्संग से वैराग्य, वैराग्य से विवेक, विवेक से स्थिर तत्त्वज्ञान और तत्त्वज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है ,सब बन्धनों से मुक्त होकर ही हम उस परम ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं । गोविन्द का भजन कर ले ।।९।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

हे मानव ! कछु सोच करो मन, साधन सँगत हृदय बिच धारो ।
होय विचार उदय शुभ जीवन, मिटे अज्ञान को मोह अँधारो ।।
अनुभव ज्ञान उदय उर आवत, निवृति बन्ध रु मोक्ष सँभारो ।
श्वास अमोल विहावत है नित, "रामप्रकाश" भज गोविन्द प्यारो ।।९।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥१०॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद - हे मानव ! यदि हमारा शरीर या मस्तिष्क स्वस्थ नहीं है तो हमें शारीरिक सुख की प्राप्ति नहीं होगी। यदि ताल में जल न हो तो ताल ताल नही रहता । जैसे धन के बिखर जाने से पूरा परिवार बिखर जाता है, उसी प्रकार ज्ञान की प्राप्ति होते ही इस विचित्र संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं । गोविन्द का भजन कर ले ।।१०।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

देह सरोग रहे यदि मस्तिष्क, साँसारिक भोग भोगे नही जावे ।
जल बिन ताल रहे नही ताल ही, धन बिन साथ रहे न रहावे ।।
ज्ञान होवे अज्ञान रहे नही तब, विचित्र सँसार से मुक्ति पठावे ।
ता हित नित्य करो सत सँगत, "रामप्रकाश" सन्त नित्य चेतावे ।।१०।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

मा कुरु धन – जन यौवन - गर्वं, हरति निमेषात्कालः सर्वम् ।
मायामयमिदमखिलं हित्वा ब्रह्म पदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥११॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मन ! हमारे मित्र, यह धन दौलत, हमारी सुन्दरता एवं हमारा गुरूर, सब एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा, कोई भी अमर नहीं है। यह संसार झूठ एवं कल्पनाओं का पुलिंदा है। हमें सदैव परम ज्ञान प्राप्त करने की कामना करनी चाहिए । गोविन्द का भजन कर ले ।।११।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

है मम बन्धु रु मीत सखा धन, रूप प्रभुत्व सम्पति भारी ।
काम आवे नही एक भी अँकित, अमर नही कुल नश्वर सारी ।।
यह जग झूठ है कल्पित केवल, ज्ञान कामना ले मन धारी ।
कर सतसँग उतर भवसागर, "रामप्रकाश" सन्त श्रुति गुहारी ।।११।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुञ्चति आशावायुः ॥१२॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद - हे मानव ! समय का बीतना और ऋतुओं का बदलना सांसारिक नियम है । कोई भी व्यक्ति अमर नहीं होता । मृत्यु के सामने हर किसी को झुकना पड़ता है। परन्तु हम मोह माया के बन्धनों से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते हैं । गोविन्द का भजन कर ले ।।१२।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

प्रकृति नियम से बदल रहे सब, तिथि वार पल ऋतुऐं सारी ।
मृत्यु काल खड़ो शिर ऊपर, मोह माया है बन्धन भारी ।।
सृष्टि रु सृष्टा अमर नही कोई, मुक्त होवन की करो तैयारी ।
मोह मति सब व्यर्थ कल्पित, 'रामप्रकाश' कहै सन्त हजारी ।।१२।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

यह बारह काव्य सूत्र ही विशेष रूप से प्रचलित हैं और गायन में बहुत ही प्रसिद्ध हैं।
शेष काव्य सूत्र उपदेशित है ।

मूल श्लोक

का ते कान्ता धनगतचिन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता ।
त्रिजगति सज्जन संगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥१३॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! सांसारिक मोह माया, धन और स्त्री के बन्धनों में फंस कर व्यर्थ की चिंता करने से हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। क्यों कि हम सदैव अपने आप को इन चिंताओं से घेरे रखते हैं ? क्यों हम महात्माओं से प्रेरणा लेकर उनके दिखाए हुए मार्ग पर नहीं चलते ? संत महात्माओं से जुड़ कर अथवा उनके दिए गए उपदेशों का पालन कर के ही हम सांसारिक बन्धनों एवं व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त हो सकते हैं ।गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।१३।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

धन रु धाम नारि सुत बन्धन, व्यर्थ चिन्तन है मन भारी ।
मन में शान्ति रति नहि आवत, सन्त से प्रेरित बुद्धि बिसारी ।।
सन्त शास्त्र उपदेश धारण कर, चिन्ता मुक्त हो जीव सुखारी ।
"रामप्रकाश" सत सन्त समझावत, श्रवण मनन कर हो भव पारी ।।१३।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।

"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

जटिलो मुण्डी लुञ्छित केशः काषायाम्बर - बहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढः उदरनिमित्तं बहुकृत शोकः ॥१४॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़ मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! इस संसार का हर व्यक्ति चाहे वह दिखने में कैसा भी हो, चाहे वह काषायादि किसी भी रंग का वस्त्र धारण करता हो, जुटमजुट अथवा घुटमघुट ,निरंतर कर्म करता रहता है । क्यों ? केवल रोज़ी रोटी कमाने के लिए, फिर भी पता नहीं क्यों हम सब कुछ जान कर भी अनजान बनें रहते हैं । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।१४।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जग में मानव कैसा भी हो वह, रँग कैसा पट पहनत लाई ।
रोजी रोटी उद्योग करे नित, मोह में भूल के आयु गमाई ।।
सब कुछ जान रहे अनजान ही, एक रति नहि साथ ले जाई ।
गोविन्द नाम कटे भव बन्धन, "रामप्रकाश' परमार्थ भाई ।।१४।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशन विहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चति आशापिण्डम् ॥१५॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! जिस व्यक्ति का शरीर निरुत्तर हो चूका है, देह में प्राण केवल नाम मात्र ही बचे हैं, जो व्यक्ति बिना सहारे के एक कदम भी नहीं चल सकता, वह व्यक्ति भी स्वयं को सांसारिक मोह माया से छुड़ाने में असमर्थ रहा है । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।१५।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जर जर देह जरायु के भीतर, रोग तृसित रहे प्राण सताई ।
अँग गलित मुख दन्त विहीन है, दण्ड गहि कर चालत भाई ।।
वृद्ध भया बल क्षीण भये अँग, तृष्णा मुक्त न आश सताई ।
मोह मति जन असमर्थ व्यर्थ, "रामप्रकाश" नही गोविन्द गाई ।।१५।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

अग्रे वह्निः पृष्ठेभानुः रात्रौ चिबुक - समर्पित - जानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवासः तदपि न मुञ्चति आशापाशः ॥१६॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव !आगे अग्नि ताप और पीठ पीछे सूर्य ,रात्रि में घुटने सिकुड़ कर शयन हो, भिक्षावृत्ति, वृक्षतरे आवास करने वाले भी आशा की पाँस से बन्धे है ,मुक्त होने में असमर्थ है । समय निरंतर चलता रहता है। इसे न कोई रोक पाया है और न ही कोई रोक पायेगा। सिर्फ अपने शरीर को कष्ट देने से और किसी जंगल में अकेले में कठिन तपस्या करने से हमें मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।१६।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

अग्नि ताप ते शीत निवारण, भानु तपे तरु तरे रहाई ।
तन समेट के शयन करे नित, भिक्षावृत्ति कर देह सुहाई ।।
तद्यपि तृष्णा बन्धन फाँस में, कर्म की वासना छूटत नाई ।
ताप सहे पर मुक्त ना पावत, "रामप्रकाश" ना गोविन्द गाई ।।१६।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

कुरुते गंगासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहिनः सर्वमतेन मुक्तिः न भवति जन्मशतेन ॥१७॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! हमें मुक्ति की प्राप्ति सिर्फ आत्मज्ञान के द्वारा प्राप्त हो सकती है। लम्बी यात्रा पर जाने से या कठिन व्रत रखने से हमें परम ज्ञान अथवा मोक्ष प्राप्त नहीं होगा । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।१७।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

विविध तीर्थाटन व्रत उद्यापन, चार हूँ धाम में दान दिलावे ।
गँगा सागर वास करे तप, दाम रु धाम लुटावत आवे ।।
जन्म शताधिक्य ज्ञान विहीन हो, मुक्ति न पावत साख सुनावे ।
मोह मति श्वास खोवे सब व्यर्थ, "रामप्रकाश" यों आयु बितावे ।।१७।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

सुर मन्दिर तरु मूल निवासः शय्या भूतलमजिनं वासः।
सर्व परिग्रह भोग त्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः ॥१८॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद –हे मानव ! जो मानव संसार के भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊपर उठ चुका है, जिसके जीवन का लक्ष्य शारीरिक सुख एवं धन और समाज में प्रतिष्ठा की प्राप्ति मात्र नहीं है, वह प्राणी अपना सम्पूर्ण जीवन सुख एवं शांति से व्यतीत करता है । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।१८।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भौतिकवाद को त्याग कियो सब, पद प्रतीष्ठा की आश भुलाई ।
तरुतर भूतल वास चाहे कहीं, सर्व परिग्रह भोग विहाई ।।
जीवन को लक्ष गोविन्द के हित, परम पुरुषार्थ हेत लगाई ।
परम शान्ति मय जीवन है वह, "रामप्रकाश' है धन्य कमाई ।।१८।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

योगरतो वा भोगरतो वा संगरतो वा संगविहीनः ।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं नन्दति नन्दति नन्दति एव ॥१९॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मूढमते ! चाहे हम योग की राह पर चलें या हम अपने सांसारिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करना ही अच्छा - अनुकूल समझें, यदि हमने अपने आप को परमात्मा से जोड़ लें तो हमें सदैव सुख प्राप्त होगा । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।१९।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

योग प्रवीण में युक्त रहे वर, साँसारिक काज को चाहे निभावे ।
उचित विचार करे निशि वासर, आपने चित मे यदि गोविन्द गावे ।।
ब्रह्म के ध्यान में लीन रहे वह, सुखद जीवन आप सुहावे ।
धन्य है जीवन आनन्द मय वह, 'रामप्रकाश" ताहि सन्त बतावे ।।१९।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

भगवद्गीता किञ्चिदधीता गंगा जल लव कणिका पीता ।
सकृदपि येन मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् ॥२०॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! जो अपना समय आत्मज्ञान को प्राप्त करने में लगाते हैं, जो सदैव परमात्मा का स्मरण करते हैं एवं भक्ति के मीठे रस में लीन हो जाते हैं, उन्हें यम दूतों द्वारा होने वाले संसार के सारे दुःख दर्द एवं कष्टों से मुक्ति मिलती है। गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।२०।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भगवत गीता को पाठ करे नित, हरि प्रसाद को भोग लगावे ।
कणिका गँग जल अचवत है वह, आतम चिन्तन समय बितावे ।।
कहा करे यम किंकर ताहि को, सतगुरू गोविन्द के गुण गावे ।
धन्य है जीवन ताहि को जग में, "रामप्रकाश" भव कष्ट मिटावे ।।२०।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे बहुदुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे ॥२१॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे परम पूज्य परमात्मा ! मुझे अपनी शरण में ले लो । मैं इस जन्म और मृत्यु के चक्कर से मुक्ति प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे इस संसार रूपी विशाल समुद्र को पार करने की शक्ति दो ईश्वर गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले।।२१।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जनम रु मरण है भव भव भीतर, मात गर्भस्थ जठराग्नि तायो ।
दुस्तर है भव सागर को भय, हे हरि शरणागत आयो ।।
भक्ति की शक्ति रु ज्ञान देवो प्रभु, सतगुरू आप बनो हित लायो ।
हे गुण सागर ! कृपा करो अब, "रामप्रकाश" गोविन्द गुण गायो ।।२१।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

रथ्याचर्पट - विरचित - कन्थः पुण्यापुण्य - विवर्जित- पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तः रमते बालोन्मत्तवदेव ॥२२॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते।

भाषानुवाद -हे मानव ! जो योगी सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर अपनी इन्द्रियों को वश में करने में सक्षम हो जाता है, उसे किसी बात का डर नहीं रहता और वह निडर होकर, एक चंचल बालक के समान, अपना जीवन व्यतीत करता है। गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।२२।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भव बन्धन से योगी है मुक्त सो, शम दम साध परमार्थ पायो।
भय रहित भये नित निर्भय, बाल केलि करि मौज मनायो ।।
वर्जित वासना पाप रु पूण्य की, उन ब्रह्मात्म से नेह लगायो।
मोह गति कर मोक्ष के भीतर, "रामप्रकाश" ब्रह्म रूप समायो ।।२२।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारम् विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥२३॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते।

भाषानुवाद -हे मानव ! हम कौन हैं? हम कहाँ से आये हैं? हमारा इस संसार में क्या है? ऐसी बातों पर चिंता कर के हमें अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। यह संसार एक स्वप्न की तरह ही झूठा एवं क्षण-भंगुर है। गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।२३।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

हम है कौन रु कहाँ से आगत, कौन मात पिता क्यों जग में आयो।
व्यर्थ है यह चिन्तन निरन्तर, स्वप्न समान सो सँकल्प ढायो ।।
विश्व विचार तजो सब व्यर्थ, क्षण भंगुर है यह देह विलायो।
होय निश्चिन्त भजो हरि गोविन्द, "रामप्रकाश" हरि होय सहायो ।।२३।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः व्यर्थं कुप्यसि सर्वसहिष्णुः।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ॥२४॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते।

भाषानुवाद -हे मानव ! संसार के कण कण में उस परमात्मा का वास है। तुममें, मुझमें और अन्यत्र भी सर्वव्यापक विष्णु ही हैं, तुम व्यर्थ ही क्रोध करते हो, यदि तुम शाश्वत विष्णु पद को प्राप्त करना चाहते हो तो सर्वत्र समान चित्त वाले हो जाओ। अभेद ज्ञान से कोई भी प्राणी ईश्वर की कृपा से अछूता नहीं है। सर्वत्र समान चित्त वाले हो जाओ ।।२४।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

कण कण आनन्द घन विराजित, अहम त्वम रु अन्यत्र सारे ।
शाश्वत एक अगोचर व्यापक, सम चित ज्ञान अभेद अपारे ।।
व्यर्थ क्रोध कहा पर करिय, ईश्वर स्वगत अँग सँभारे ।
मोह मति तज गोविन्द गावही, "रामप्रकाश" सम भाव विचारे ।।२४।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं वाछंसि अचिराद् यदि विष्णुत्वम् ॥ २५॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! हमें न ही किसी से अत्यधिक प्रेम करना चाहिए और न ही घृणा। सभी प्राणियों में ईश्वर का वास है। हमें सबको एक ही नज़र से देखना चाहिए और उनका आदर करना चाहिए क्योंकि तभी हम परमात्मा का आदर कर पाएंगे । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।२५।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

हम में तुम में शत्रु मित्र में वह, सम दृष्टि गत नेह निहारो ।
आदर भाव रखो घट भीतर, सर्वत्र चेतन एक अपारो ।।
ईश्वरीय सत्ता सर्व घट पूरण, गो इन्द्रिय को रक्षक प्यारो ।
आपनो स्वरूप गोविन्द भजो नित, "रामप्रकाश' वह तारणहारो ।।२५।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वात्मानं भावय कोऽहम् ।
आत्म ज्ञानविहीना मूढाः ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः ॥२६॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मनु ! हमारे जीवन का लक्ष्य कदापि सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति नहीं होना चाहिए । हमें उन्हें पाने के विचारों को त्याग कर, परम ज्ञान की प्राप्ति को अपना लक्षय बनाना चाहिए। तभी हम संसार के कष्ट एवं पीडाओं से मुक्ति पा सकेंगे । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।२६।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

मोह विकार कामादिक त्यगीय, साँसारिक भौतिक सुख बिसारो ।
त्याग विवेक वैराग्य के साधन, भक्ति रु ज्ञान को लक्ष निहारो ।।
जप तप नाम के सुमिरण पावत, कष्ट विपति से मुक्ति विचारो ।
मोह मति तज व्यर्थ उलझन, "रामप्रकाश" होय जीव सुधारो ।।२६।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

गेयं गीता नाम सहस्रं ध्येयं रूपमजस्रम् ।

नेयं सज्जन सङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥२७॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! उस परम परमेश्वर का सदैव ध्यान कीजिए। उसकी महिमा का गुणगान कीजिए। हमेशा संतों की संगती में रहिए और गरीब एवं बेसहारे व्यक्तियों की सहायता कीजिए । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।२७।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

विष्णु सहस्र नाम जपो नित, हरि की महिमा चित में धारो ।
दीन गरीब की सहाय करो सब, सन्त सेवा रु सतसँग सारो ।।
दान रु मान को दीजे सुपात्र को, गोविन्द गोविन्द नाम उचारो ।
व्यर्थ मोह मति तज मानव, 'रामप्रकाश" अन्त काल सुधारो ।।२७।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥२८॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! जिस शरीर का हम इतना ख्याल रखते हैं और उसके द्वारा तरह तरह की भौतिक एवं शारीरिक सुख पाने की चेष्टा करते हैं, वह शरीर एक दिन नष्ट हो जाएगा। मृत्यु आने पर हमारा सजावटी शरीर मिट्टी में मिल जाएगा। फिर क्यों हम व्यर्थ ही बुरी आदतों में फंसते हैं । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ॥२८॥

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जा तन की हम सेव करें नित, क्षणभंगुर वह नाश हमारो ।
रोग वृद्धायु रु मरण है निश्चित, क्यों नही व्यशन दोष निवारो ।।
हरि गोविन्द को नाम जपो नित, अन्त काल इक वही सहारो ।
मोह मति में उलझ मत व्यर्थ, "रामप्रकाश" सत सार निहारो ।।२८।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

अर्थमनर्थम् भावय नित्यं नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।
पुत्रादपि धनभजाम् भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः ॥ २९॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मानव ! संसार के सभी भौतिक सुख हमारे दुखों का कारण है। जितना ज्यादा हम धन या अन्य भौतिक सुख की वस्तुओं को इकट्ठा करते हैं, उतना ही हमें उन्हें खोने का डर सताता रहता है। सम्पूर्ण संसार के जितने भी अत्यधिक धनवान व्यक्ति हैं, वे अपने परिवार वालों से भी डरते हैं। गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भौतिकवाद है दु:ख का कारण, प्राप्त रक्षण परिश्रम भारी ।
नाश होवन को भय अति व्याप्त, आतुर भय धनवन्त सो हारी ।।
चोर बन्धु सुत राज भयातुर, परिजन दु:ख सतावन वारी ।
दान सुपात्र त्याग करो धन, "रामप्रकाश" भज कृष्ण मुरारी ।।२९।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्य विवेकविचारम् ।
जाप्यसमेत समाधिविधानं कुर्ववधानं महदवधानम् ॥३०॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे मित्र ! हमें सदैव इस बात को ध्यान में रखना चाहिए की यह संसार नश्वर है। हमें अपनी सांस, अपना भोजन और अपना चाल चलन संतुलित रखना चाहिए। हमें सचेत होकर उस ईश्वर पर अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देना चाहिए । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।

पद्मानुवाद ~ सवैया छन्द

नश्वर है जग दृश्य सकल यह, ध्यान रखो चित सावधन ताही ।
श्वास समय रु भोज सन्तुलित, नियम धर्म धरो मन माही ।।
तन मन धन हो समर्पित हरि हर, साधन विचार थरो मन पाही ।
दत्त चित्त मोह मति हर मानव, "रामप्रकाश" जिज्ञासु के ताही ।।३०।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

मूढः कश्चन वैयाकरणो, डुकृञ्करणाध्ययन धुरिणः।
श्रीमच्छम्कर भगवच्छिष्यै, बोधित आसिच्छोधितकरणः ॥३१॥

भाषानुवाद - किसी मोहित वैयाकरण के माध्यम से बुद्धिमान शिष्य के प्रति बोध प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कथन किया ~हे मानव ! आतम तत्व को जान कर अपने आप स्वरूप का निश्चय नही करो तब तक इस प्रकार व्याकरणादि के सूत्र-नियमों को कंठस्थ करने से आपकी रक्षा नहीं हो सकती ।।३१।।

पद्मानुवाद ~ सवैया छन्द

षट् शास्त्र व्याकरण सूत्र रटे मुढ, वृथा श्रम लिख पढे करेगो ।
वाग्पटु व्याख्यान रु दर्शन, कथा तथा मति यथा भरेगो ।।
हरि गुरू की शरण बिना ब्रह्मविद्, भवसागर भय नाहि टरेगो ।
"रामप्रकाश" भज गोविन्द को मुढ, भेद वाद से तभी तरेगो ।।३१।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।

मूल श्लोक

गुरुचरणाम्बुज निर्भर भक्तः संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानस नियमादेवं द्रक्ष्यसि निज हृदयस्थं देवम् ॥ ३२॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़मते ।

भाषानुवाद -हे भाग्यवान ! हमें अपने गुरु के कमल रूपी चरणों में शरण लेनी चाहिए। तभी हमें मोक्ष की प्राप्ति होगी। यदि हम अपनी इन्द्रियों और अपने मस्तिष्क पर संयम रख लें तो हमारे अपने ही हृदय में हम ईश्वर को महसूस कर पायेंगे । गोविन्द का भजन (सुमिरण) कर ले ।।३२।।

पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द

सतगुरू शरणागत होय सदा सत, चरणाम्बुज साधन धारण कीजे ।
शम दमादि सँग मन मस्तिष्क के, हृदय में हरि अनुभव लीजे ।।
मोह मुक्त हो उपरति दृष्टिगत, गोविन्द परब्रह्म अभय धरीजे ।
व्यर्थ उपासना आन तजो सब, "रामप्रकाश" भक्ति रस पीजे ।।३२।।

दोहा छन्द ~

श्वास समय नर देह में, मिले न वारम वार ।
"रामप्रकाश" सन्त सब कहै, हरि भज जन्म सुधार ।।१।।
शाश्वत दुखालय जगत में, दैहिक दुःख भण्डार ।
वस्तु सूचक सब देखते, मांगत सुख गंवार ।।२।।
विद्या चरित्र कुशलता, अचौर्य बुद्धि आचार ।
पुरुषार्थ फल दे अक्षय, "रामप्रकाश" विचार ।।३।।

||●|| चर्पट पंजरिका समाप्त ।।●।।

ओ३म्

श्री हरीं गुरू सचिन्दानन्दाय नम :

अथ श्री मनीषा पञ्चकम- यतिवर श्री मत आद्य शंकरा चार्य जी कृत

उपोद्घात / परिचय - एक दिन यतिवर शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ गंगा जी में स्नान करने काशी गये थे । गंगा स्नान के पश्चात् जब वे वापस लौट रहे थे तो उन्हें एक चाण्डाल वेषी चार कुत्तों को साथ लिए उसी रास्ते में आता दिखाई दिया । यतिवर शंकराचार्य रुक कर एक किनारे खड़े हो गये, ताकि कहीं उनसे चाण्डाल (स्पर्श न हो) छू न जाय , अन्यथा वे अपवित्र हो जायेंगे और उच्च स्वर में बोले " दूर हटो, दूर हटो ।"यह सुनकर चण्डाल वेषधारी ने कहा, " ब्राह्मण देवता -आचार्य ! आप तो वेदान्त के अद्वैतवादी मत का प्रचार करते हुए अद्वैताचार्य हुए भ्रमण करते हैं । फिर आपके लिये यह अस्पृश्यता-बोध (छुआ-छूत), भेद-भाव की दृष्टि दिखाना कैसे संभव होता है ? मेरा शरीर छू जाने से आप अपवित्र हो जायेंगे, यह सोच कर आप आशंकित हैं क्या ? किन्तु क्या हमदोनों का शरीर एक ही पंचतत्व के उपादानों से निर्मित नहीं है ? आपके भीतर जो आत्मा हैं और मेरे भीतर जो आत्मा हैं, वे एक नहीं हैं क्या ? हम दोनों के भीतर, सभी प्राणियों के भीतर क्या एक ही शुद्ध आत्मा विद्यमान नहीं हैं ?आचार्य ने अद्वैत वाणी भाषित समझ कर उन्हें दंडवत - प्रणाम किया और उनकी स्तुति की आचार्य शँकर ने जिन श्लोकों से चांडाल वेशधारी (भगवान् विश्वनाथ) की स्तुति की थी, वे श्लोक "मनीषा पंचकं" के नाम से प्रसिद्ध हैं । इस स्तोत्र के प्रत्येक स्तुति के अन्त में कहा गया है- " इस सृष्टि को जिस किसी ने भी अद्वैत-दृष्टि से देखना सीख लिया है, वह चाहे कोई ब्राह्मण हो चण्डाल हो; वही मेरा सच्चा सतगुरु है । "इन श्लोको कि संख्या पांच है और प्रत्येक के अंत में 'मनीषा' शब्द आता है इसीलिए इन्हें "मनीषा पंचकं" नाम से कहा गया है । जो इस प्रकार हैं -

मूल श्लोक ~शिवोवाच ~प्रश्न

अन्नामयादान्नमयम्थ्वा चैतन्यमेव चैतान्यात ।
द्विजवर दूरीकर्तु वाञ्छसि किं ब्रूहि गच्छ गच्छेति ॥१।।

भावार्थ भाष्यानुवाद- हे द्विज श्रेष्ठ ! " दूर हटो, दूर हटो" इन शब्दों के द्वारा आप किसे दूर करना चाहते हैं ? क्या आप (मेरे) इस अन्नमय शरीर को अपने शरीर से जो कि वह भी अन्नमय है अथवा शरीर के अंतर्गत स्थित उस चैतन्य (चेतना) को जो हमारे सभी क्रिया कलापों का दृष्टा और साक्षी है ? क्या वह अश्पृस्य है ? कृपया बताएं ? ।।१।।

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

शँकर द्विज ढँढोर दयी यह, दूर हटो के शब्द उचारे ।
उतर दियो शिव श्वपच वेष में, कहो कौन द्विज श्वपच सारे ।।
अन्नमय कोश है सब के भीतर, चेतन एक है अहँकृत प्यारे ।
मोहि में तोहि मे न्युन विशेष न, “रामप्रकाश” चराचर वारे ।।१।।

घनाक्षरी छन्द

गँगा में स्नान करे , शँकर द्विज अहँभरे । जाति अभिमान तरे , शिष्य पथ जात सो ।।
श्वपच का भेष धर, पथ मांहि मिले हर । हट हट वाणी कर, एक दिशा बात सो ।।
श्वपच शँकर देव, हरयो जाति अभिमान । अद्वैत में कहाँ द्वैत, आतमा अघात सो ।।
“राघव प्रसाद’ तब, प्रणाम कियो है ताहि । जाति भ्रम कटाक्ष में, बतायो अजात सो ।।२।।

दोहा छन्द

आचार्य शुद्धाद्वैत के, अद्वय ब्रह्म सिद्धान्त ।
देह भ्रम के बीच में, अटके मति अशान्त ।।३।।

मूल श्लोक ~प्रश्न

किं गंगाम्बुनि बिम्बितेअम्बरमनौ चंडालवाटीपयः ।

पूरे वांतरमस्ति कांचनघटी मृत्कुम्भयोर्वाम्बरे ।
प्रत्यग्वस्तुनि निस्तारन्सहजान्न्दाव्बोधाम्बुधौ ।
विप्रो अयम्श्वव्चोअय्मित्यिमहन्कोअयम्विभेद्भ्रमः ॥२।।

भावार्थ भाष्यानुवाद - हे ब्राह्मण देवता ! कृपया मुझे बताएं कि क्या ब्राह्मण अथवा चांडाल सभी के शरीरो का साक्षी और द्दष्टा एक नहीं है ? क्या वह भिन्न है ? क्या साक्षी में नानात्व है ? क्या वह एक और अद्वितीय नहीं है ? आप (जैसे विद्वान) इस नानात्व के भ्रम में कैसे पड़ सकते हैं ? कृपया मुझे यह भी बताएं कि क्या एक सोने के बर्तन और एक मिट्टी के बर्तन में विद्यमान खाली जगह के बीच कोई अंतर है ? और क्या गंगाजल और मदिरा में प्रतिबिंबित सूर्य (कुटस्थ) में किसी प्रकार का भेद है ? सूर्य के प्रतिबिम्ब भिन्न हो सकते हैं, पर बिम्ब रूप सूर्य (चिदाभास) तो एक ही है।) २।।

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

द्विज चाण्डाल में देह बराबर, चेतन साक्षी है एक बिराजे ।
नानात्व भेद आयो कंहि पण्डित, त्रिगुण त्रिपूटी एक हि राजे ।।
स्वर्ण धातु रु भू अँश पात्र में, चिदाकाश रवि किम काजे ।
ब्रह्मविद् भूल रह्यो तन भीतर, "रामप्रकाश" दे उतर साजे ।।४।।

घनाक्षरी छन्द

स्वर्ण और ठाँव मट्टी, भरे गँगाजल हटी । मद्य मीठा जल कटु , प्रतिबिंब भेद है ? ।।
रवि प्रतिबिंब अड्र्यो, कुटस्थ कहा भिन्न पड्र्यो। बिंब चिदाभास खड्र्यो, जीव क्यों अखेद है ।।
एक रवि रश्मि नेक, कुटस्थ प्रकाश एक । ईश कला वही देख, प्रतिबिंब अभेद है ।।
बिंब कला चिदाभास, एक है अनूप खास । "राघव प्रसाद" आस, जीव एक खेद है ।।५।।

दोहा छन्द

आतम परमात्म एक ब्रह्म, व्यापक सर्व समान ।
अश्पृश्य यह कैसे भयो, रामप्रकाश मतिमान ।।६।।

॥ मनीषा पञ्चकं ॥

मूल श्लोक~वन्दनीय अर्चन

जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिषु स्फुटतरा या संविदुज्जृम्भते ।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्त तनुषु प्रोता जगत्साक्षिणी ॥
सैवाहं न च द्दश्य वस्त्विति द्दढ प्रज्ञापि यस्यास्तिचेत ।
चण्डालोस्तु स तु द्विजोस्तु गुरुरित्येषा मनीषा मम ॥३॥

भावार्थ भाष्यानुवाद - जो चेतना जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि तीनों अवस्थाओं के ज्ञान को प्रकट करती है, जो चैतन्य विष्णु, शिव आदि देवताओं में स्फुरित हो रहा है, वही चैतन्य चींटी आदि क्षुद्र जन्तुओं तक में स्फुरित है । जिस द्दढबुद्धि पुरुष कि द्दष्टि में सम्पूर्ण विश्व आत्मरूप से प्रकाशित हो रहा है - वह चाहे ब्राह्मण हो अथवा चाण्डाल हो, वह वन्दनीय है , यह मेरी द्दढ निष्ठा है । जिसकी ऐसी बुद्धि और निष्ठा है कि "मैं चैतन्य हूँ , यह द्दश्य जगत नहीं "' वह चांडाल भले ही हो, पर वह मेरा सतगुरु है॥१॥

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति आदिक, विश्वादि सब है जीव जहाँ ते ।
देह मे सभी समान हि होवत, कौन है ब्राह्मण अँग कहाँ ते ।।
अज रु चिंटी में एक समान ही, द्दष्टिगत ज्ञान अभेद तहाँ ते ।
"रामप्रकाश" कहो द्विज कौन हो, अश्पृश्य वस्तु है कौन वहाँ ते ।।७।।

घनाक्षरी छन्द

देह भ्रम मान रह्यो, कैसे हो ब्रह्मण भयो । द्विज अहँकारी भयो , सिद्धान्त भुलायके ।।
देह बुद्धि मन चित, विद्या धन रूप कुल । कौन है ब्राह्मण यामे, कहो बतलाय के ।।
नाम कुल जाति गोत, वर्ण रु आश्रम होत । षट् भ्रम भूत माहि, रह्यो अलुझाय के ।।
शास्त्र सिद्धान्त मत, कथन करत सत । "राघव प्रसाद" भूले, भूले ज्ञानी थाय के ।।८।।

दोहा छन्द

ज्ञानी हो सिद्धान्त के, शुद्धाद्वैत प्रमान ।
भेद भ्रम रहे पाल के, द्वैत बुद्धि नादान ।।९।।

मूल श्लोक ~वन्दनीय अर्चन

ब्रह्मैवाहमिदं जगच्च सकलं चिन्मात्रविस्तारितं
सर्वं चैतदविद्यया त्रिगुणयाशेषं मया कल्पितम् ।
इत्थं यस्य दृढा मतिः सुखतरे नित्ये परे निर्मले
चण्डालोस्तु स तु द्विजोस्तु गुरुरित्येषा मनीषा मम ॥४॥

भावार्थ भाष्यानुवाद - मैं ब्रह्म ही हूँ , चेतन मात्र से व्याप्त यह समस्त जगत भी ब्रह्मरूप ही है । समस्त दृष्यजाल मेरे द्वारा ही त्रिगुणमय अविद्या से कल्पित है । मैं सुखी, सत्य, निर्मल, नित्य, पर ब्रह्म रूप में हूँ , जिसकी ऐसी दृढ बुद्धि है वह चाण्डाल हो अथवा द्विजन्मा हो, वह मेरा सतगुरु है॥४॥

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

अहँ ब्रह्म रूप से छाय रह्यो सब, चेतन विश्व समूह अपारो ।
दृश्य रु श्राव्य है अविद्या कल्पित, मै सुख निर्मल नित्य हूँ सारो ।।
स्थिर बुद्धि भयी दृढ जाहि की, द्विज में चाण्डाल एक विचारो ।
"रामप्रकाश" क्यों भाग रह्यो मग, सिद्धान्त अभेद बतावन हारो ।।१०।।

घनाक्षरी छन्द

चेतन स्वरूप सब, द्वैत बुद्धि भयी जब । सिद्धान्त को खोयो तब, सिद्धान्त बतायो है ।
कौन सी ऐसी है चाल, ब्रह्म ते जो है न निहाल । अद्वैत बताय हाल, गुरू हम पायो है ।।
ऐसी युक्ति राह पाई, सत पथ हमे दाई । सतगुरू मान्यो भाई, सिद्धान्त सवायो है ।
"राघव प्रसाद" यह, अद्वय सिद्धान्त कह । सँशय निवृति लह, ज्ञान को दृढायो है ।।११।।

दोहा छन्द

आतम अमर अजात है, जाति पाँति नहि भेद ।
भेद अभेद मे है नही, यह ब्रह्म ज्ञान में खेद ।।१२।।

मूल श्लोक ~वन्दनीय अर्चन

शश्वन्नश्वरमेव विश्वमखिलं निश्चित्य वाचा गुरोः
नित्यं ब्रह्म निरन्तरं विमृशता निर्व्याज शान्तात्मना ।
भूतं भावि च दुष्कृतं प्रदहता संविन्मये पावके
प्रारब्धाय समर्पितं स्ववपुरित्येषा मनीषा मम ॥५॥

भावार्थ भाष्यानुवाद - जिसने साधन सहित अपने सतगुरु के वचनों से यह निश्चित कर लिया है कि परिवर्तनशील यह जगत अनित्य है । जो अपने मन को वश में करके शांत आत्म निष्ठ है । जो निरन्तर ब्रह्म चिन्तन में स्थित है । जिसने परमात्म रूपी अग्नि में अपनी सभी भूत और भविष्य की वासनाओं का दहन कर लिया है और जिसने अपने प्रारब्ध का क्षय करके देह को प्रकृति में समर्पित कर दिया है । वह चाण्डाल हो अथवा द्विजन्मा हो, वह मेरा सतगुरु है ॥५॥

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

सतगुरू सानिध्य साधन साध के, श्रवण कियो दृढ ज्ञान अपारो ।
शील अनित्य जग चँचल, ता तज मन को कियो उदारो ।।
जड चेतन अरु चर अचर में, ऊँच रु नीच में है इकसारो ।
भेद ग्रन्थी को छेद करी जिन, "रामप्रकाश" सो गुरू हमारो ।।१३।।

घनाक्षरी छन्द

ऐषणा त्रिपदा हर, वासना दग्ध कर । प्रारब्ध वश देह धर, तन प्रकृति परायो है ।।
ज्ञान अग्नि जार कर, अष्टपुरी टार टर । अभय भयो है सर, अभेद अजायो है ।।

ऐसो निश्चय कियो उर, द्विज हो या श्वपचर। सब में व्याप्त हर, गुरू यों बतायो है ।।
राघव प्रसाद यह, वर्णाश्रम भ्रम हर। सत चित सब घट, एक हि समायो है ।।१४।।

दोहा छन्द

ऊँच नीच अज्ञान में, मुढता मन प्रवेश।
तन बुद्धि ब्रह्मात्मा, सब में एक महेश ।।१५।।

मूल श्लोक ~वन्दनीय अर्चन

या तिर्यङ्नरदेवताभिरहमित्यन्तः स्फुटा गृह्यते
यद्भासा हृदयाक्षदेहविषया भान्ति स्वतो चेतनाः ।
ताम् भास्यैः पिहितार्कमण्डलनिभां स्फूर्तिं सदा भावय
न्योगी निर्वृतमानसो हि गुरुरित्येषा मनीषा मम ॥६॥

भावार्थ भाष्यानुवाद - सर्प आदि तिर्यक, मनुष्य ,गान्धर्व , देवादि द्वारा "अहम्" मैं ऐसा गृहीत होता है । उसी के प्रकाश से स्वत: जड़, हृदय, देह और विषय भाषित होते हैं । मेघ से आवृत सूर्य मंडल के समान विषयों से आच्छादित उस ज्योतिरूप आत्मा की सदा भावना करने वाला आनंद-निमग्न योगी मेरा सतगुरु है । ऐसी मेरी मनीषा (बुद्धि की धारणा) है ।।६॥

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

देव दनुज रु तिर्यंक गान्धर्व, अहम ग्रहीत अज्ञान भ्रमावे ।
वाही प्रभाव ते जड रु चेतन, स्वतः प्रकाश ते विषय दिखावे ।।
मेघ आवृत रवि मण्डल के जिमि, आच्छादित आतम रूप समावे ।
या विधि जानत "रामप्रकाश' को, ब्रह्मविद सो गुरू कहावे ।।१६।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सो, स्वगत भेद रह्यो अलुझाई ।
जाति द्विजातिय विजातीय मानत, सिद्धान्त अभेद की बात चलाई ।।
सँज्ञा पढावत पण्डित मूरख, ज्ञान बिना भव में भटकाई ।
भक्ति भक्त रु ज्ञान बखानत "रामप्रकाश" निर्लज्ज भया भाई ।।१७।।

घनाक्षरी छन्द

व्यापक ब्रह्म को जान, दीजे अज्ञान भान। रवि रजनी आन, सँग न रहावते ।।
द्वैत रु अद्वैत सँग, कैसे रहे ? करो भँग। आतमा अभँग जान, भ्रम को भगावते ।।
पाँच कोश लागे आप, जाने ज्ञान-हटे ताप। कीजिये अद्वैत जाप, ज्ञानी जो कहावते ।।
"राघवप्रसाद" गाय, आप ही को आप पाय। अद्वैत सिद्धान्त गाय, ज्ञान को सराहिये ।।१८।।

दोहा छन्द

मूरख राखे भेद मति, मानव अशपृश्यता आप ।
बात करे अद्वैत की, यही सयानो पाप ।।१९।।

मूल श्लोक ~वन्दनीय अर्चन

यत्सौख्याम्बुधि लेशलेशत इमे शक्रादयो निर्वृता ।
यच्चित्ते नितरां प्रशान्तकलने लब्ध्वा मुनिर्निर्वृतः।।
यस्मिन्नित्य सुखाम्बुधौ गलितधीर्ब्रह्मैव न ब्रह्मविद् ।
यः कश्चित्स सुरेन्द्रवन्दितपदो नूनं मनीषा मम ।।७।।

भावार्थ भाष्यानुवाद - प्रशांत काल में एक योगी का अंत:करण जिस परमानंद कि अनुभूति करता है , जिसकी एक बूँद मात्र इन्द्र आदि को तृप्त और संतुष्ट कर देती है । जिसने अपनी बुद्धि को ऐसा परमानंद सागर में विलीन कर लिया है , वह मात्र ब्रह्मविद् (ब्रह्मवेत्ता) ही नहीं स्वयं ब्रह्म है । वह महात्मा अति दुर्लभ है , जिसके चरणों की वन्दना देवराज (इन्द्र) भी करते हैं , वह मेरा सतगुरु है। ऐसी मेरी मनीषा है॥७॥

पद्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

तत्वदर्शी ब्रह्मविद् है आनन्द, परमानन्द सागर मांहि रले है ।

इन्द्रादिक तुच्छता अँकित भोग है, ब्रह्मवेत्ता स्वयँ ब्रह्म भले है ।।
ऐसी निष्ठा हो निष्प्रह निश्चित, सतगुरू उतमराम पले है ।
"रामप्रकाश" वन्दे तंहि चरणाम्बुज, भेद को त्याग अभेद गले है ।।२०।।
ब्रहज्ञानी अहै ब्रह्म समान ही, भेद दृष्टि सब दूर भगावे ।
कहत अद्वैत रु भक्ति कथा कह, रहत द्वैत में और भुलावे ।।
शास्त्र मूरख राज बखानत, कहै ज्यों रहे वह पण्डित भावे ।
"रामप्रकाश" हरि ब्रह्मविद् के, जाति अश्पृश्य नही कछु गावे ।।२१।।

घनाक्षरी छन्द

प्रशान्त काल योगी, आतम आनन्द भोगी । नही वह भव रोगी, रञ्च न ही भेद है ।।
त्रिकाल अनूप आप, नही भोगे तीन ताप । लागे नही पूण्य पाप, आप हि अभेद है ।।
सर्वत्र ब्रह्म को देखे, अश्पृश्य को नही पेखे । आतम स्वरूप लेखे, रहत अखेद है ।।
"राघव प्रसाद" वही, सतगुरू मान सही । कमी कछु रही नही, द्वन्द्ध नही छेद है ।।२२।।

दोहा छन्द

श्वपच वेष शँकर दियो, शँकर को उपदेश ।
भ्रम मिटायो देह को, व्यापक ब्रह्म महेश ।।२३।।

इन्दव छन्द

बात अद्वैत की भाषत है गुण, मन में नाना भेद भरे है ।
जाति पाँति व्यवहार छुछुँदर, अश्पृश्यता को भूत धरे है ।।
व्याकरण सँज्ञा पढावत और हि, जाति वाचक भेद करे है ।
"रामप्रकाश" अविद्या माँहि राजत, विद्या में हि अविद्या वरे है ।।२४।।
श्वपच होय के ज्ञान दियो शिव, भेद भ्रम को दूर भगायो ।
आचार्य शँकर मान गुरुवर, कियो प्रणाम शिव दर्श दिखायो ।।
भेद अभेद की युक्ति बताय के, विद्वानन के मन भ्रम विलायो ।
"रामप्रकाश" अनुवाद कियो पद, मानवता मति प्रेम लगायो ।।२५।।

|| इति श्रीमत शंकर भगवतः कृतौ मनीषा पञ्चकं सम्पूर्णं |

ओ३म्

श्री हरी गुरू सचिन्दानन्दाय नम :

अथ साधना पंचकम्- यतिवर श्री मत आद्य शंकरा चार्य जी कृत

मूल श्लोक

वेदो नित्यम्धीयताम तदुदितं कर्म स्वनुष्ठियतम ।
तेनेशस्य विधीयतामपचिती: काम्ये मतिस्त्यज्यताम ।।
पापौघ: परिभूयताम भवसुखे दोषो अनुसंधीयता ।
मात्मेछा व्यव्सीयताम निजगृहातूर्णम विनिर्गाम्यताम ।।१।

भाष्यानुवाद - हे मानव ! हम नित्य वेदों का पाठ करें, वेद आधारित रीति से कर्मकाण्ड और पँच देवताओं का पूजन करें, हमारे कर्म अनासक्त भाव से हो और हमें दुर्व्यशनों के पाप समूहों से दूर ले जाने वाले हो, हम अपने जीवन में रही कलुषित-विषमताओं को जानते हुए निवारण करें और आत्म-ज्ञान प्राप्ति की साधना के साथ मुक्ति की ओर बढें।

पद्यात्मक काव्य ~ सवैया छन्द

सन्त वचनामृत पाठ श्रुति कर, कर्म धर्म निष्काम करीजे ।
पँच देव पूजन यज्ञ करो पँच, होय अनासक्त पाप हरीजे ।।
मन की विषमता निवृत हो सब, आतम ज्ञान हृदयँगम लीजे ।
"रामप्रकाश" साधन सँग सेवन, मुक्ति की कामना हरदम कीजे ।।१।।

दोहा छन्द

श्वास भरोसो है नही, समय अनमोली जाय ।
हरदम दत्तचित्त होय के, कीजे मोक्ष उपाय ।।२।।

मूल श्लोक

संग: सत्सु विधीयताम भगवतो भक्तिद्दढा धीयताम ।
शान्त्यादि: परिचीय्ताम द्दढतरं कर्माशु सन्त्यज्यताम ।।
सिद्विद्वानुपसर्प्यताम प्रतिदिनं तत्पादुका सेव्यताम ।
ब्रह्मैकाक्षरमथर्यताम श्रुतिशिरोवाक्यम स्माकर्न्याताम ।।२।।

भाष्यानुवाद - हे जिज्ञासु ! हम अच्छे संग में रहे, द्दढ भक्ति प्राप्त करें तथा शान्ति जैसी मन की अवस्था को जान सकें, हम कठिन परिश्रम -साधन करें, सद्गुरु के समीप जाकर सानिध्य वास - आत्म समर्पण के साथ उनकी चरणाम्बुज सेवा में चरण पादुका का नित्य पूजन करें, हम एकाक्षर ब्रह्म का ध्यान करें और वेदों की ऋचाएं (अद्वय साधन -लय चिन्तन) का श्रवण करें...

पद्यात्मक काव्य ~ सवैया छन्द

सतसँग मे भक्ति कर साधन, मन स्थिति पुरुषार्थ कीजे ।
सतगुरू सान्निध्य समर्पित आतम, चरण पादुका पूजन लीजे ।।
ध्यान एकाक्षर धार एकान्त में, स्वाध्याय में शुभ समय को दीजे ।
"रामप्रकाश" यह सन्त वचनामृत, श्रवण मनन कर आतम रहिजे ।।३।।

दोहा छन्द

साधन पँचक धारणा, साधक चित में धार ।
लघु आशिश मँगल यही, करे जीव निस्तार ।।४।।

मूल श्लोक

वाक्यार्थश्च विचार्यताम श्रुतिशिर: पक्ष: स्माश्रीयताम ।
दुस्तर्कात्सुविरम्यताम श्रुतिमतर्कात्सो अनुसंधीयताम ।।
ब्रह्मैवास्मि विभाव्यताम हरहर्गर्व: परित्ज्यताम ।

देहे अहम्मतिरुज्झ्यताम बेधजनैर्वाद: परित्ज्यताम ।।३।।

भाष्यानुवाद - हे बन्धु ! हम महावाक्यों और श्रुतियो के भावार्थ को समझ सकें, हम कुतर्को के मतभेद में ना उलझें, "में ब्रह्म हूँ" ऐसा विचार मय चिन्तन करें, हम अभिमान से प्रतिदिन दूर रहे, "में देह हूँ" ऐसे विचार का त्याग कर सकें और हम विद्वान बुद्धिजनों से बहस - वाद न करें... ।

पद्यात्मक काव्य ~ सवैया छन्द

महावाक्य को श्रवण मनन कर, श्रुति स्मृति सार को धारो ।
कुतर्क वाद विवाद मतान्तर, जल्पा वितण्डा दूर निवारो ।।
लय चिन्तन का शब्द है स्मरण, व्यशन अहँ से होय किनारो ।
"रामप्रकाश" हो देह उपराम ही, हरदम ब्रह्मानन्द चितारो ।।५।।

दोहा छन्द

तन मन धन को गर्व तज, सर्वस्व समर्पित होय ।
हरदम साधन चित धरो, परम पुरुषार्थ जोय ।।६।।

मूल श्लोक

क्षुद्व्याधि: च चिकित्स्ताम प्रतिदिनं भिक्षोषधम भुज्यताम ।
स्वाद्वन्नम न तु याच्यताम विधिवशातप्राप्तेन संतुश्यताम ।
शीतोष्नादि विषह्यताम न तु वृथा वाक्यं समुच्चार्यता ।
मौदासीन्यमभिपस्यताम जनकृपा नैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम ।।४।।

भाष्यानुवाद - भिक्षा का अन्न ग्रहण करें (संन्यास की नियमानुसार), स्वादिष्ट अन्न की कामना न करें और जो कुछ भी प्रारब्ध से हमें प्राप्त हो उसी में संतुष्टि रखें, हम शीत और उष्ण को सहन करते हुए तितीक्षा मय उपरामता से भूख पर नियंत्रण पा सकें । हम वृथा वाक्य का प्रयोग न करें , सहन शीलता हमारी साधना हो और हम दयनीय बनकर न निकलें... ।

पद्यात्मक काव्य ~ सवैया छन्द

विवेक वैराग्य के साधन सम्पुट, शम दमादि सतसँग सारो ।
तितीक्षा औ उपराम के लक्षण, द्वन्द्वात्मक तज वृति सम्भारो ।।
भिक्षावृत्ति कर प्रारब्ध के शिर, आनन्द चित वृति परम उदारो ।
"रामप्रकाश" गावे कवि कोविद, मस्त फकीर की मति को धारो ।।७।।

दोहा छन्द

सन्यस्त नियम तज स्वाद को, प्रारब्ध मधुकरी लाय ।
गरज गुलामी दूर तज, होय निशँक हरषाय ।।८।।

मूल श्लोक

एकान्ते सुखमास्यताम परतरे चेत: समाधीयताम ।
पूर्णात्मा सुस्मीक्ष्यताम जगदिदम तद्बाधितम दृश्यताम ।।
प्राक कर्म प्रविलाप्यताम चितिब्लान्नाप्युत्तरै: श्लिष्यताम ।
प्रारब्धम त्विह भुज्यतामथ परब्रह्मात्मना स्थियाताम ।।५।।

भाष्यानुवाद - हमे परम पुरुषार्थ हेतु एकान्त में सुख पूर्वक बैठ कर आत्मा के परम सत्य पर मन को केन्द्रित कर सकें, हम समस्त जगत को सच्चिदानन्दस्वरूप से परिपूर्ण देख सकें, हम पूर्व कृत स्वाभाविक बुरे कर्मो के प्रभाव को नष्ट कर सकें और नवीन कर्मो की वासना में नहि बंधे, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचें की सब कुछ प्रारब्धानुसार है और हम परम सत्य के साथ रहें... ।

पद्यात्मक काव्य ~ सवैया छन्द

मोक्ष हितार्थ बैठ एकान्त में, चित एकाग्र ध्यान लगाओ ।
मन केन्द्रित कर सत चित आनन्द, निज स्वरूप को अपनाओ ।।
पूर्व कृत कर्म समूह को, ज्ञान अग्नि में जाय जलाओ ।
प्रारब्धवश हम सत्य साथ रह, "रामप्रकाश" का जीवन बनाओ ।।९।।

दोहा छन्द

दृढता साधन विशेष हो, ध्येय निश्चित होय।
भौतिक कामना दूर कर, चिर शान्ति को जोय ।।१०।।

मूल श्लोक

यः श्लोकपंचक्मिदम पठते मनुष्यः संचितयत्यनुदिनम स्थिरतामुपेत्य।
तस्याशु संसृतिद्वानल तीव्र घोर तापः प्रशांतिमुप्याति चिति प्रसादात ।।६।।

भाष्यानुवाद - जो मनुष्य इस पंचक मय के श्लोको अथवा भाष्यानुवाद का पाठ नित्य करते हुए मनन-चिन्तन के साथ जीवन में स्थिरता को अर्जित (संचित) करेगा ... वह इस तपस्या से प्राप्त प्रशांति के फलस्वरुप उन के जीवन में समस्त घोर दुःख शोकादि के तीनोँ ताप प्रभाव हीन अर्थात् निवृत हो जायेंगे ... ।

पद्यात्मक काव्य ~ सवैया छन्द

प्रलय काल के गरजे मेघ भल, द्वादश भास्कर साथ तपावे।
मेरु गिरि पाताल धसे सब, रवि पश्चिम दिशि भले उगावे ।।
अग्नि शीतल होय भले तल, ज्ञानी को निश्चय नाहि डिगावे।
“रामप्रकाश” सतगुरू शरणागत, साधन सहित सिद्धान्त दृढावे ।।११।।
साधना पँचक पाठ करे नित, श्रवण मनन मे मन लगावे।
सतगुरू सान्निध्य वास करे वह, अक्षय फल पदार्थ ध्यावे ।।
ज्ञान स्थिरता अर्जित होवत, तपस्या पूण्य बढे सुख पावे।
“रामप्रकाश” कटे सब बन्धन, ताप तीनों दुःख दोष नसावे ।।१२।।

दोहा छन्द

सन्यस्थ हो या गृहस्थ भी, पढे सुने चित लाय।
ऋषिगण ऋण से उऋण हो, तीनों ताप नशाय ।।१३।।

॥ इति श्री जगद्गुरु आदि शंकराचार्य कृत साधना पंचकं समाप्तः ॥

ओ3म्

कौपीन पंचकम् - यतिवर श्री मत आद्य शंकरा चार्य जी कृत

स्थूल शरीर में पाँचों वस्त्र में कौपीन को पहनने का महत्व

मूल श्लोक

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नंतेन च तुष्टिमन् ।
विशोकमन्तीकरणे चरन् तो कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः करण ।।१।।

भाष्यानुवाद - कभी वेदांत के खांचे में घूमते हुए , कभी अपने भिखारी के निवाला से प्रसन्न होकर, आगे की ओर भटकते हुए, अपने दिल को दुःख से मुक्त करते हुए, वास्तव में लुंगी-कपड़े (कौपीन) का पहनने वाला है।।१।।

भाष्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

कभी दिगम्बर कभी स्वेताम्बर, कभी बाघम्बर टाट सुहावे ।
कभी भिक्षाटन कभी पाटम्बर, कभी भक्त जो नैत जीमावे ।।
जहाँ रहे वह जैसे रहे कहिं, तत्व चिन्तन उर मुक्त रहावे ।
"रामप्रकाश" कौपीन कसे दृढ, नियम विरक्ति के आप निभावे ।।१।।

मूल श्लोक

मूलं तरोः केवलमाश्रयन्तः पाणिद्वय भोक्तुमन्त्रयन्तः ।
कान्वेटिव्रीमिप कुत्सयन् तो कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः कु ।।२।।

भाष्यानुवाद - आश्रय के लिए एक पेड़ के पैर पर बैठना , अपने हाथों के मांसल हिस्से से भोजन करना, एक गढ़े हुए वस्त्र की तरह धन खर्च करना, वास्तव में साधारण -कपड़ा (लँगोटी) पहनने वाला है।।२।।

भाष्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

तरु तरे कभी गिरि शिला तट, नदी तीर्थ वर ताल विराजे ।
आत्म चिन्तन वेद अध्ययन कर, आपनो त्याग वैराग सुकाजे ।।
भिक्षा भोजन करे शुभ पात्र कर, मित व्ययी निर्भय सुभ्राजे ।
"रामप्रकाश" कौपीन कसे दृढ, नियम विरक्ति के आप सु साजे ।।२।।

मूल श्लोक

स्वानन्दभावे परितुष्टिमन् तो सुशान्तसर्वेन्द्रियंत्रणम् ।
अहर्निशंशुसुख रमन् तो कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः स ।।३।।

भाष्यानुवाद - उनके भीतर परमानंद से पूरी तरह से संतुष्ट,अपनी इंद्रियों के विषयों को पूरी तरह से रोकने, ब्रह्म के आनंद में दिन और रात प्रसन्नचित्त,साधारण-कपड़े (कौपीन) का पहनने वाला है।।३।।

भाष्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

पाय प्रयोजन पाँच को उतम, नित्य परमानन्द हृदय रहावे ।
भौतिक विषय उपराम रहे उर, उज्वल वसन प्रसन्न कहावे ।।
हर्ष रु शोक को द्वन्द नही कछु, ईर्षा रु द्वैष मना नही भावे ।
"रामप्रकाश" कौपीन कसे दृढ, नियम विरक्ति के आप निभावे ।।३।।

मूल श्लोक

देहादिभावन चरयन् तो स्वात्मानमात्मन्यवलोकयन् ।
नंतं न मध्यं न बहिः स्मरन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ।। ४।।

भाष्यानुवाद - मन और शरीर के बदलावों के साक्षी, अँतत्वोगतवा वस्तुतः आत्म भीतर उसे निहारना, बाहरी, मध्य वास्तव में लंगोटी के कपड़े का पहनने वाला है।।४।

भाष्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

तन रु मन के साक्षी को जानत, वेद वेदान्त सिद्धान्त दृढावे ।
जीव ईश माया ब्रह्म भेद को, एक अधिष्ठान हृदय ठहरावे ।।
और उपाधि को त्याग परे सब, भौतिकवाद को दूर भगावे ।
'रामप्रकाश" कौपीन कसे दृढ, नियम विरक्ति के आप निभावे ।।४।।

मूल श्लोक

ब्रह्माक्षरं पावनुमुच्चरन्तो ब्रह्महम्स्मीति विभावयन् ।
भिक्षाशिनो दिक्षु बलरामन् तो कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः क्ष ।। ५।।

भाष्यानुवाद - कर्म उपासना के सिद्धान्त का वचन केवल `मैं ब्रह्म हूं 'पर ध्यान देना चाहिए, भिक्षा पर रहना और स्वतंत्र रूप से भटकता वास्तव में लुंगी-कपड़े (लँगोटी - कौपीन) का पहनने वाला है।।५।

भाष्यानुवाद ~ इन्दव छन्द

बाह्याडम्बर के कर्म उपासन, त्याग के अन्तर के अपनावे ।
साधन सतगुरू सात्विकता उर, साँख्य रु योग वेदान्त पढावे ।।
ज्ञान सम्राट के स्वतन्त्र ब्रह्म पद, प्रारब्ध भोजन भोग लगावे ।
"रामप्रकाश" कौपीन कसे दृढ, नियम विरक्ति के आप निभावे ।।५।।
लोक लज्जा हित रहे मर्यादित, अपने हाल मे मस्त रहावे ।
लक्ष्मी आय जावे भल आज ही, आयु युगान्तर आज हि जावे ।।
आशा रु वासना तृष्णा मूल से, ज्ञान अग्नि अठ पुरी जलावे ।
"रामप्रकाश" कौपीन कसे दृढ, नियम विरक्ति के आप निभावे ।।६।।

।। इति श्रीमद् यति शँकराचार्य कृत कौपीन पञ्चकं सम्पूर्णम् ।।

श्री कनकधारा स्तोत्रम्- यतिवर श्री मत आद्य शंकरा चार्य जी कृत

एक बार आचार्य शङ्कराचार्य जी भी भिक्षाटन के लिए गये और एक निर्धन ब्राह्मण-दम्पति के घर जा पहुँचे। दरवाजे पर एक तेजस्वी वटुक (लड़का,ब्रह्मचारी) को देखकर ब्राह्मणी ने आदरपूर्वक कहा- "वे लोग भाग्यवान हैं, जो आप जैसों की सेवा करने का अवसर प्राप्त करते हैं । पर हमें तो भाग्य ने ठग लिया है। निर्धन होने के कारण हम किसी छात्र को भिक्षा भी नहीं दे सकते। हमारा तो जन्म ही व्यर्थ चला गया।" इस प्रकार दीनतापूर्वक वचन कहती हुई उस ब्राह्मणी ने वटुक शङ्कर के हाथ में एक आँवला दे दिया। ब्राह्मणी की करुणा भरी वाणी ने आचार्य शङ्कर के हृदय को दया से भर दिया। आचार्य शङ्कर ने उस ब्राह्मण-दम्पति की दरिद्रता दूर करने के लिए, भगवान् नारायण की पत्नी लक्ष्मी देवी की कनकधारा स्तोत्र से स्तुति की ।

।। श्री कनकधारा स्तोत्रम् ।।

श्लोक

अंगहरे पुलकभूषण माश्रयन्ती भृगांगनैव मुकुलाभरणं तमालम ।
अंगीकृताखिल विभूतिरपांगलीला मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः ।।१।।

भाष्यानुवाद~ जैसे भ्रमरी अध खिले कुसुमों से अलँकृत तमाल-तरु का आश्रय लेती है,उसी प्रकार जो प्रकाश श्री हरि के रोमांच से सुशोभित श्री अँगों पर निरन्तर पड़ता रहता है तथा जिस में सम्पूर्ण ऐश्वर्य का निवास है, सम्पूर्ण मँगलों की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी का वह कटाक्ष मेरे लिये मँगलदायी हो।।१।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

तमाल तरु कँज भ्रमर लुब्ध है, तैसे हरि अँग ज्योति विराजे ।
सम्पन्न ऐश्वर्य मँगल दायक, मँगल अधिष्ठात्री वाम ही साजे ।।
कृपा कटाक्ष करें हम ऊपर, सकल निधि युत आय समाजे ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, भवन सुदीप्त होय सुराजे ।।१।।

श्लोक ~

मुग्ध्या मुहुर्विदधती वदनै मुरारैः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकर विमहोत्पले या सा मै श्रियं दिशतु सागर सम्भवायाः ।।२।।

भाष्यानुवाद~ जैसे भ्रमरी महान कमल दल पर मँडराती रहती है, उसी प्रकार जो श्रीहरि के मुखारविंद की ओर बराबर प्रेमपूर्वक दृष्टि किये है और लज्जा के कारण लौट आती है। समुद्र कन्या लक्ष्मी की वह मनोहर मुग्ध दृष्टिमाला मुझे धन संपत्ति प्रदान करें ।।२।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

सुमन दल लुम्बित भ्रमर आवत, मण्डरावत कँज ऊपर वारी ।
तैसे हि हरि मुख ओर निहारत, सिन्धु कन्या सलज्ज निहारी ।।
मनोहर मुग्ध माल की रञ्चक, दृष्टि भरो हरि सँग विचारी ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, भवन सूदीप्त होय हमारी ।।२।।

श्लोक ~

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्द हेतु रधिकं मधुविद्विषोपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धमिन्दोवरोदर सहोदरमिन्दिरायः।।३।।

भाष्यानुवाद~ जो संपूर्ण देवताओं के अधिपति इंद्र के पद का वैभव-विलास देने में समर्थ है, मधुहन्ता श्रीहरि को भी अधिकाधिक आनंद प्रदान करने वाली है , तथा जो नीलकमल के भीतरी भाग के समान मनोहर जान पड़ती है, उन लक्ष्मीजी के अधखुले नेत्रों की दृष्टि क्षण भर के लिए मुझ पर थोड़ी सी अवश्य पड़े।।३।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

देव अधिपति इन्द्रपद वैभव, समर्थ ऐश्वर्य देवनहारी।
मधुहन्ता हरि को सुख देवत, नीलकमल अन्तर गन्ध वारी।।
चक्षु अर्ध दृष्टि क्षण आनन्द, कृपा कौर कर मो ओर निहारी।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भणडारी।।३।।

~ श्लोक ~

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दम निमेषमनंगतन्त्रम्।
आकेकर स्थित कनी निकपक्ष्म नेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजंगरायांगनाया:।।४।।

भाष्यानुवाद~ शेषशायी भगवान विष्णु की धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीजी के नेत्र हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हों, जिनकी पुतली तथा बरौनियाँ अनंग के वशीभूत हो अधखुले, किंतु साथ ही निर्निमेष (अपलक) नयनों से देखने वाले आनंदकंद श्री मुकुन्द को अपने निकट पाकर कुछ तिरछी हो जाती हैं।।४।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

वित् देवी विष्णु प्रिया अर्द्धांगिन, ताहि चक्षु सुख देवन हारे।
जहाँ बसे तँहि आनन्द धारे, अनँग वशि चक्षु अर्द्धाकिन्न वारे।।
अपलक दृष्टि से आनन्दकन्द के, निकट में जायके अँग निहारे।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भण्डारे।।४।।

श्लोक ~

बाह्यन्तरे मधुजित: श्रितकौस्तुभै या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोपि कटाक्षमाला कल्याण भावहतु मे कमलालयाया:।।५।।

*भाष्यानुवाद~*जो भगवान मधुसूदन के कौस्तुभमणि-मंडित वक्षस्थल में इंद्रनीलमयी हारावली-सी सुशोभित होती है तथा उनके भी मन में प्रेम का संचार करने वाली है, वह कमल-कुंजवासिनी कमला की कटाक्ष माला मेरा कल्याण करे।।५।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

मधुसूदन हरि के कण्ठ राजत, कौस्तुभमणि निधी आनन्दकारी।
वक्षस्थल में नीलमणि सी वह, सोभा धाम हारावली भारी।।
उनके मन को प्रेम सँचार सें, कुँजवासिनी कमला कँज धारी।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भण्डारी।।५।।

श्लोक ~

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव्।
मातु: समस्त जगतां महनीय मूर्तिभद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनाया:।।६।।

भाष्यानुवाद~ जैसे मेघों की घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार जो कैटभशत्रु श्रीविष्णु के काली मेघमाला के श्याम सुंदर वक्षस्थल पर प्रकाशित होती है, जिन्होंने अपने आविर्भाव से भृगुवंश को आनंदित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी है, उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीय मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करे।।६।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

घटा बिच राजत विद्‌युत छटा सम, कैटभ अरि हरि कण्ठ सुधारी।
श्यामसुन्दर वक्षस्थल यूँही, ज्योति स्वरूप प्रकाश बिहारी।।
भृगुवंश को आनन्द कारक, आविर्भाव भये हितकारी।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि ऐश्वर्य धारी।।६।।

श्लोक ~

प्राप्तं पदं प्रथमत: किल यत्प्रभावान्मांगल्य भाजि: मधुमायनि मन्मथेन।
मध्यापतेत दिह मन्थर मीक्षणार्द्ध मन्दालसं च मकरालयकन्यकाया:।।७।।

भाष्यानुवाद ~ समुद्र कन्या कमला की वह मंद, अलस, मंथर और अर्धोन्मीलित दृष्टि, जिसके प्रभाव से कामदेव ने मंगलमय भगवान मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था, वह दृष्टि मुझ पर पड़े।।७।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

अर्धोन्मीलित दृष्टि मँथर मन्द जु, जलधि सुता कमला कहलावे।
ताहि प्रभाव मदनार्कित श्री, हरि मधुसूदन उर बास बसावे।।
ऐसी दया दृष्टि पड़े घर, ऋद्धि रु सिद्धि स्थिरता लावे।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरती आवे।।७।।

श्लोक ~

दद्याद दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम स्मिभकिंचन विहंग शिशौ विषण्ण।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाह:।।८।।

भाष्यानुवाद~ भगवान नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्म (धनागम विरोधी अशुभ प्रारब्ध) रूपी धाम को चिरकाल के लिए दूर हटाकर विषाद रूपी धर्मजन्य ताप से पीड़ित मुझ दीन रूपी चातक पर धनरूपी जलधारा की वृष्टि करे।।८।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

हरि प्रेयसी नारायण के घर, अनुकूल दृष्टि सदा बरसाओ।
धनागम विरुद्ध रु अशुभ प्रारब्ध, चिरकाल कर दूर हटाओ।।
धर्म जन्य ताप से पीड़ित चातक, धन देकर मन प्यास बुझाओ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भर भराओ।।८।।

श्लोक ~

इष्टा विशिष्टमतयोपि यथा ययार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभंते।
दृष्टि: प्रहृष्टकमलोदर दीप्ति रिष्टां पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टराया:।।९।।

भाष्यानुवाद~ विशिष्ट बुद्धि वाले मनुष्य जिनके प्रीति पात्र होकर जिस दया दृष्टि के प्रभाव से स्वर्ग पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, पद्मासना पद्मा की वह विकसित कमल-गर्भ के समान कांतिमयी दृष्टि मुझे मनोवांछित पुष्टि प्रदान करे।।९।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

विशिष्ट बुद्धि जन ध्यावत है नित, प्रीति पात्र तिन को ही बनाती।
दया दृष्टि प्रभाव के कारण, सहज नाकपति ऐश्वर्य बहाती।।
पद्मा पद्मासन कान्तिमय दृष्टि, मनवाञ्छित पुष्टि दिलवाती।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि सब तम दिलवाती।।९।।

श्लोक ~

गीर्देवतैति गरुड़ध्वज भामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखर वल्लभेति।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रि भुवनैक गुरोस्तरूण्यै।।१०।।

भाष्यानुवाद~ जो सृष्टि लीला के समय वाग्देवता (ब्रह्मशक्ति) के रूप में विराजमान होती है तथा प्रलय लीला के काल में शाकम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा चन्द्रशेखर वल्लभा पार्वती (रुद्रशक्ति) के रूप में अवस्थित होती है, त्रिभुवन के एकमात्र पिता भगवान नारायण की उन नित्य यौवना प्रेयसी श्रीलक्ष्मीजी को नमस्कार है।।१०।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

सृष्टि लीला में ब्रह्म शक्ति होय, प्रलय में गौरि शाकम्भरी होवे।
हरि घर में हो लक्ष्मी तुम ही, शिव के घर शिवा होय जोवे।।
विष्णु प्रेयसी सिद्धि स्वरूप हो, कोटि प्रणाम हमारी सोवे।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि घर महीं समोवे।।१०।।

श्लोक ~

श्रुत्यै नमोस्तु शुभकर्मफल प्रसूत्यै रत्यै नमोस्तु रमणीय गुणार्णवायै ।
शक्तयै नमोस्तु शतपात्र निकेतानायै पुष्टयै नमोस्तु पुरूषोत्तम वल्लभायै ।।११।।

भाष्यानुवाद~ हे मात: ! शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम है। रमणीय गुणों की सिंधु रूपा रति के रूप में तथा कमल वन में निवास करने वाली शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है तथा पुष्टि रूपा पुरुषोत्तम प्रिया को नमस्कार है। ।११।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

श्रुति स्वरूप नित शुभ फल देवत, रमणीय गुणनिधि नमन निहारे ।
सुन्दर स्वरूप है कोटि रति सम, वारम्वार प्रणाम हमारे ।।
पद्मा प्रिया पुरुषोत्तम की तुम, रिद्धि सिद्धि घर देहु विहारे ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भण्डारे ।।११।।

श्लोक ~

नमोस्तु नालीक निभाननायै नमोस्तु दुग्धौदधि जन्म भूत्यै ।
नमोस्तु सोमामृत सोदरायै नमोस्तु नारायण वल्लभायै ।।१२।।

भाष्यानुवाद~ कमल वदना कमला को अर्थात् क्षीर सिन्धु सभ्यता श्रीदेवी को नमस्कार है। चंद्रमा और सुधा की सहोदरा जो भगवान नारायण की वल्लभा है उन्हे नमस्कार है ।।१२।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

कमल वदना कमलासन वन्दन, क्षीरसिन्धु सभ्य देवी दुलारी ।
सुधा शशि धन्वन्तरि सहोदर, अनुजा पद है वन्दन सारी ।।
कोमलाङ्गी विष्णु वल्लभा हो, अचलेश्वर पति विश्व विहारी ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भण्डारी ।।१२।।

श्लोक ~

सम्पतकराणि सकलेन्द्रिय नन्दानि साम्राज्यदान विभवानि सरोरूहाक्षि।
त्व द्वंदनानि दुरिता हरणाद्यतानि मामेव मातर निशं कलयन्तु नान्यम्।।१३।।

*भाष्यानुवाद~*कमल सदृश नेत्रों वाली माननीय माँ! आपके चरणों में किए गए प्रणाम संपत्ति प्रदान करने वाले, संपूर्ण इंद्रियों को आनंद देने वाले, साम्राज्य देने में समर्थ और सारे पापों को हर लेने के लिए सर्वथा उद्यत हैं, वे सदा मुझे ही अवलम्बन दें। (मुझे ही आपकी चरण वंदना का शुभ अवसर सदा प्राप्त होता रहे)।।१३।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

कमलाक्षी मात प्रणाम किये पर, ऋद्धि सिद्धि सब देवन वारी ।
तन मन इन्द्रिय को आनन्द कारक, पाप रु ताप विदारण हारी ।।
अवलम्बन दे मोहि मात सदा वर, अवसर शुभ बना रह सारी ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भण्डारी ।।१३।।

श्लोक ~

यत्कटाक्षसमुपासना विधि: सेवकस्य कलार्थ सम्पद:।
संतनोति वचनांगमानसंसत्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ।।१४।।

भाष्यानुवाद~ जिनके कृपा कटाक्ष के लिए की गई उपासना उपासक के लिए संपूर्ण मनोरथों और संपत्तियों का विस्तार करती है, श्रीहरि की हृदयेश्वरी उन्हीं आप लक्ष्मी देवी का मैं मन, वाणी और शरीर से भजन करता हूँ।।१४।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

कृपा कटाक्ष के पावन कारण, उपासक उपासना साधत भारी ।
सकल सम्पति मनोर्थ पूरण, हरि हृदयेश्वरी पद्मावती प्यारी ।।

तन मन वाणी से मैं ध्यावत हूँ, रमा पद्मासना हो दु:ख हारी ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि ऋद्धि दीजे सारी ।।१४।।

श्लोक ~

सरसिजनिलये सरोज हस्ते धवलमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।१५।।

भाष्यानुवाद~ भगवती श्री हरि प्रिया! तुम कमल वन में निवास करने वाली हो, तुम्हारे हाथों में नीला कमल सुशोभित है। तुम अत्यंत उज्ज्वल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से सुशोभित हो। तुम्हारी झाँकी बड़ी मनोरमा है। त्रिभुवन का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवी, मुझ पर प्रसन्न हो जाओ।।१५।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

हरि प्रिया कँजारण्य वासिनी, नील कमल कर सोभत भारी ।
उज्वल पट गन्ध माल गले बिच, झाँकी मनोरमा त्रिभुवन कारी ।।
सकल ऐश्वर्य दायक हो तुम, भगवती प्रसन्न विनय हमारी ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भरो भण्डारी ।।१५।।

श्लोक ~

दग्धिस्तिमि: कनकुंभमुखा व सृष्टिस्वर्वाहिनी विमलचारू जल प्लुतांगीम ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष लोकाधिनाथ गृहिणी ममृताब्धिपुत्रीम् ।।१६।।

भाष्यानुवाद~ दिग्गजों द्वारा सुवर्ण-कलश के मुख से गिराए गए आकाश गंगा के निर्मल एवं मनोहर जल से जिनके श्री अंगों का अभिषेक (स्नान) संपादित होता है, संपूर्ण लोकों के अधीश्वर भगवान विष्णु की गृहिणी और क्षीरसागर की पुत्री उन जगज्जननी लक्ष्मी को मैं प्रात:काल प्रणाम करता हूँ।।१६।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

आकाश गँगा सम उज्वल जल की, दिग्गज मुख कलशा धार बहावे ।
अँग अभिषेक सम्पादित पूरण, लोक अधीश्वर हरि गृहणि कहावे ।।
जगज्जनी के क्षीरोदक तात है, नित्य नमो प्रात शायँ सुहावे ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि भर लक्ष्मी आवे ।।१६।।

श्लोक ~

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरां गतैरपाड़ंगै: ।
अवलोकय माम किंचनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयाया : ।।१७।।

*भाष्यानुवाद~*कमल नयन केशव की कमनीय कामिनी कमले! मैं अकिंचन (दीन-हीन) मनुष्यों में अग्रगण्य हूँ, अतएव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूँ। तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरह तरंगों के समान कटाक्षों द्वारा मेरी ओर देखो।।१७।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

कमल नयन केशव की कामनि, करुणा की लहर बढा सुखकारी ।
दास अकिंचन अग्रगण्य पात्र, हरि पद्मा श्री शरण तुम्हारी ।।
कृपा कटाक्ष करो मुझ ऊपर, विनय करत हूँ वार हजारी ।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि सब लावे भारी ।।१७।।

~ श्लोक ~

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिर भूमिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते बुधभाविताया:।।१८।।

भाष्यानुवाद~ जो मनुष्य इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेद-त्रयी स्वरूपा त्रिभुवन-जननी भगवती श्री लक्ष्मी की स्तुति करते

हैं, वे इस भूतल पर महान गुणवान और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं तथा विद्वान पुरुष भी उनके मनोभावों को जानने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं।।१८।।

इन्दव छन्द पद्यानुवाद

कनक धारा नित पाठ करे जन, वेदत्रयी त्रिभुवन कारी।
लक्ष्मी प्रसन्न होय ताहि पर, करे विद्वान दे ऐश्वर्य भारी।।
भाग्य उदय अति क्षिप्र होवे वह, मनोभाव वह जानत सारी।
"रामप्रकाश" हरि वल्लभा वन्दित, सुख समृद्धि सँग कुञ्जविहारी।।१८।।

इस स्तुति के पूर्ण होते ही भगवती लक्ष्मी उनके सम्मुख प्रकट हो गई। इन्द्र के द्वारा वन्दित लक्ष्मी जी के दोनों चरणों की वन्दना करके उनके सामने हाथ जोड़कर खड़े हुए शंकराचार्य जी को देखकर और उनकी ललित स्तुतियों से प्रसन्न होकर लक्ष्मी जी ने मुस्कुराते हुए कहा ---"वत्स! तुम्हारे हृदय की बात मैं जानती हूँ, किन्तु इन्होंने पूर्वजन्म में कोई शुभकर्म नहीं किया, अतएव इस समय ये लोग मेरी कृपाकटाक्ष के विषय कैसे बन सकते हैं? मनुष्य अपने पूर्वजन्म में किये हुए कर्मों का ही फल इस जन्म में प्राप्त करता है। पूर्वजन्म में किया हुआ दानादि इस जन्म में इस जन्म में धन-सम्पत्ति के रूप में प्राप्त होता है। फलतः अगला जन्म सुधारने के लिए मनुष्यों को सदा सत्पात्रों को दान देते रहना चाहिए।" माँ लक्ष्मी जी की बातों को सुनकर आचार्य शङ्कर ने कहा - "माँ! मुझको यह जो आंवले का फल इन्होंने आज अर्पित किया है, यदि आप मुझको अपनी दया का पात्र समझती हो तो इसका फल इन्हें प्रदान करें।" तब शंकराचार्य जी के वचनों से सन्तुष्ट हुई लक्ष्मीजी ने उस ब्राह्मण के घर को सुवर्ण के आंवले से भर दिया

~ इन्दव छन्द ~

नित्य क्रिया निवृति प्रति दिन, बैठ एकान्त एकाग्र होना।
धूप दीप मन श्रद्धा विश्वास हो, यथा विधि कर यन्त्र को जोना।।
श्लोक या भाषा पाठ करे छन्द, कनक धारा स्वतः सिद्ध भोना।
" रामप्रकाश" गुर पूजन ध्यान से, पावत फल सिद्धि धन सोना।।१९।।

।।इति श्री कनकधारा स्तोत्रं भाष्यानुवाद सहित सम्पूर्णम्।।

ओ३म्

श्री हरीं गुरू सचिन्द्धानन्द्धाय नम :

अथ व्रजसूचिकोपनिषद

सनातनी सज्जनों ! पूर्वाचार्यो द्वारा उद्घोषित वज्रसूचिक-उपनिषद् -साम वेद, सामान्य उपनिषद् के अन्तर्गत जो सामाजिक व्यवस्था में "चातुर्वर्ण्य मया सृष्टम् " ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के नामों से भौतिकी देह के क्रियान्वयन कर्मों के विभाजन से कथित है । आधुनिकीकरण में सनातन धर्म शास्त्रों के समुचित अध्ययन नही होने तथा केवल अर्थोपार्जन से बिकाऊ कथाकारों – ब्रह्मणों द्वारा समाज को बाँटने के काम (सनातन धर्माङ्ग को तोड़ने) में अग्रणीय हो रहै है । जिस कारण से आज सामाजिक भ्रान्तियों में समाज पिछुड़ रहा है । उस अश्पृश्यता के सम्बन्ध मे जो शास्त्र आज्ञा है उसे उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते भाष्यानुवाद के साथ पद्यात्मक - पद्यानुवाद दिया जा रहा है , जो आजके समय की आवश्यकता एवँ सामयिकता है ,यह केवल ब्राह्मण के रूपक में ही नही अपितु साधु-सन्तों, कथाकारों तथा क्षत्रिय ,वैश्यादि सब के लिये हि नहि यह सामूहिकीकरण मार्गदर्शक सिद्ध होगा जो आज सँगठित होने में प्रमाणिक अनुकरणीय है। यह कथानक एक महर्षि के आश्रम पर आगन्तुक अतिथि ब्राह्मण के बीच हुए सँवाद के रूप में प्रस्तुतिकरण है ।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

यज्ञानाद्यान्ति मुनयो ब्राह्मण्यं परमाद्भुतम् ।
तत्रैपद्ब्रह्मतत्त्वमहमस्मीति चिन्तये ॥१॥

॥ ॐ आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

चित्सदानन्द रूपाय सर्वधी वृत्ति साक्षिणे ।
नमो वेदान्त वेद्याय ब्रह्मणेऽनन्त रूपिणे ॥२॥

भाष्यानुवाद - जिस अद्भुत ज्ञान को महर्षियों ने कथन किया है ,उस ब्रह्म तत्व के परम पद का स्मरण -चिन्तन करते हुए कुछ कथन कर रहा हूँ ।सच्चिदानन्द स्वरूप जो सर्व वृतियों का साक्षी अनन्त स्वरूप वैद्यक है ,उसे प्रणाम करता हूँ ।

~ इन्दव छन्द ~ मँगलाचरण ~

विश्व व्यापक कारण करण है, महर्षि गण जाहि को ध्यावे ।
पण्डित सज्जन सन्त रु साधक, निशिवासर जो ध्यान लगावे ।।
सच्चिदानन्द स्वरूप साक्षी सब, वृति स्वरूप परमानन्द पावे ।
“रामप्रकाश” प्रणाम करे नित, दे बुद्धि सत ज्ञान लखावे ।।१।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

ॐ वज्रसूचीं प्रवक्ष्यामि शास्त्रमज्ञानभेदनम् ।
दूषणं ज्ञानहीनानां भूषणं ज्ञानचक्षुषाम् ॥३॥

भाष्यानुवाद - अज्ञान नाशक, ज्ञानहीनों के दूषण, ज्ञान नेत्र वालों के भूषन रूप वज्रसूची उपनिषद ग्रन्थ का वर्णन करता हूँ !

~ इन्दव छन्द ~ ग्रन्थ का उपादान कारणकार्य कथन ~

भेद विनाशक भ्रम का भेदक, अज्ञान अँधेर मिटावन हारो ।
ज्ञानी के भूषण दोष हरे सब, अज्ञानी को दूषण हारण वारो ।।
वज्रसूचिक उपनिषद भाषित, कहूँ समाज सँगठित सारो ।
“रामप्रकाश” कहै धर्म सनातन, शास्त्र प्रमाण बतावण वारो ।।२।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रा इति चत्वारो वर्णास्तेषाम् ।
वर्णानां ब्राह्मण एव प्रधान इति वेदवचनानुरूपं स्मृतिभिरप्युक्तम् ।।४।।

भाष्यानुवाद - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं ! इन वर्णों में ब्राह्मण ही प्रधान है । ऐसा वेद वचन है और स्मृति -पुराणों में भी वर्णित है !

~ दोहा छन्द ~

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जन, चार वर्ण कह सिद्ध ।
वेद पुराणों ग्रन्थ में, ब्राह्मण मान्य प्रशिद्ध ।।३।।

~ महर्षि उवाच ~

भो कोऽहँ ? ~ हे कौन?

आगन्तुक अतिथि ~ ब्राह्मणोवाच~

~ अतिथि उवाच ~

अहम् ब्राह्मण: ! मैं ब्राह्मण हूँ ।

~ दोहा छन्द ~

मै ब्राह्मण हूँ महर्षि, अतिथि आयो द्वार ।
दर्शन करके अघ हरूँ, सन्तन का बलिहार ।।४।।

~ महर्षि उवाच ~

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्न ~

तत्र चोद्यमस्ति को वा ब्राह्मणो नाम किं जीवः किं देह: ।
किं जातिः किं ज्ञानं किं कर्म किं धार्मिक इति ॥५॥

भाष्यानुवाद ~ महर्षि उवाच ~ प्रश्न अनेक है ? अब यहाँ प्रश्न यह उठता है कि ब्राह्मण कौन है ? क्या वह जीव है ? अथवा कोई शरीर है?? अथवा जन्म जाति (जातक) ? अथवा कोई कर्म ? अथवा व्यवहारिक ज्ञान ? अथवा कर्मोपासना की धार्मिकता है ?

~ इन्दव छन्द ~

यहि ? जीवन में कौन है ब्राह्मण ? जीव ? शरीर है कौन बताओ ।
स्थूल ? धर्म ? के कर्म ? ज्ञान है ? धार्मिकता विचार लखाओ ?
चार वरण के देह में सब कहि, सब में प्राप्त है कोई जन पाओ ।
है अधिकार सब हि को बराबर, "रामप्रकाश" फिर द्वन्द हटाओ ।।५।।

~ अतिथि उवाच ~

तत्र प्रथमो जीवो ब्राह्मण इति चेत् तन्न ।

~ दोहा छन्द ~

जीव स्वरूप ब्राह्मण सदा, शुद्ध ईश्वर का अँश ।
चेतन स्वरूपी आप सो, मैं ब्राह्मण का वँश ।।६।।

~ महर्षि उवाच~मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्न ~

अतीतानागतानेकदेहानां जीवस्यैकरूपत्वात्
एकस्यापि कर्मवशादनेकदेहसम्भवात् सर्वशरीराणां जीवस्यैकरूपत्वाच्च ।
तस्मात् न जीवो ब्राह्मण इति ॥ तर्हि देहो ब्राह्मण इति चेत् तन्न ॥६॥

भाष्यानुवाद- इस स्थिति में यदि सर्वप्रथम जीव को ही ब्राह्मण मानें (कि ब्राह्मण जीव है), तो यह संभव नहीं है; क्योंकि भूतकाल और भविष्यतकाल में अनेक जीव हुए होंगें ! उन सबका स्वरुप भी एक जैसा ही होता है ! जीव एक होने पर भी स्व-स्व कर्मों के अनुसार उनका जन्म होता है और समस्त शरीरों में, जीवों में एकत्व रहता है, इसलिए केवल जीव को ब्राह्मण नहीं कह सकते !

~ इन्दव छन्द ~

जीव ही जीव अनेक ही भाँतिन, भूत भविष्य में हुए अनेका ।
एक स्वरूप में जीव सभी सम, कर्म धर्म वश योनि धरेका ।।
या विधि जीव को जानत विविध, ब्राह्मण मान्यता होय न लेका ।
"रामप्रकाश" कहो तुम कौन हो ? सत्य पहिचान बतावहु नेका ।।७।।

~ अतिथि उवाच ~

~ दोहा छन्द ~

मानव देह ब्राह्मण सदा, मात पिता सँग देह ।
जातक रूप सें हूँ वही, स्थूल शरीर में एह ।।८।।

~ महर्षि उवाच~मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्न ~

आचाण्डालादिपर्यन्तानां मनुष्याणां पञ्चभौतिकत्वेन देहस्यैकरूपत्वात् जरामरणधर्माधर्मादिसाम्यदर्शनत् ब्राह्मणः श्वेतवर्णः क्षत्रियो रक्तवर्णो वैश्यः पीतवर्णः शूद्रः कृष्णवर्णः इति नियमाभावात् ।

~ इन्दव छन्द ~

पँच भौतिक की देह सभी जन, मानव मात्र है एक समाना ।
क्षत्रिय वैश्य शूद्र चाण्डाल ही, सब की देह बराबर जाना ।।
जरा मरण रु जनमा कारण, सप्त धातु रस एक विधाना ।
"रामप्रकाश" आश्चर्य चकित हूँ, कैसे ब्राह्मण भये कहिये म्याना ।।९।।

~ महर्षि उवाच ~

पित्रादिशरीरदहने पुत्रादीनां ब्रह्महत्यादिदोषसम्भवाच्च ।
तस्मात् न देहो ब्राह्मण इति ॥७॥

भाष्यानुवाद- ऐसा भी कोई नियम देखने में नहीं आता कि (यदि शरीर ब्राह्मण है तो) पिता, भाई के दाह संस्कार करने से पुत्र आदि को ब्रह्म हत्या का दोष भी लग सकता है ! अस्तु, केवल शरीर का ब्राह्मण होना भी संभव नहीं है !!

~ इन्दव छन्द ~

कोऊ सुत पितृ देह जलावत, ब्रह्म हत्या को पाप उपावे ।
सुख रु दु:ख तपे सब मानव, ऐसे देह न ब्राह्मण थावे ।।
घटे बढे नर सभी शरीर के, चारों वर्ण जाति के गावे ।
'रामप्रकाश" नर तन नहि ब्राह्मण, इति वर्ण नहि वेद बतावे ।।१०।।

भाष्यानुवाद - क्या शरीर ब्राह्मण (हो सकता) है? नहीं, यह भी नहीं हो सकता ! चांडाल से लेकर सभी मानवों के शरीर एक जैसे ही अर्थात पांचभौतिक होते हैं, उनमें जरा-मरण, धर्म-अधर्म आदि सभी सामान होते हैं ! ब्राह्मण- गौर वर्ण, क्षत्रिय- रक्त वर्ण, वैश्य - पीत वर्ण और शूद्र- कृष्ण वर्ण वाला ही हो ।

~ इन्दव छन्द ~

पँच भौतिक तन एक बराबर, विप्र चाण्डाल में भेद न होई ।
ब्राह्मण गौर न क्षत्रिय रक्त न, वैश्य पीत न कृष्ण जन जोई ।।
धर्म रु अधर्म पाप रु पूण्य ही, सर्व प्राकृतिक एक हि सोई ।
"रामप्रकाश" सब नियम बराबर, प्राकृत गुण रु दोष लखोई ।।११।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

तर्हि जाति ब्राह्मण इति चेत् तन्न । तत्र जात्यन्तरजन्तुष्वनेकजातिसम्भवात् महर्षयो बहवः सन्ति । ऋष्यशृङ्गो मृग्याः, कौशिकः कुशात्, जाम्बूको जाम्बूकात्, वाल्मीको वाल्मीकात्, व्यासः कैवर्तकन्यकायाम्, शशपृष्ठात् गौतमः, वसिष्ठ उर्वश्याम्, अगस्त्यः कलशे जात इति श्रुतत्वात् । एतेषां जात्या विनाप्यग्रे ज्ञानप्रतिपादिता ऋषयो बहवः सन्ति । तस्मात् न जाति ब्राह्मण इति ॥

क्या जाति ब्राह्मण है ?

भाष्यानुवाद- (अर्थात ब्राह्मण कोई जाति है)? नहीं, यह भी नहीं हो सकता; क्योंकि विभिन्न जातियों एवं प्रजातियों में भी बहुत से ऋषियों की उत्पत्ति वर्णित है ! जैसे – मृगी से श्रृंगी ऋषि की, कुश से कौशिक की, जम्बुक से जाम्बूक की, वाल्मिक से वाल्मीकि की, मल्लाह कन्या (मत्स्यगंधा) से वेदव्यास की, शशक पृष्ठ से गौतम की, उर्वशी से वसिष्ठ की, कुम्भ से अगस्त्य ऋषि की उत्पत्ति वर्णित है ! इस प्रकार पूर्व में ही कई ऋषि बिना (ब्राह्मण) जाति के ही प्रकांड विद्वान् हुए हैं, इसलिए केवल कोई जाति विशेष भी ब्राह्मण नहीं हो सकती है !

~ इन्दव छन्द ~

बहु ऋषि गण विविध वेष में, नाना उत्पति के भेद लखावे ।
मृगी से श्रृँगी रु कुश से कौशिक, जम्बु से जाम्बुक जनन बतावे ।।
मल्लाह कन्या से व्यास महर्षि, शशक से गोतम होये जतावे ।
"रामप्रकाश' आश्चर्य यह अनुपम, पशुवन से मानव हो आवे ।।१२।।
उर्वशी से वशिष्ठ भये वर, कुम्भ से ऋषि अगस्त्य गावे ।
तप करके प्रशिद्ध भये जातक, वर्ण शँकर की बात छिपावे ।।
यह नही हो सकते ब्राह्मण, एक समान विचित्र लखावे ।
"रामप्रकाश" आश्चर्य यह अनुपम, ब्राह्मण हो यह कैसे आवे ।। १३।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

तर्हि ज्ञानं ब्राह्मण इति चेत् तन्न ।
क्षत्रियादयोऽपि परमार्थदर्शिनोऽभिज्ञा बहवः सन्ति ।
तस्मात् न ज्ञानं ब्राह्मण इति ॥८॥

भाष्यानुवाद - क्या ज्ञान को ब्राह्मण माना जाये ?

भाष्यानुवाद - ऐसा भी नहीं हो सकता; क्योंकि बहुत से क्षत्रिय (रजा जनक) आदि भी परमार्थ दर्शन के ज्ञाता हुए हैं (होते हैं) ! अस्तु, केवल ज्ञान भी ब्राह्मण नहीं हो सकता है !

~ इन्दव छन्द ~

क्षत्रिय अनन्त भये युग पूर्व, परम पुरुषार्थ पूरण ध्यायो ।
परमार्थ दर्शन कियो भली भाँतिन, ज्ञान अग्रणीय पद को ध्यायो ।।
केवल ज्ञान की वाचक वाचन, ब्राह्मण होवे किम समझ न पायो ।
"रामप्रकाश" क्षत्रिय भये ब्राह्मण, याहि विधि निषेध हि थायो ।।१४।।
गीता वेद रामायण भागवत, व्याकरण ज्योतिष छन्द रचावे ।
कथा करे बहु लोक रिझावन, शास्त्र षट् दर्शन मत ध्यावे ।।
पुराण अष्टादश भे काषाय में, ब्राह्मणत्व नही सिद्ध कहावे ।
"रामप्रकाश" विद्या नही ब्राह्मण, सब ही पढे नर नारि पढावे ।।१५।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

तर्हि कर्म ब्राह्मण इति चेत् तन्न ।
सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चितागामिकर्मसाधर्म्यदर्शनात्कर्माभिप्रेरिताः ।
सन्तो जनाः क्रियाः कुर्वन्तीति ~ तस्मात् न कर्म ब्राह्मण इति ॥९॥

भाष्यानुवाद - तो क्या कर्म को ब्राह्मण माना जाये? नहीं ऐसा भी संभव नहीं है; क्योंकि समस्त प्राणियों के संचित, प्रारब्ध और आगामी कर्मों में साम्य प्रतीत होता है तथा कर्माभिप्रेरित होकर ही व्यक्ति क्रिया करते हैं ! अतः केवल कर्म को भी ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता है !!

~ इन्दव छन्द ~

प्रकृति गत सँचित प्रारब्ध भोगत, कर्म आगामी सब ही को लागे ।
अभिप्रेरित हो कर्म विशेष ही, जीव मात्र सब ही के जागे ।।
याहि ते कर्म न होवत ब्राह्मण, सब ही करत कोई सभागे ।
"रामप्रकाश" कथे यह नैतिक, धर्म शास्त्र सनातन यो आगे ।।१६।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर~

तर्हि धार्मिको ब्राह्मण इति चेत् तन्न ।
क्षत्रियादयो हिरण्यदातारो बहवः सन्ति ।
तस्मात् न धार्मिको ब्राह्मण इति ॥१०॥

भाष्यानुवाद - क्या धार्मिक, ब्राह्मण हो सकता है ? यह भी सुनिश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि क्षत्रिय आदि बहुत से लोग स्वर्ण आदि का दान-पुण्य करते रहते हैं ! अतः केवल धार्मिक भी ब्राह्मण नहीं हो सकता है !

~ इन्दव छन्द ~

धैर्य शील क्षमा दम आदिक, धर्म अँग दश कोई जन धारे ।
दान इत्यादि करे कर्मकाण्ड ही, थर्म धरे जन मानव सारे ।।
धार्मिक नही पहिचान ब्राह्मणत्व, भूले है लोग बतावन हारे ।
"रामप्रकाश" कहै अधिकारिक, मानव कोई ब्राह्मण नहिं सारे ।।१७।।

~ मूल श्लोक अथवा वार्तिक प्रश्नोत्तर ~

तर्हि को वा ब्रह्मणो नाम । यः कश्चिदात्मानमद्वितीयं जातिगुणक्रियाहीनं षडूर्मिषड्भावेत्यादिसर्वदोषरहितं सत्यज्ञानानन्दानन्तस्वरूपं स्वयं निर्विकल्पमशेषकल्पाधारमशेषभूतान्तर्यामित्वेन वर्तमानमन्तर्यहिश्चाकाशवदनुस्यूतमखण्डानन्दस्वभावमप्रमेयं अनुभवैकवेद्यमपरोक्षतया भासमानं करतळामलकवत्साक्षादपरोक्षीकृत्य कृतार्थतया कामरागादिदोषरहितः शमदमादिसम्पन्नो भाव मात्सर्य तृष्णा आशा मोहादिरहितो दम्भाहङ्कारदिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तत एवमुक्तलक्षणो यः स एव ब्राह्मणेति शृतिस्मृतीतिहासपुराणाभ्याममभिप्रायः अन्यथा हि ब्राह्मणत्वसिद्धिर्नास्त्येव । सच्चिदानान्दमात्मानमद्वितीयं ब्रह्म भावयेदित्युपनिषत् ॥ ॐ आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥
॥ इति वज्रसूच्युपनिषत्समाप्ता ॥ ॥ भारतीरमणमुख्यप्राणन्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

भाष्यानुवाद - तब ब्राह्मण किसे माना जाये? (इसका उत्तर देते हुए उपनिषदकार कहते हैं) – जो आत्मा द्वैत भाव से युक्त ना हो; जाति गुण और क्रिया से भी युक्त न हो; षड उर्मियों और षड्भावों आदि समस्त दोषों से मुक्त हो; सत्य, ज्ञान, आनंद स्वरूप, स्वयं निर्विकल्प स्थिति में रहने वाला , अशेष कल्पों का आधार रूप , समस्त प्राणियों के अंतस में निवास करने वाला , अन्दर-बाहर आकाशवत संव्याप्त ; अखंड आनन्द्वान , अप्रमेय, अनुभवगम्य , अप्रत्यक्ष भासित होने वाले आत्मा का करतल आमलकवत परोक्ष का भी साक्षात्कार करने वाला; काम-रागद्वेष आदि दोषों से रहित होकर कृतार्थ हो जाने वाला ; शम - दम आदि से संपन्न ; दैहिक विकार मात्सर्य , तृष्णा , आशा,मोह आदि भावों से रहित; दंभ, अहंकार आदि दोषों से चित्त को सर्वथा अलग रखने वाला हो, वही ब्राह्मण है; ऐसा श्रुति, स्मृति-पूरण और इतिहास का अभिप्राय है ! इस (अभिप्राय) के अतिरिक्त किसी भी प्रकार से ब्राह्मणत्व सिद्ध नहीं हो सकता ! आत्मा -चित और आनंद स्वरूप तथा अद्वितीय है ! इस प्रकार ब्रह्मभाव से संपन्न मनुष्यों को ही ब्राह्मण माना जा सकता है ! वज्रसूचिकोपनिषद का मत है !

~ दोहा छन्द - अतिथि प्रश्न ~

ब्राह्मणत्व सिद्ध ना भयो, विद्या देह धन ज्ञान ।
किस को ब्राह्मण मानिये, पूछत भयो विद्वान ।।१८।।

~ महर्षि का उतर ~ इन्दव छन्द ~

द्वैत रु जाति क्रिया गुण हीन हो, षट् उर्मी षट् भाव ते आगे ।
निर्विकल्प निरँजन चेतन, सर्व उपाधि से मुक्त अलागे ।।
अशेष कल्प में अजर अमर है, सब में अन्तस्थ रूप सभागे ।
"रामप्रकाश" निश्चय सच्चिदानन्द, स्वयँ ब्रह्म पद सो अनुरागे ।।१९।।
अनुभव गम्य है आप सनातन, अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष दरसाई ।
करतल गत आमलीय अनुभव, द्वन्द द्वैषादिक दियो भगाई ।।
साधन साध्य को भेद मिट्यो मन, स्वयँ कृतार्थ रूप सदाई ।
ब्रह्मात्म निश्चय भान कियो दृढ, "रामप्रकाश ' वह ब्राह्मण भाई ।। २०।।
श्रुति स्मृति शास्त्र सन्त भाषत, दम्भ दोषादिक दूर भगावे ।
नाना अभिप्राय से सिद्ध न होवत, सत चित आनन्द एक दृढावे ।।
ब्रह्म भाव को चित में चेतन, ब्रह्मविद् हो सोई ब्राह्मण भावे ।
"रामप्रकाश" नमो पद वन्दन, ऐसे ब्राह्मण को शीश नमावे ।।२१।।

~ दोहा छन्द ~

ब्रह्म भाव जो हो गये, वह ब्राह्मण जगदीश ।
यह उपनिषद मान्यता, सात्विक माने वरीश ।।२२।।

भाष्यानुवाद - अर्थात् गीता इत्यादि सर्वत्र सनातन के प्राचीन धर्म शास्त्रों मे ब्राह्मणत्व के लक्षण यहि कथन हुए है किन्तु यत्र तत्र ब्राह्मण शब्द से सामाजिक मानव भ्रमित होजाते है ,जिस का लाभ निरक्षर भ्रम में फँसे ग्रह दोष बताने वाले कर्मकाण्ड से स्वार्थ सिद्ध कर लेते है ।

~ इन्दव छन्द ~

पाँच तत्व की देह बराबर, नाम रु वर्ण पहिचान है भाई ।
नाम कुल रु गौत्र जाति भ्रम, वर्ण आश्रम षट् जानले गाई ।।
हाथ पाँव रु आँख कान सब, मन इन्द्रिय कछु भेद है नाई ।
"रामप्रकाश" शास्त्र प्रमाण से, ईश्वर के है जीव सदाई ।।२३।।
सन्तन की गति जानि विचि, तरे आप अरु नाहि तरावे ।
तरण तारण हार जो एक है, आप तरे अरु और तरावे ।।
आप तरे नहि पथ दरसावत, औरन को वह पार पठावे ।
"रामप्रकाश" डूबे वह ब्राह्मण, डूबे आप रु और डूबावे ।।२४।।

~ विविधतापूर्ण प्रमाण ~

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत तदेवेतरो जनः
स यत प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ (गीता ३/२१)

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार अनुसरण करते (बरतने लग जाता) है ।।३/२१।।

कौन है असली ब्राह्मण ~ दोहा छन्द -प्रश्न ?

असली ब्राह्मण कौन है ? शास्त्र कहत प्रमान ।
भ्रम मिटाओ आपना, मेट अश्पृश्यता भान ।।२५।।

भाष्यानुवाद - पूर्वकाल में ब्राह्मण होने के लिए शिक्षा, दीक्षा और कठिन तप करना होता था। इसके बाद ही उसे ब्राह्मण कहा जाता था। गुरुकुल की अब वह परंपरा नहीं रही। जिन लोगों ने ब्राह्मणत्व अपने प्रयासों से हासिल किया था उनके कुल में जन्मे लोग भी खुद को ब्राह्मण समझने लगे। ऋषि-मुनियों की वे संतानें खुद को ब्राह्मण मानती हैं, जबकि उन्होंने न तो शिक्षा ली, न दीक्षा और न ही उन्होंने कठिन तप किया। आज उन्हे निरक्षर भट्टाचार्य ,अशिक्षित ,बातूनी, भिक्षार्थी या भिक्षावृत्ति में केवल जनेऊ का भी अपमान करते देखा जा सकता है । आजकल के कतिपय तथाकथित ब्राह्मण लोग होटलों में शराब पीकर, मांस खाकर और असत्य वचन बोलकर ,बीड़ जर्दा,अफीम इत्यादि दुर्व्यशन रत भी स्वयं को ब्राह्मण समझते हैं और समाज मान्यता देती है । ऐसे साधुओं और ब्राह्मणों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए । उनमें से कुछ तो धर्मविरोधी हैं, कुछ धर्म जानते ही नहीं, कुछ गफलत में भ्रम फैलाने में जी रहे हैं, कुछ ने धर्म को धंधा बना रखा और कुछ पोंगा-पंडित और कथावाचक बने बैठे हैं। ऐसे ही सभी कथित ब्राह्मणों के लिए हमने कुछ जानकारी इकट्ठा की है। किसे ब्राह्मण कहलाने का हक... ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या : जो ब्रह्म (ईश्वर) को छोड़कर किसी अन्य को नहीं पूजता वह ब्राह्मण । ब्रह्म को जानने वाला ब्राह्मण कहलाता है। जो पुरोहिताई करके अपनी जीविका चलाता है, वह ब्राह्मण नहीं, याचक है । जो ज्योतिषी या नक्षत्र विद्या से अपनी जीविका चलाता है वह ब्राह्मण नहीं, ज्योतिषी है और जो कथा बांचता है वह ब्राह्मण नहीं कथा वाचक है। इस तरह वेद और ब्रह्म को छोड़कर जो कुछ भी कर्म करता है वह ब्राह्मण नहीं है। जिसके मुख से ब्रह्म शब्द का उच्चारण नहीं होता रहता वह ब्राह्मण नहीं।

~ श्लोक ~

श्लोकन जटाहि न गोत्तेहि न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
यम्हि सच्चं च धम्मो च सो सुची सो च ब्राह्मणो ॥

भाषानुवाद- अर्थात : भगवान बुद्ध कहते हैं कि ब्राह्मण न तो जटा से होता है, न गोत्र से और न जन्म से। जिसमें सत्य है, धर्म है और जो पवित्र है, वही ब्राह्मण है। कमल के पत्ते पर जल और आरे की नोक पर सरसों की तरह जो विषय-भोगों में लिप्त नहीं होता, मैं उसे ही ब्राह्मण कहता हूं।

~ पद्यानुवाद सवैया छन्द ~

जटा न पटा है लटा न घटा है, जनम रु गौत्र से विप्र न थावे।
धर्म सत्य व्रत अध्ययन अध्यापन, यज्ञ करे अरु और करावे।।
दान देवत है अरु लेवत है कण, विद्या पढे निज और पढावे।
"रामप्रकाश" यह है ब्राह्मण के गुण, ईर्ष्या द्वैष को दूर भगावे।।२६।।

~ श्लोक ~

तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण य थावरे।
जो न हिंसइ तिविहेण तं वयं बूम माहणं॥

भाष्यानुवाद- अर्थात : महावीर स्वामी कहते हैं कि जो इस बात को जानता है कि कौन प्राणी त्रस है, कौन स्थावर है। और मन, वचन और काया से किसी भी जीव की हिंसा नहीं करता, उसी को हम ब्राह्मण कहते हैं।

~ पद्यानुवाद ~ सवैया छन्द ~

तन मन वाणी है निर्मल जाहि की, जीव दया घट भीतर लावे।
स्थावर जँगम जीव चराचर, सब में आतम एक लखावे।।
महावीर कहै वह ब्राह्मण है सद्, जनम रु गौत्र से नाहि कहावे।
'रामप्रकाश" सब सन्त रु शास्त्र, वेद वदे नही भेद बतावे।।२७।।

~ श्लोक ~

न वि मुंडिएण समणो न ओंकारेण बंभणो।
न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो॥

भाष्यानुवाद - अर्थात : महावीर स्वामी कहते हैं कि सिर मुण्डा लेने से ही कोई श्रमण नहीं बन जाता। ओंकार का जप कर लेने से ही कोई ब्राह्मण नहीं बन जाता। केवल जंगल में जाकर बस जाने से ही कोई मुनि नहीं बन जाता। वल्कल वस्त्र पहन लेने से ही कोई तपस्वी नहीं बन जाता।

~ सवैया छन्द ~

शीश मुण्डन ते श्रमण नाहिन, ओम् जपे नही ब्राह्मण सोवे।
मौन रखे वनवास रहे कोई, मुनि नही होवत आयु को खोवे।।
वल्कल धारण तपी नही कोई, भगवाँ पहन कोई सन्त न होवे।
"रामप्रकाश" महावीर कहै इमि, सन्त रु शास्त्र यही दरसावे।।२८।।

श्लोक

शनकैस्तु क्रियालोपदिनाः क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणा दर्शनेन च॥
पौण्ड्रकाशचौण्ड्रद्रविडाः काम्बोजाः भवनाः शकाः।
पारदाः पहल्वाश्चीनाः किरताः दरदाः खशाः॥

- मनुसंहिता (१- (/४३-४४)

भाष्यानुवाद - अर्थात : ब्राह्मणत्व की उपलब्धि को प्राप्त न होने के कारण उस क्रिया का लोप होने से पोण्ड्र, चौण्ड्र, द्रविड़ काम्बोज, भवन, शक, पारद, पहल्व, चीनी , किरात, दरद व खश ये सभी क्षत्रिय जातियां धीरे-धीरे शूद्रत्व को प्राप्त हो गईं।

~ सवैया छन्द ~

ब्राह्मणत्व जप तप गुण रु ओज भी, ब्रह्मत्व ब्राह्मण के गुण जावे।
लोप होवे गुण विधर्म वाचक, होय अनार्य वन बास बसावे।।
क्षत्रिय ब्राह्मण पतित होवत, अन्य धर्म ध्वजी हो अपनावे।
"रामप्रकाश" सब पन्थ रु ग्रन्थ में, बात यही सत यह दरसावे।।२९।।

भाष्यानुवाद - साराँस है कि जन्म - जाति के आधार से कथित ब्राह्मण के उतरी - दक्षिणी इत्यादि अनेक प्रकार...है। महाभारत के

अनुशासन पर्व [दानधर्म पर्व] के उमा – महेश्वर संवाद के अंतर्गत अध्याय-१४३ के निम्नलिखित श्लोको (४८ से ५१)और श्लोक ५९ में शूद्र वर्ण के ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेने की सुन्दर चर्चा है –

~ दोहा छन्द ~

ग्रन्थों के प्रमाण है, देखो कछु प्रमाण ।
अधिक देखना जो चहो, उतम प्रकाशन जाण ।।३०।।

दृष्टव्य ~ हिन्दू धर्म रहस्य ,भारतीय समाज दर्शन , सँस्कार चन्द्रिका इत्यादि उतम प्रकाशन ,जोधपुर ।

~ ऐसे हि महाभारत में देखो ~

कर्मभि: शुचिभिर्देवि शुद्धात्मा विजितेन्द्रिय: ।
शूद्रोऽपि द्विजवत् सेव्य इति ब्रह्माब्रवीत् स्वयम् ।।

भाषानुवाद - देवि ! शूद्र भी यदि जितेन्द्रिय होकर पवित्र कर्मों के अनुष्ठान से अपने अन्त:करण को शुद्ध बना लेता है, तो वह द्विज (ब्राह्मण) की ही भांति सेव्य (पूज्य) होता है –यह साक्षात् ब्रह्माजी का कथन है ।

~ सवैया छन्द ~

होय जीतेन्द्रिय पावन अनुष्ठान हो, शुद्ध अतः करण आप बनावे ।
विद्या पढे अध्यात्म साधन, ब्रह्मवेता सतगुरू पहि जावे ।।
वह ब्राह्मण जन होय भले वर, पूजनीय पद सहज हि पावे ।
वर्ण परिवर्तन शास्त्र विधि कह, "रामप्रकाश" सत बात बतावे ।।३१।।

~ ऐसे हि महाभारत में और देखो ~

स्वभावः कर्म च शुभं यत्र शूद्रोऽपि तिष्ठति ।
विशिष्टः स द्विजातेर्वै विज्ञेय इति मे मति ।।

भावार्थ~मेरा तो ऐसा विचार है कि यदि शूद्र के स्वभाव और कर्म दोनों उत्तम हों तो वह द्विजाति से भी बढ़कर मानने योग्य है ।।

~ सवैया छन्द ~

शूद्र के कुल वँश में जातक, गुण धर्म स्वभाव सुधारे ।
उतम कर्म रु चाल सुधावत, दुर्व्यशन दुर्गुण दूर प्रहारे ।।
द्विजाति से है वह उतम, पूज्य होय कुल उज्वल धारे ।
"रामप्रकाश" महाभारत भाषित, शास्त्र यह प्रमाण पुकारे ।।३२।।

~ ऐसे हि महाभारत में और देखो ~

न योनिर्नापि संस्कारो न श्रुतं न च संतति: ।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम् ।।

भावार्थ ~ ब्राह्मणत्व की प्राप्ति में न तो केवल योनि, न संस्कार , न शास्त्रज्ञान और न संतति ही कारण है. ब्राह्मणत्व का प्रधान हेतु तो सदाचार ही है ।

~ सवैया छन्द ~

योनि जनम से द्विज न होवत, नहि उपवीत सँस्कार सुहाई ।
शास्त्र ज्ञान नहि वाचकता गुण, मात पिता नही कारण भाई ।।
इन ते ब्राह्मण नाहि भने कोई, सँस्कार हो सदाचार बताई ।
"रामप्रकाश" हो ब्रह्म का अनुभव, ब्रह्मवेता ब्राह्मण हो जाई ।।३३।।

~ ऐसे हि महाभारत में और देखो ~

सर्वोऽयं ब्राह्मणो लोके वृत्तेन तु विधीयते ।
वृत्ते स्थतस्तु शूद्रोऽपि ब्राह्मणत्वम् नियच्छति ।।५१।।

भावार्थ~ लोक में यह सारा ब्राह्मण समुदाय सदाचार से ही अपने पद पर बना हुआ है ।सदाचार में स्थित रहने वाला शूद्र भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो सकता है।।५१।।

सवैया छन्द

विश्व प्रशिद्ध जो ब्राह्मण पद है, ब्रह्मविद् होय सदाचार से पायो ।

या विधि से जो रहे स्थिर जन, वह ब्राह्मण को पद पाय सुहायो ।।
ब्रहज्ञानी स्वयँ ब्रह्म समान है, छान्दोग्य उपनिषद ब्राह्मण गायो ।
"रामप्रकाश" पढो धर्म शास्त्र, पोल में ढोल को बाज बजायो ।।३४।।

~ ऐसे हि महाभारत में और देखो ~

एतत् ते गुह्यमाख्यातम् यथा शूद्रो भवेद् द्विजः ।
ब्राह्मणो वा च्युतो धर्माद् यथा शूद्रत्वमाप्नुते ।।

भावार्थ~हे गिरिराजकुमारी ! शूद्र धर्माचरण करने से जिस प्रकार ब्राह्मणत्व को प्राप्त करता है तथा ब्राह्मण स्वधर्म का त्याग करके भ्रष्ट होकर जिस प्रकार शूद्र हो जाता है । यह गूढ़ रहस्य की बात मैंने तुम्हें बतला दी हैं ।

~ सवैया छन्द ~

शिव ने कहा शिवा सो सुन, शुद्र सदाचार ज्यों शुद्ध होवे ।
तैसे ही दुराचार से ब्राह्मण, पतित होय वँश को खोवे ।।
गूढ रहस्य वर्ण परिवर्तन यह, शास्त्र सामाजिक रीति से जोवे ।
'रामप्रकाश" गिरिराज कुमारी से, महादेव कही यह जानत कोवे ।।३५।।

शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषूर्मृदुवागनहंकृत: ।
ब्राह्मणद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते ।।९ /३३५ ।।

भावार्थ – शुद्ध-पवित्र, अपने से उत्कृष्ट सदाचार वालों की सेवा करने वाला, मधुरभाषी, अहंकार से रहित, सदा ब्राह्मण आदि तीनों वर्णों की सेवा में संलग्न शूद्र भी उत्तम ब्रह्मजन्म* के अतंर्गत दूसरे वर्ण (पुनर्जन्मा ब्राह्मणत्व) को प्राप्त कर लेता है.

~ सवैया छन्द ~

सन्त ऋषि सम जीवन पावन, ब्रह्मविद् की कर सेव सुहाई ।
मधुर भाषण सत्य सुहावन, अहंकार रहित विद्वान भलाई ।।
वर्ण परिवर्तन होय के पावत, उच्च वर्ण सुख रूप कहाई ।
"रामप्रकाश" बहु ऐसे भये गण, है इतिहास सुन ध्यान लगाई ।।३६।।
वशिष्ठ शक्ति पाराशर व्यास हि, वर्णशँकर कुल हीन अपारे ।
धार्मिक ग्रन्थ रचे जिन स्तम्भित, स्मृति पुराण अट्ठारह भारे ।।
जाबालि ऋषि आचार्य उपनिषद्, सो पिता बिन बोल सुधारे ।
"रामप्रकाश' कहै कवि कोविद, अनन्त प्रमाण साहित्य हमारे ।।३७।।

भाष्यानुवाद~ ब्रह्मजन्म से अभिप्राय शिक्षित होने से है. शिक्षित होने को दूसरा जन्म भी कहा गया है । उपरोक्त श्लोक से बात कुछ समझ में आती है. इसे और समझने के लिए एक अन्य श्लोक देखें. यह श्लोक ऋग्वेद से है. (ऋग्वेद का श्लोक इसलिए क्योंकि मनु की बातें वेदों में निहित हैं)

ब्राह्मण: क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातय: ।
चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचम: ।। १०/४ ।।

भावार्थ – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीन वर्ण विद्याध्ययन रूपी दूसरा जन्म प्राप्त करने वाले हैं, अत: द्विज कहलाते हैं. चौथा विद्याध्ययन रूपी दूसरा जन्म (द्विजजन्म) न होने के कारण एकजाति या एक जन्म वाला ब्रह्मजन्म से रहित शूद्र वर्ण है. पांचवां कोई वर्ण नहीं है.

~ सवैया छन्द ~

गुण धर्म कृत जनम धारण, मानव का द्वितीय जनम कहावे ।
पशु जन्मत है एक बार जग, दीक्षा ही पुनर्जन्म रहावे ।।
वर्ण परिवर्तन पुनर्जन्म यही, ऊँच नीच रु नीच ऊँच पद पावे ।
"रामप्रकाश" देखो जग प्रत्यक्ष, विचार बुद्धि बल तेज सुहावे ।।३८।।

इन दो श्लोकों से बहुत साफ होता है कि ज्ञान प्राप्त करना (पढ़ना-लिखना) दूसरा जन्म है. दूसरा जन्म नहीं पाने वाला अर्थात जो पढ़ता-लिखता नहीं है, ज्ञान अर्जित नहीं कर पाता है, वह शूद्र है. बहुत सरल-सी बात है. जो ज्ञान अर्जित कर पाने में अक्षम हैं वे शूद्र हैं. ऐसा नहीं है कि शूद्र, ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते. मनु के श्लोक से साफ है कि यदि सेवा में लगा शूद्र ब्रह्मजन्म ले ले,

मतलब पढ़ लिखकर ज्ञान हासिल कर ले, तो वह दूसरे वर्ण का अधिकारी हो सकता है. मनुस्मृति के प्रक्षिप्त अँशों को छोडकर मनु का मूल एक श्लोक है ,जो दूध को दूध साबित कर देता है, पानी छाँटकर अलग हो जाता है – एक व्यक्ति दो बात कैसे कह सकता है ।

~ श्लोक ~

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ।।१०/६५।।

भावार्थ – शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण शूद्र हो सकता है अर्थात गुणकर्मों के अनुकूल ब्राह्मण हो तो ब्राह्मण रहता है तथा जो ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के गुण वाला हो तो वह क्षत्रिय वैश्य और शूद्र हो जाता है. वैसे शूद्र भी मूर्ख हो तो वह शूद्र रहता है और उत्तम गुणयुक्त हो तो यथायोग्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य हो जाता है. वैसे ही क्षत्रिय और वैश्य के विषय में भी जान लेना. (इस श्लोक में बहुत क्लीयर लिखा है कि यदि गुण ब्राह्मण के हैं तो व्यक्ति ब्राह्मण नहीं है, नहीं तो अपने गुणों के अनुसार वह क्षत्रिय, वैश्य, या शूद्र हो जाता है)

~ सवैया छन्द ~

सात्विक विद्या गुणवान बली बल, जो चाहे मानव करे वही ।
वर्ण परिवर्तन होय सके सत, शास्त्र प्रमाण अनेक सही ।।
जाति चौरासी लाख कही वह, बदल सके नही भव कोटि रही ।
"रामप्रकाश" यह सत्य कहै सब, सँज्ञा पढ कर देख कही ।।३९।।

इत्यादि श्लोकों को समझ लेने के बाद अब यह शक (भ्रम) नहीं रहता कि चारों वर्णों को किस आधार पर बनाया गया था ,वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर कतई नहीं है, इसका आधार कर्म हैं । किसी के विभिन्न काम है ~ उसे ब्राह्मण या शूद्र या वैश्य या क्षत्रिय बनाते हैं.। यहां एक बात और बता दूं कि मनु के अनुसार ये चार ही वर्ण हैं. इन चारों के बाहर जो भी हैं, वे सब दस्यु कहे गए हैं.। विवादित विषय की विवेचना ~ चलते-चलते : हमारे यहां एक विद्वान हुए, कुल्लूक भट्ट. मनुस्मृति की जो मां-बहन इन्होंने की है, शायद किसी अन्य ने नहीं की. यह धारणा इन्हीं की व्याख्या से निकली है कि ब्रह्मा ने अपने मुख से ब्राह्मण को पैदा किया और बाकी हिस्सों से बाकी वर्णों को. जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है. कुल्लूक की कारस्तानियां किसी अन्य समझने की बात यह है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह पद ~जाति नहि है । जो कर्मों के अनुसार प्राप्त होते हैं । वर्ण शब्द से तात्पर्य ब्राह्मण का संबंध ज्ञान से हैं, ज्ञानी का पता तब चलता है ~ जब उसके मुंह से उस स्थिति का ज्ञान ब्रह्मत्व उत्पन्न होता है । क्षत्रिय की पहचान उसकी भुजाओं के बल से क्षत्रियत्व उत्पन्न होकर समाज रक्षा होती है । यह तथाकथित अपने आप को उच्च समझने वाली जातियों की धर्म के प्रति ठेकेदारी के कारण ऐसा हुआ कि उन्होंने सिर्फ अपना पेट भरने के लिए धर्म और धर्म शास्त्रों का सौदा किया और मन मर्जी आए जो अर्थ करके लोगों को बेवकूफ बनाया और सबसे बड़ी विडंबना तो यह है लोगों की पहुंच से इन धर्म शास्त्रों को दूर रखा और लोगों को पढ़ने ही नहीं दिया क्योंकि अगर सब इन धर्म ग्रंथों को पढ़ लेते तो वे वास्तविक ज्ञान को समझ जाते । इसलिए पढ़ने का अधिकार ही छीन लिया गया और तथाकथित जातियों ने पढ़ने की ठेकेदारी अपने पास ही रखी.। यही कारण हैकि आज समाज विखण्डित ,रूढि प्रथाओं मे जातिवाद - अश्पृश्यता इत्यादि अनेक भ्रांतियां उतपन्न हुई और इस मे कुछ भी रही भूलों को दो हजार वर्षो पूर्व विदेशी तन्त्र ने आगे बढाया और धन एवँ शक्ति के बल से स्वार्थी पण्डितों से प्रक्षिप्त श्लोकों की कूट रचना से सभी धर्मशास्त्रों को विकृतियों से भर दिये गये। अतः इन भ्रान्तियों का समूल निराकरण होना चाहिए । वेदों का अध्ययन करें उसके बाद कोई सनातन धर्म में जो वेद अथवा धार्मिक पुस्तकें हैं उनके बारे में कोई भी लेख लिखें अन्यथा भ्रांतियां ना फैलाएं की वर्ण व्यवस्था के ऊपर हमारे जो वेदों पुराणों में जो वर्ण-व्यवस्था लिखी है वह सनातन है और अमित है कुछ तथ्यों के आधार पर जो कि मनुस्मृति १०.६५ ब्राह्मण शूद्र बन सकता और शूद्र ब्राह्मण हो सकता है. इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी अपने वर्ण बदल सकते हैं. ... मनुस्मृति के अनेक श्लोक कहते हैं कि उच्च वर्ण का व्यक्ति भी यदि श्रेष्ठ कर्म नहीं करता, तो शूद्र (अशिक्षित) बन जाता है.। मनु की वर्णव्यवस्था में, सभी व्यक्तियों के वर्णों का वर्गीकरण गुण-कर्म और योग्यता के आधार पर किया गया है, न की जाति व्यवस्था के आधार पर।

~ इन्दव छन्द ~

ग्रन्थ अनेक प्रमाण दिखावत, पण्डित कथा कह जग भ्रमावे ।
धर्म सम्प्रदाय के नियम वाणी सब, हरि भक्ति मत भेद भुलावे ।।
धर्म ग्रन्थ कोई मत मतान्तर, मानवता के गुण प्रेम बढावे ।
धर्म ध्वजी विद्वान बने धिक, "रामप्रकाश" सब झूठ फैलावे ।।४०।।

धर्म ग्रन्थ प्रमाण बतावत, पण्डित स्वार्थी बात छुपाते ।
कथाकार सब सन्त रु ब्राह्मण, धर्म बेच कर अर्थ कमाते ।।
आज धर्म सतसँग इत्यादिक, यज्ञ कथा रु पूजा बिकाते ।
“रामप्रकाश” पुकार करे हरि, वृति परमार्थ देहु दयाते ।।४१।।

~ श्लोक ~

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

अर्थात् चाहे कोई भी वर्ण धर्म या जाति का मानव है और उस के पास विद्या, तप, ज्ञान, शील, गुण और धर्म में से कुछ नहीं है ,वह मनुष्य ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जैसे वनवासी पशु एक मृग है। अर्थात : जिस मनुष्य ने किसी भी प्रकार से विद्या अध्ययन नहीं किया, न ही उसने व्रत और तप किया, थोड़ा बहुत अन्न-वस्त्र-धन या विद्या दान नहीं दिया, न उसमें किसी भी प्राकार का ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न धर्म है। ऐसे मनुष्य इस धरती पर भार होते हैं। मनुष्य रूप में होते हुए भी पशु के समान जीवन व्यतीत करते हैं।

~ सवैया छन्द ~

जिस मानव में अध्यात्म के सँग, विद्या तप रु ध्यान नही ।
सात्विक शील रु गुण नही बल, धर्म धारण धन दान नही ।।
सँगठन शक्ति वर्चस्व वाणी बल, ब्रह्म अभ्यास का ज्ञान नही ।
“रामप्रकाश” वह जीवन है मृतक, पशुवत अरण्यक वास सही ।।४२।।

~ यह संगठन सूक्त ~

यह मंत्र उस सूक्त का एक भाग है। निश्चित रूप से अंत में कही गई बात पूरी बात का सार होता है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल का अंतिम सूक्त है ,

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥

अर्थात् ~हम सब एक साथ चले ! एक साथ बोले ! हमारे मन एक हो.! प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा इसी कारण से वह वन्दनीय है.ऐसे देवताओं की सज्जन लोग उपासना करते हैं !जिससे उनके जीवन के गुण भी अपने आचरण में ये आ जाए ।

दोहा छन्द

मिल कर सँगठन में रहें, बोले एक हि बोल ।
साथ चले सँग मे सभी, उन्नत समाज अडोल ।।४३।।

।। इति वज्रसूचिकोपनिषद व्याख्यान सम्पूर्ण ।।

श्रीं हरीं गुरू सचिन्दानन्दाय नमः

अथ ऋग्वेद श्रीसूक्त

श्री सूक्तम् देवी लक्ष्मी की आराधना करने हेतु उनको समर्पित मंत्र हैं। इसे 'लक्ष्मी सूक्तम्' भी कहते हैं। यह श्रीसूक्त ऋग्वेद का सूक्त है जो ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के अन्त में उपलब्ध होता है। सूक्त में मन्त्रों की संख्या पन्द्रह है। सोलहवें मन्त्र में फल-श्रुति है। बाद में ग्यारह मन्त्र परिशिष्ट के रूप में उपलब्ध होते हैं । इ नको 'लक्ष्मीसूक्त' के नाम से स्मरण किया जाता है। आनन्द, कर्दम, श्री और चिक्लीत ये चार श्रीसूक्त के ऋषि हैं। इन चारों को श्री (लक्ष्मी) का पुत्र बताया गया है। श्री पुत्र हिरण्यगर्भ को भी श्री सूक्त का ऋषि माना जाता है । श्री सूक्त का चौथा मन्त्र बृहती छन्द में है। पांचवाँ और छटा मन्त्र त्रिष्टुप छन्द में है। अन्तिम मन्त्र का छन्द प्रस्तार पंक्ति है । शेष मन्त्र अनुष्टुप छन्द में है। श्रीशब्द वाच्या लक्ष्मी इस सूक्त की देवता हैं । सूक्त का पाठ धन-धान्य की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है।ऋग्वेद श्री सूक्त काम, क्रोध, लोभ इत्यादि की विकार वृत्ति से मुक्ति प्राप्त कर धन, धान्य, सुख, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए उपयोगीहै । यह ऋग्वेद का श्री सूक्त एक स्तोत्र है जिसे हिन्दी में भाषानुवाद एवँ पद्यात्मक-पद्यानुवाद सहित दिया जा रहा है।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।१।।

भाष्यानुवाद - हे जातवेदा अग्निदेव ! आप मुझे सुवर्ण के समान पीतवर्ण वाली तथा किंचित हरितवर्ण वाली एवँ हरिणी रूपधारिणी सुवर्ण मिश्रित रजत मयी चाँदी के समान धवल पुष्पों की माला धारण करने वाली , चंद्रमा के सद्रश प्रकाशमान तथा संसार को प्रसन्न करने वाली , चंचला के सामान रूपवाली ये हिरण्मय जिसका शरीर है , ऐसे गुणों से युक्त लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ।

इन्दव छन्द

स्वर्ण समान पीत वर्ण तन, हरित रँग के पट ही साजे ।
स्वर्ण मिश्रित रोप्य धोवल गल, पुष्प माल सुन्दर राजे ।।
शशि समान प्रकाशित सोभित, हिरण्यमय गुण विराजे ।
कृपा करो अब मोपर माधुरि, “रामप्रकाश” करे वन्दन काजे ।।१।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

ॐ तां म आ व ह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं परुषानहम ।।२।।

भाष्यानुवाद - हे जातवेदा ! अग्निदेव ! आप महा माया~ विश्व प्रसिद्ध लक्ष्मी जी को मेरे लिए बुलाओ । जिनके आवाहन करने पर मै सुवर्ण ,गौ, अश्व और पुत्र पोत्रदि वैभव को प्राप्त करूँ।

इन्दव छन्द

हे अग्निदेव सब घट विराजित, प्रेरित कर महा लक्ष्मी बुलावो ।
करूँ आवाहन देव सभी मिल, महा लक्ष्मी मेरे घर लावो ।।
गाय अश्व पशुवादिक चर धन, पुत्र पौत्र सम्पति वरसावो ।
“रामप्रकाश” नमो सुर वन्दित, निशिदिन मो घर वास बसावो ।।२।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद्प्रमोदिनिम ।
श्रियं देविमुप हवये श्रीर्मा देवी जुस्ताम ।।३।।

भाष्यानुवाद - जिस देवी के आगे और मध्य में रथ है अर्थात् जिसके सम्मुख घोड़े रथ से जुते हुए हैं ,ऐसे रथ में बैठी हुई , हथियो की निनाद से संसार को प्रफुल्लित करने वाली , देदीप्यमान एवं समस्त विश्व को आश्रय देने वाली लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूँ । वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करे ।

इन्दव छन्द

आगे रु मध्य में रथ चले बहु, घोड़े चले सुन्दर सुखदाई ।
सजी पालकी रथ विराजित, चले गजराज निनाद बजाई ।।
आश्रय दायक माधुरि चालत, आमन्त्रित करूँ मोरे गृह तांई ।
"रामप्रकाश" देदीप्यमान हो, देव मध्य शोभा अधिकाई ।।३।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य्प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पदमवर्णां तामिहोप हवये श्रियम् ।।४।।

भाष्यानुवाद - जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मंद हास्यायुक्ता है, जो चारों ओर सुवर्ण से ओत प्रोत है एवं दया से आद्र ह्रदय वाली देदीप्यमान हैं। स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नाना प्रकार मनोरथों को पूर्ण करने वाली - कमल के ऊपर विराजमान ,कमल के सद्रश गृह मैं निवास करने वाली , संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूँ।

इन्दव छन्द

मन वाणी से परे अप्रबल, अवर्णनीय महिमा है तुम्हारी ।
मन्द हास्य मुस्कान भरी वर, स्वर्ण आभुषण सजे है भारी ।।
नाना मनोर्थ सब मानव के, कमलासन हो पूरण हारी ।
"रामप्रकाश" नित वन्दित है हरि, वास युगल करो कुटि हमारी ।।४।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुस्टामुदराम् ।
तां पद्मिनीमी शरणं प्रपधे अलक्ष्मीर्मे नश्यतां तवां वृणे ।।५।।

भाष्यानुवाद - चंद्रमा के समान प्रकाश वाली प्राकृत कान्तिवाली , अपनी कीर्ति से देदीप्यमान , स्वर्ग लोक में इन्द्रादि देवों से पूजित , अति दान शीला ,कमल के मध्य रहने वाली ,सभी की रक्षा करने वाली , अश्रयदाती ,जगद्विख्यात है ,उन महालक्ष्मी का मै आश्रय लेता हूँ ।

इन्दव छन्द

चन्द्रकला सम दीप्त है तन, कीर्ति रु कान्ति से हो हरषानी ।
नाकपति युत सब सुर ध्यावत, दानशीला हो वरद सुहानी ।।
कमल मुखी कमलासन राजत, रक्षक हो त्रय लोक कहानी ।
आश्रय दायिन ख्याति पूर्ण, "रामप्रकाश" की मात भवानी ।।५।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

ॐ आदित्यवर्णे तप्सोअधि जातो वनस्पतिस्तव व्रक्षोथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्य अलक्ष्मीः ।।६।।

भाष्यानुवाद - हे सूर्य के समान कान्ति वाली देवी , आपके तेजोमय प्रकाश के आशिर्वाद से बिना पुष्प के फल देने वाला एक बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ। उस कल्प (बिल्व) वृक्ष का फल मेरे बाह्य और आभ्यन्तर की दरिद्रता को नष्ट करें।

इन्दव छन्द

चँचला तीन हि लोक विहारिणि, चौदह लोक है राज तुम्हारा ।
तुम हि अपरा परा प्रकृति रु, माया अविद्यादि खेल अपारा ।।
तेरी तेजो मय आशिश के बल, कल्पवृक्ष सुरधेनु विचारा ।
"रामप्रकाश" हो पूण्य स्वरूप में, ध्यावत पावत जो फल चारा ।।६।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

उपैतु मां देवसखः किर्तिक्ष्च मणिना सह ।
प्रदुभुर्तोँस्मि रास्ट्रेअस्मिन् कीर्तिंमृद्विमं ददातु मे ।।७।।

भाष्यानुवाद - हे लक्ष्मी ! देवसखा अर्थात श्री महादेव के मित्र इन्द्र ,कुबेरादि देवतओं की तेजो मय अग्निदेव की मैं उपासना करूँ एवं मणि (चिंतामणि) के साथ या कुबेर के मित्र मणिभद्र एवँ रत्नों के साथ ,कीर्ति कुबेर की कोश-शाला का यश मुझे प्राप्त हो । मैं इस संसार में उत्पन्न हुआ हूँ , अतः हे लक्ष्मी आप यश-कीर्ति मय समस्त ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

इन्दव छन्द

सुराधिप है सब देव सखा शिव, देव कोषाध्यक्ष दास तुम्हारे ।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि आदिक, तेरी ही आशिश वास विचारे ।।
जन्म लियो जग भीतर में अब, हरि आप बिना कौन सहारो ।
"रामप्रकाश" भण्डार भरो शुभ, दारिद दोष मिटा कर सारो ।।७।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठमलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद में गृहात् ।।८।।

भाष्यानुवाद - हे महालक्ष्मी ! भूख एवं प्यास रूप मल को धारण करने वाली आप की ज्येष्ठ भगिनी दरिद्रता को मेरे से सर्वथा दूर करो । हे लक्ष्मी माता ! आप मेरे घर से अनैश्वर्य (दरिद्रता) तथा धन वृद्धि के प्रतिबन्धक समस्त विघ्नों को दूर करें।

इन्दव छन्द

कर जोड़ यही वर माँगत हूँ घर, भगनी ज्येष्ठा एक तुम्हारी ।
दरिद्रा नामक दूर रखो नित, आप रहो यह आस हमारी ।।
धन प्रतिबन्धक शक्ति सबे वह, दूर करो यह अर्ज गुजारी ।
"रामप्रकाश" वन्दे नित करवद्ध, साधक गुण सुख हेतु उचारी ।।८।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यापुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप हवये श्रियम् ।।९।।

भाष्यानुवाद - सुगन्धित पुष्प के समर्पण करने से प्राप्त करने योग्य जो किसी तान्त्रिकों से भी न दबने योग्य और धन धान्य से सर्वदा पूर्ण गायें ,अश्वादि पशुओं की समृद्धि देने वाली , समस्त प्राणियों की स्वामिनी संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर परिवार मैं सादर आमन्त्रित करके बुलाता हूँ ।

इन्दव छन्द

सुगन्धित पुष्प से प्रसन्न होवत, तान्त्रिक टोना दूर निवारे ।
धन धान्य सुख ऐश्वर्य दायक, चल अचल सम्पति के सारे ।।
समस्त प्राणी को देवत हो सब, पावत है सोई कर्म उचारे ।
"रामप्रकाश' प्रणाम करे नित, दारिद दोष कर दूर हमारे ।।९।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशुनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।१०।।

भाष्यानुवाद - हे लक्ष्मी ! मैं आपके प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प ,वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप में (दुग्ध -दधि आदि चल-अचल अन्नों के रूप भक्ष्य ,भोज्य ,चोष्य , चतुर्विध भोज्य पदार्थ) सभी पदार्थो को प्राप्त करूँ। सम्पति और यश मुझ मे आश्रय ले अर्थात मैं लक्ष्मीवान एवं कीर्तिमान बनूँ।

इन्दव छन्द

हे कमला जलजासन हो तुम, अतुल्य प्रभाव रु सँकल्प वारी ।
दूध दही रु अन्न धन दायक, चल अचल सब देवनहारी ।।
चतुर्विधि दे भोज्य रु भक्ष्य को, बल रु बुद्धि बढावत सारी ।
यश कीर्ति गुण देहु सदा वर, "रामप्रकाश" बहु महिमा तुम्हारी ।।१०।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।

श्रियम वास्य मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।११।।

भाष्यानुवाद - "कर्दम " ऋषि के तपोबल सें प्रभु कृपा से लक्ष्मी की रूपक देवहुति और स्वयँ आप ईश्वर साकार रूप -पुत्र कपिल आकर साँख्य योग प्रचारक माता को ज्ञान दिया । हे तपोमूर्ति कर्दम ! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करें ,केवल इतनी ही प्रार्थना नहि अपितु कमल की माला धारण करने वाली संपूर्ण संसार की माता महामाया लक्ष्मी को मेरे घर में निवास कराओ ।

इन्दव छन्द

कर्दम महर्षि कियो तप प्रबल, देवहूति घर लक्ष्मी आई ।
प्रभु प्रसाद आप हरि गृह में, कपिल मुनि स्वयँ आये तांई ।।
साँख्य ज्ञान प्रचार कियो जग, कृपा करो हे देव गोसांई ।
वरदायक सब कृपादृष्टि कर, "रामप्रकाश" सुख सम्पति दाई ।।११।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस् मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वास्य मे कुले ।।१२।।

भाष्यानुवाद - जिस प्रकार कर्दम ली संतति 'ख्याति 'से लक्ष्मी अवतरित हुई , उसी प्रकार कल्पान्तर में भी समुन्द्र मंथन द्वारा चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ है । इसी अभिप्राय से कहा जा सकता है कि वरुण देवता स्निग्ध अर्थात मनोहर पदार्थो को उत्पन्न करें । पदार्थो की सुंदरता ही लक्ष्मी के आनंद, कर्दम ,चिक्लीत और श्रित -ये चार पुत्र हैं । इनमे 'चिक्लीत ' से प्रार्थना की गई है कि हे चिक्लीत नामक लक्ष्मी पुत्र ! तुम मेरे गृह में निवास करो । केवल तुम ही नहीं ,अपितु दिव्यगुण युक्त सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

इन्दव छन्द

मानस पुत्र चार किये सुत, दिये सँस्कार भये सुखदाई ।
श्री सम्प्रदाय उज्वल कर प्रकट, कर्म धर्म सब माग दिखाई ।।
दिव्य गुण युत वास करो गृह, भरो भण्डार सुख ऐश्वर्य लाई ।
"रामप्रकाश" गावे गुण नित ही, कृपा करो श्री पद्मा आई ।।१२।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

आर्द्रॉ पुष्करिणीं पुष्टिं पिंङग्लां पदमालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो म आ वह ।।१३।।

भाष्यानुवाद - हे अग्निदेव ! तुम मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात दिग्गजों (हाथियों) के सूंडग्रा से अभिषिच्यमाना (आद्र शरीर वाली) पुष्टि को देने वाली पुष्टिरूपा , रक्त और पीतवर्णवाली ,कमल कि माला धारण करने वाली पद्मावती ,संसार को प्रकाशित करने वाली प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ ।

इन्दव छन्द

स्वर्ण मयी सब ऐश्वर्य अनुपम, हस्ति सूण्डाग्र गन्ध सुहाई ।
पद्मा पद्मासन पद्ममाल युत, भरो अखूट पद्म निधि आई ।।
विश्व विहारिणि वैभव दायक, बाल विनय की अरज लगाई ।
कर्म फल को देवत हो तुम, रँक भूपति सब सेवत आई ।।१३।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

आद्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो म आ वह ।।१४।।

भाष्यानुवाद - हे अग्निदेव ! तुम मेरे भाष्यानुवाद में भक्तों पर सदा दयाद्रर्चित, समस्त भुवन जिसकी याचना करते हैं, दुष्टों को दंड देने वाली, यष्टिवत् अवलंबनीया (सारांश यह हें कि, 'जिस प्रकार लकड़ी के बिना असमर्थ पुरुष चल नहीं सकता,उसी प्रकार लक्ष्मी के बिना संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता), सुन्दर वर्ण एवं सुवर्ण कि माला वाली सूर्यरूपा (अर्थात जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत का पालन -पोषण करता है , उसी प्रकार लक्ष्मी ,ज्ञान और धन के द्वारा संसार का पालन -पोषण करती है)अतः प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

इन्दव छन्द

अग्नि रु स्वर्ण मय देह सुहावन, रवि समान है तेज तुम्हारो ।
रवि जिमि पालक जग की हो तुम, ज्ञान धन बल ऐश्वर्य सारो ।।
कनक माल गल कमल गटा वर, वास इच्छा वत होय सुधारो ।
"रामप्रकाश" करे पद वन्दन, हरि प्रिया हित करो हमारो ।।१४।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योअश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।१५।।

भाष्यानुवाद - हे अग्निदेव ! आप उन जगद्विख्यात लक्ष्मी को स्थाई वास दो कि मेरे आवास को छोड़कर अन्यत्र न जाने वाली हों कि श्री लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण , उत्तम ऐश्वर्य ,गौ , दास-दासी ,घोड़े और पुत्र -पौत्रादि सहित स्थिर लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

इन्दव छन्द

अग्नि इन्द्र यम रवि शशि सब, स्थाई वास लक्ष्मी पद धारे ।
विश्व विख्यात श्री मो घर पाव ही, शुभ प्रेरक हो आप हमारे ।।
दास दासी ऐश्वर्यशाली कर, स्थिर पशु धन वेद विचारे ।
हरि युत कमला वास करो घर, "रामप्रकाश' यह अरज पुकारे ।।१५।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्च च श्रीकामः सततं जपेत् ।।१६।।

भाष्यानुवाद - जो मनुष्य लक्ष्मी कि कामना करता हो ,वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौघृत का हवन और साथ ही श्रीसूक्त कि पंद्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करें।

इन्दव छन्द

जो जन लक्ष्मी चाहत है घर, पावन तन मन उज्वल लावे ।
दतचित्त आसन बैठ एकान्त में, पाठ करे नित चित लगावे ।।
कनक धारा प्रभाव प्रकाशित, श्रीसुक्त युत पद्मा आवे ।
श्री पति युत वन्दन है नित, "रामप्रकाश" वन्दन चित लावे ।।१६।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥१७।।

भाष्यानुवाद - हे लक्ष्मी देवी! आप कमलमुखी, कमल पुष्प पर विराजमान, कमल-दल के समान नेत्रों वाली, कमल पुष्पों को पसंद करने वाली हैं। सृष्टि के सभी जीव आपकी कृपा की कामना करते हैं। आप सबको मनोनुकूल फल देने वाली हैं। हे देवी! आपके चरण-कमल सदैव मेरे हृदय में स्थित हों ।

इन्दव छन्द

पद्म मुखी सरोज विराजित, पँकज चक्षु कँज चाहन चाली ।
अम्बुज चरण सुहावन सुन्दर , जीव चहे सब कृपा खुशाली ।।
मन इच्छा फल देवत हो शुभ, चरणाम्बुज मम हृदय पाली ।
महालक्ष्मी नित नमो विष्णु युत, "रामप्रकाश" सुख सम्पति वाली ।।१७।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसिं पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८।।

भाष्यानुवाद - हे लक्ष्मी देवी! आपका श्रीमुख, ऊरु भाग, नेत्र आदि कमल के समान हैं। आपकी उत्पत्ति कमल से हुई है। हे कमलनयनी! मैं आपका स्मरण करता हूँ, आप मुझ पर कृपा करें।

इन्दव छन्द

श्री मुख ऊरु वर चक्षु सुहावन, पुष्कर समान मन भावन हारे ।
अम्भोज जन्मा हो कमलासन, ध्यान धरूँ नित नाम तुम्हारे ।।
कृपा करो जग मात तुम्हे, सब ध्यावत है नित शाम सवारे ।
विष्णु पत्नी हो तुम सुख दायक, "रामप्रकाश" अब आओ हमारे ।।१८।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुष तां देवि सर्वांकामांश्च देहि मे ॥१९।।

भाष्यानुवाद - हे देवी! अश्व, गौ, धन आदि देने में आप समर्थ हैं। आप मुझे धन प्रदान करें। हे माता! मेरी सभी कामनाओं को आप पूर्ण करें।

इन्दव छन्द

धन सम्पति चल अचल हो देवत, अश्व पशु गौ आदि भण्डारा ।
समर्थ आप सकल गुण पूरण, बुद्धि बल देवत हो गुण सारा ।।
इच्छा पूरक हो मन वाँच्छित, काम कामना रूप अपारा ।
"रामप्रकाश" चाहे फल शूक्रत, मनोर्थ पूरण करो हमारा ।।१९।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मंतं करोतु मे ॥२०।।

भाष्यानुवाद - हे देवी! आप सृष्टि के समस्त जीवों की माता हैं। आप मुझे पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, हाथी-घोड़े, गौ, बैल, रथ आदि प्रदान करें। आप मुझे दीर्घ-आयुष्य बनाएँ।

इन्दव छन्द

जगत मात हो पालनहार तुम, विधि हरि हर घर वास तुम्हारा ।
सकल सृष्टि में रमणहार हो, फल शुभाशुभ देवत सारा ।।
पुत्र पौत्र धन धान्य अक्षय कर, हस्ति रथ गौ पशु अपारा ।
"रामप्रकाश' देवो मन वाँछित, लोक परलोक में वास तुम्हारा ।।२०।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

धनमाग्नि धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसु ।
धन मिंद्रो बृहस्पतिर्वरुणां धनमस्तु मे ॥२१।।

भाष्यानुवाद - हे लक्ष्मी! आप मुझे अग्नि, धन, वायु, सूर्य, जल, बृहस्पति, वरुण आदि की कृपा द्वारा धन की प्राप्ति कराएँ।

इन्दव छन्द

पद्मासनी हे पद्ममुखी तुम, देव मण्डल सभी साथ तुम्हारे ।
अग्नि वायु जल वरुण गुरू वर, धन भास्कर सब दया विचारे ।।
आज्ञाकारिता तेरी हो पूरण, देव प्रसाद सब देवन हारे ।
आयुष्मान करो सब भक्तन, जीव सभी मन चाहत प्यारे ।।२१।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

वैनतेय सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२।।

भाष्यानुवाद - हे वैनतेय पुत्र गरुड़! वृत्रासुर के वधकर्ता, इंद्र, आदि समस्त देव जो अमृत पीने वाले हैं, मुझे अमृत युक्त धन प्रदान करें।

इन्दव छन्द

वृतासुर हन्तक इन्द्र चन्द्र सुर, गरुड़ रु हनुमत आदि हो सारे ।

अमृत पान के धारक पाचक, अमृत युत धन देहु हमारे ।।
कुल सुख सम्पति दे लक्ष्मी वर, वन्दन निशिदिन है इकसारे ।
"रामप्रकाश" श्री सुक्त कहै यह, वेद स्तुति से वारम वारे ।।२२।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां सूक्त जापिनाम् ॥२३।।

भाष्यानुवाद - इस सूक्त का पाठ करने वाले की क्रोध, मत्सर, लोभ व अन्य अशुभ कर्मों में वृत्ति नहीं रहती, वे सत्कर्म की ओर प्रेरित होते हैं।

इन्दव छन्द

विश्व व्यापिनी हो विश्व मोहिनी, पाठ तुम्हारो है सुखदाई ।
श्री सुक्त को पाठ करे नित, क्रोध मत्सर मद दूर हटाई ।।
अशुभ पृवृति दूर निवारत, सत पृवृति सद बुद्धि प्रदाई ।
"रामप्रकाश" प्रेरित शुभ कारज, हरि सहायक होय सदाई ।।२३।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गंधमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम् ॥२४।।

भाष्यानुवाद - हे त्रिभुवनेश्वरी! हे कमलनिवासिनी! आप हाथ में कमल धारण किए रहती हैं। श्वेत, स्वच्छ वस्त्र, चंदन व माला से युक्त हे विष्णुप्रिया देवी! आप सबके मन की जानने वाली हैं। आप मुझ दीन पर कृपा करें।

इन्दव छन्द

कमल निवासिनी कमले हो तुम, वारिज हस्त में धारण हारी ।
स्वच्छ वसन रु स्वेत है चन्दन, भाल मे माल गले मोतिन वारी ।।
विष्णु प्रिया देवी मन भावन, अन्तर्यामी मन जानत सारी ।
मनोर्थ पूरण हो जन मानस, "रामप्रकाश" है वन्दन हमारी ।।२४।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम ॥२५।।

भाष्यानुवाद - भगवान विष्णु की प्रिय पत्नी, माधवप्रिया, भगवान अच्युत की प्रेयसी, क्षमा की मूर्ति, लक्ष्मी देवी मैं आपको बारंबार नमन करता हूँ।

इन्दव छन्द

माधव प्रिया रु विष्णु पति बल, अच्युत प्रेयसी शान्ति सुख वारी ।
क्षमा की मूरति लक्ष्मी कमला तुम, द्युति सुषमा हो प्रभा तुम्हारी ।।
ज्योति स्वरूपा योग की साधक, नमन करे सब नर अरु नारी ।
"रामप्रकाश" नमो पद त्र वन्दन, हरदम वार हजार हमारी ।।२५।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२६।।

भाष्यानुवाद - हम महादेवी लक्ष्मी का स्मरण करते हैं। विष्णुपत्नी लक्ष्मी हम पर कृपा करें। वह देवी हमारे समस्त मन वच काय को सत्कार्यों की ओर प्रवृत्त करें।

इन्दव छन्द

महादेवी लक्ष्मी कमलासनि, विष्णु प्रियांशु कृपाल सुखारी ।
शुभ कार्य में पृवृति देवहु, बुद्धि शुद्धि सुख कारक वारी ।।

लोक परलोक पूण्य दे कीर्ति, उज्वल ज्ञान दे मति हमारी।
“रामप्रकाश” मन कर्म वच ध्यावत, वन्दन करूँ नित वार हजारी।।२६।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

चंद्रप्रभां लक्ष्मीमेशानीं सूर्याभांलक्ष्मीमेश्वरीम्।
चंद्र सूर्याग्निसंकाशां श्रिय देवीमुपास्महे ॥२७।।

भाष्यानुवाद - जो चंद्रमा की आभा के समान शीतल और सूर्य के समान परम तेजोमय हैं उन परमेश्वरी लक्ष्मीजी की हम आराधना करते हैं।

इन्दव छन्द

शशि समान की उज्वल क्रांति है, दिनकर के सम तेज तुम्हारी।
तेजो मय हो ज्योति स्वरुपिणी, श्री परमेश्वरी रमा सुर वारी।।
चपला सिन्धुजा विष्णु वल्लभा हो, भार्गवी मन मोहनी प्यारी।
“रामप्रकाश” हे माता है वन्दन, सब के मन फल पूरणहारी।।२७।।

श्री लक्ष्मीसूक्तम् पाठ

श्री वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाभिधाच्छ्रोभमानं महीयते।
धान्य धनं पशु बहु पुत्रलाभम् सत्संवत्सरं दीर्घमायुः ॥२८।।

भाष्यानुवाद - इस लक्ष्मी सूक्त का पाठ करने से व्यक्ति श्री, तेज, आयु, स्वास्थ्य से युक्त होकर शोभायमान रहता है। वह धन-धान्य व पशु धन सम्पन्न, पुत्रवान होकर दीर्घायु होता है।

इन्दव छन्द

लक्ष्मी सुक्त का पाठ करे जन नूतन, तेज आयु गुण स्वास्थ्य पावे।
ऐश्वर्य पूर्ण श्री बढे नित, धन धान्य पशु सम्पत्ति बढावे।।
सुत वित सम्पन्न लक्ष्मीवान हो, आयु बढे गुण शील सुहावे।
“रामप्रकाश” हो प्रयोजन पूरण, ऋग्वेद यह वाणी सुनावे।।२८।।

फलश्रुति~~

देव भाष के जो जन पाठक, नित्य नियम युत पाठ करे।
पद्य रु सँस्कृत जो नही जानत, भाष्यानुवाद वह पाठ वरे।।
भाषानुवाद पढे जन कवि गण, स्नान ध्यान युत नियम चरे।
ऐश्वर्यवान के भाग्य जगे वर, “रामप्रकाश” फल श्रुति खरे।।२९।।

॥ इति श्रीलक्ष्मी सूक्तम् संपूर्णम् ॥

ओ३म्

श्री विष्णु सहस्त्र नाम

विष्णु सहस्रनाम जीवन की सभी समस्याओं के लिए एक बेहद प्रभावी उपाय है। ये एक चमत्कारिक उपाय है अगर इसे पूरी श्रद्धा और विशवास के साथ नाम का जप किया जाए तो मन में श्रद्धा आती है । विष्णु के सहस्र नामों की सूची ~ यह विष्णु के एक हजार नामों की सूची है -

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः

सवैया छन्द

पद्म पुराण रु मत्स्य पुराण में, उपलब्ध विविध रूप से छान्यो ।
महाभारत अनुशासन पर्व में, शतक उन्चास अध्याय से जान्यो ।।
कुरूक्षेत्र की बाण शैय्या पर, भीष्म पितामह पाठ बखान्यो ।
युधिष्ठिर को उपदेश दियो यह, "रामप्रकाश" कर पद्य में आन्यो ।।१।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

ॐ विश्वं विष्णुः वषट्कारो भूत - भव्य - भवत - प्रभुः ।
भूत- कृत भूत - भृत भावो भूतात्मा भूतभावनः ।।१।।
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमं गतिः ।
अव्ययः पुरुष साक्षी क्षेत्रज्ञो अक्षर एव च ।।२।।

शब्दार्थ~पद्यांश

१. विश्वम्:= जो स्वयं में ब्रह्मांड स्वरूप से वैराट हो, जो हर जगह विद्यमान हो ।
२. विष्णुः= जो हर जगह व्यापक रूप से विद्यमान हो ।
३. वषट्कारः= जिसका यज्ञ और आहुतियों के समय आवाहन किया जाता हो।
४. भूत भव्य भवत्प्रभुः =भूत, वर्तमान और भविष्य -त्रियकाल का स्वामी ।
५. भूतकृत्:= सब जीवों का निर्माता - चिदाभास, चेतन।
६. भूतभृत्:= सब जीवों का पालन कर्ता-विश्वम्भर ।
७. भावः =भावना मयी ।
८. भूतात्मा: =सब जीवों का परमात्मा -कुटस्थ।
९. भूतभावनः=सब जीवों उत्पत्ति और पालना का आधार ।
१०. पूतात्मा: =अत्यंत पवित्र सुगंधियों वाला ।
११. परमात्मा:= परम आत्मा -विशालकाय।
१२. मुक्तानां परमा गतिः= सभी आत्माओं के लिए पहुँचने वाला अंतिम लक्ष्य -प्रमा ।
१३. अव्ययः= अविनाशी, अखण्ड, न्युनता रहित ।
१४. पुरुषः= पुरुषोत्तम, पौरुषत्व का स्वामी ।
१५. साक्षी:= बिना किसी व्यवधान के अपने स्वरूप - भूत ज्ञान से सब कुछ देखने वाला दृष्टा ।
१६. क्षेत्रज्ञः= क्षेत्र अर्थात शरीर; शरीर को जानने वाला साक्षी चेतन्य।
१७. अक्षरः= कभी क्षीण न होने वाला, अक्षय ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

विश्वम् विष्णु वषट्कार भूत कृत, भूत भव्य भवत्प्रभु सोई ।
भूतकृत भूतभृत भूतात्म भाव, भूत भावन पूतात्मा जोई ।।
परमात्मा मुक्तात्मा परमा गति, अव्यय पुरुष साक्षी घन लोई ।
"रामप्रकाश" विष्णु सहस्र जपत, पाप रु ताप कटे दुर्मति दोई ।।२।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

योगो योग - विदां नेता प्रधान - पुरुषेश्वरः ।
नारसिंह - वपुः श्रीमान केशवः पुरुषोत्तमः ।।३।।
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुः भूतादिः निधिः अव्ययः ।
संभवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुः ईश्वरः ।।४।।

शब्दार्थ~पद्यांश

१८. योगः= जिसे योग द्वारा पाया जा सके , सब मे मिला हुआ।
१९. योगविदां := योग को जानने वाले योगवेत्ताओं का नेता ,योग में प्रवीण ।
२०. प्रधान पुरुषेश्वरः =प्रधान अर्थात प्रकृति; पुरुष अर्थात जीव; इन दोनों का स्वामी परब्रह्म ।
२१. नारसिंहवपुः =नर और सिंह दोनों के अवयव जिसमे दिखाई दें ऐसे शरीर वाला नृसिंह ।
२२. श्रीमान् :=जिसके वक्ष स्थल में सदा श्री ऐश्वर्य निवास करता हैं ,महत्व वाला ।
२३. केशवः= जो काले ,घुँघराले ,चिकने सुन्दर केशों वाला हों ।
२४. पुरुषोत्तमः =पुरुषों में उत्तम सर्व गुण सम्पन्न पौरुषत्व युक्त ।
२५. सर्वः= सर्वदा -त्रिकालज्ञ - सब कुछ जानने वाला ।
२६. शर्वः= विनाशकारी शक्ति वाला या पवित्र ।
२७. शिवः= सदा शुद्ध ,कल्याणकारी ,कल्याण स्वरूप ।
२८. स्थाणुः = स्थिर सत्य , जड स्वरूप में व्यापक ।
२९. भूतादिः= पंच तत्वों के आधार -अधिष्ठान।
३०. निधिरव्ययः =अविनाशी -अक्षय निधि ,अव्यय ।
३१. सम्भवः =अपनी इच्छा से उत्पन्न होने वाले ।
३२. भावनः= समस्त भोक्ताओं के फलों को उत्पन्न करने वाले ।
३३. भर्ता :=समस्त संसार का पालन करने वाले ।
३४. प्रभवः =पंच महाभूतों को उत्पन्न करने वाले ।
३५. प्रभुः =सर्वशक्तिमान प्रभुत्व सम्पन्न भगवान् ।
३६. ईश्वरः= जो बिना किसी की सहायता के सब कुछ भी करने मे सामर्थ्यवान ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

क्षेत्रज्ञ अक्षर योग योगविद, प्रधान पुरुषेश्वर सर्वस्व सोई ।
शर्व शिव स्थाणु भूतादिक, निधि अव्यय सम्भव होई ।।
भावन भर्ता प्रभव प्रभु सो, ऐश्वर्यवान सो ईश्वर जोई ।
"रामप्रकाश" जप विष्णु नाम सत, भव को भय रहे ना कोई ।।३।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

स्वयंभूः शम्भुः आदित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादि - निधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ।।५।।
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभो - अमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ।।६।।

शब्दार्थ~पद्यांश

३७. स्वयम्भूः= जो सबके ऊपर है और स्वयं ब्रह्मविद्-ब्रह्म स्वरूप हैं ।
३८. शम्भुः= भक्तों के लिए सुख मय परमानन्द भावना की उत्पत्ति करने वाले हैं ।
३९. आदित्यः= अदिति के पुत्र (वामन) या सूर्य ।
४०. पुष्कराक्षः= जिनके नेत्र पुष्कर (कमल) समान - सुन्दर हैं ।
४१. महास्वनः =अति महान उच्च स्वर या घोष वाले ।
४२. अनादिः=निधनः= जो आदि और अन्त (निधन) दोनों से रहित हैं ।

४३. धाता:=शेषनाग के रूप में विश्व को धारण करने वाले -सर्वाधार ।
४४. विधाता :=कर्म और उसके फलों की रचना करने वाले ।
४५. धातुरुत्तमः=अनन्तादि अथवा सब उतम गुणों को धारण करने वाले हैं ।
४६. अप्रमेयः=जिन्हे जाना न जा सके ,अज्ञेय ।
४७. हृषीकेशः= इन्द्रियों के स्वामी साक्षी ।
४८. पद्मनाभः= जिसकी नाभि में जगत का कारण रूप पद्म स्थित है ।
४९. अमरप्रभुः= देवता जो अमर हैं , उनके स्वामी ।
५०. विश्वकर्मा:= विश्व जिसका कर्म अर्थात क्रिया है अर्थात् विश्व की विद्याओं के उपादान ।
५१. मनुः:= मनन करने वाले या मनन करने योग्य।
५२. त्वष्टा:= संहार के समय सब प्राणियों को क्षीण करने वाले ।
५३. स्थविष्ठः= अतिशय स्थूल स्वरूप, वैराट - विशालकाय ।
५४. स्थविरो ध्रुवः= प्राचीन एवं स्थिर रहनेवाला ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

स्वयम्भुव शम्भु नारसिंह वपु, आदित्य पुष्कराक्ष जानो ।
महस्वन अनादि धाता जु , विधाता धातु अप्रमेय मानो ।।
हृषिकेश पद्मनाभ अमर प्रभु, विश्वकर्मा मनु त्वष्टा गानो ।
"रामप्रकाश" भज विष्णु गायन, भव बाधा बन्धन को हानो ।।४।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतः त्रिककुब - धाम पवित्रं मंगलं परं ।।७।।
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ।।८।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५५. अग्राह्यः= जो ज्ञानेंद्रियों एवँ कर्मेन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता ।
५६. शाश्वतः= जो सब काल में सनातन सत्य है ।
५७. कृष्णः= जिसका वर्ण श्याम -आकाश के समान नील -नीलाम्बर है ।
५८. लोहिताक्षः जिनके नेत्र लाल है ।
५९. प्रतर्दनः= जो प्रलयकाल में प्राणियों का संहार करने की शक्ति वाला अमोघ है।
६०. प्रभूतस्:= जो ज्ञान, ऐश्वर्य आदि गुणों से प्रभुत्व संपन्न हैं ।
६१. त्रिकाकुब्धाम:= ऊपर, नीचे और मध्य तीनो दिशाओं के धाम मे व्याप्त हैं ।
६२. पवित्रम्:= जो पवित्र को भी पवित्रतम करनेवाला ।
६३. मंगलं:=परम् जो सबसे उत्तम है और समस्त अशुभों को दूर करता मँगल स्वरूप है ।
६४. ईशानः= सर्वभूतों के नियन्ता ।
६५. प्राणदः=प्राणो को शक्ति देने वाले ।
६६. प्राणः= जो सदा वायु स्वरूप विश्व की चेतनायुक्त जीवित है ।
६७. ज्येष्ठः= सबसे अधिक वृद्ध या या बड़ा-वृहद है ।
६८. श्रेष्ठः= सबसे प्रशंसनीय अत्युत्तम है।
६९. प्रजापतिः=ईश्वररूप से सब प्रजाओं के पति ।
७०. हिरण्यगर्भः= ब्रह्माण्डरूप अंडे के भीतर शूक्ष्मत: व्याप्त होने वाले ।
७१. भूगर्भः= पृथ्वी जिनके गर्भ में स्थित है ।
७२. माधवः= माँ अर्थात लक्ष्मी के धव अर्थात पति ।
७३. मधुसूदनः= मधु नामक दैत्य को मारने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

स्थविष्ट स्थविरो ध्रुव अग्राह्य, शाश्वत कृष्ण लोहिताक्ष वारो ।
प्रतदन प्रभूत त्रिकाकु पवित्रतम, मँगल ईशान प्राणद प्यारो ।।
प्राण ज्येष्ठ रु श्रेष्ठ प्रजापति, प्रजापति हिरण्यगर्भ न्यारो ।
पाप रु ताप कटे भव बन्धन, "रामप्रकाश" विष्णु जप सारो ।।५।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिः आत्मवान ।।९।।
सुरेशः शरणं शर्म विश्व - रेताः प्रजा - भवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ।।१०।।

शब्दार्थ~पद्यांश

७४. ईश्वरः = सर्वशक्तिमान - ऐश्वर्यवान ।
७५. विक्रमः= शूरवीर-शक्तिशाली ।
७६. धन्वी:= धनुष धारण करने वाला -धनुर्धर ।
७७. मेधावी:= बहुत से ग्रन्थों को धारण करने के सामर्थ्य वाला-बुद्ध स्वरूप ।
७८. विक्रमः= जगत को लांघ जाने वाला या गरुड़ पक्षी द्वारा गमन करने वाला ।
७९. क्रमः= क्रमण (लांघना, दौड़ना) करने वाला या क्रम (विस्तार) वाला ।
८०. अनुत्तमः= जिससे उत्तम और कोई न हो-अति उतम, अत्युत्तम ।
८१. दुराधर्षः= जो दैत्यादिकों के उत्पात से दबाया न जा सके ।
८२. कृतज्ञः= प्राणियों के किये हुए पाप पुण्यों को जानने वाले अनुगृहीत ।
८३. कृतिः= सर्वात्मक अन्तर्यामी ।
८४. आत्मवान्:= अपनी ही महिमा में स्थिर होने वाले ।
८५. सुरेशः= देवताओं के ईश्वर अधिपति ।
८६. शरणम्:= शरणागत दीनों का दुःख दूर करने वाले ।
८७. शर्म:= परमानन्द ब्रह्म स्वरूप ।
८८. विश्वरेताः= विश्व के कारण स्वरूप ।
८९. प्रजाभवः= जिनसे सम्पूर्ण प्रजा मय (ब्रह्मण्ड) जगत उत्पन्न होता है ।
९०. अहः= प्रकाश स्वरूप सूर्य है ।
९१. संवत्सरः= काल स्वरूप से समय स्थित हुए ।
९२. व्यालः= व्याल (सर्प) के समान ग्रहण करने में न आ सकने वाले ।
९३. प्रत्ययः= प्रतीति रूप होने के कारण प्रसिद्धि , ख्याति वान।
९४. सर्वदर्शनः= सर्वरूप होने के कारण सभी के नेत्र की ज्योति हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

ईश्वर विक्रमी धन्वी मेधावी, विक्रम क्रम अनुत्तम प्यारो ।
दुराधर्ष कृतज्ञ कृति आत्मवान, सुरेश शरण शर्म सुधारो ।।
विश्वरेता प्रजा भव सम्वत्सर, अह व्याल प्रत्यय के वारो ।
विष्णु नाम जप "रामप्रकाश" को, भव से पावत पार किनारो ।।६।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिः अच्युतः ।
वृषाकपिः अमेयात्मा सर्व - योग - विनिःसृतः ।।११।।
वसुः वसुमनाः सत्यः समात्मा संमितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ।।१२।।

रुद्रो बहु - शिरा बभ्रुः विश्वयोनिः शुचि - श्रवाः ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुः वरारोहो महातपाः ।।१३।।

शब्दार्थ ~ पद्यांश

९५. अजः= अजन्मा है।
९६. सर्वेश्वरः= ईश्वरों का भी ईश्वर -सर्वाधिपति है ।
९७. सिद्धः= नित्य सिद्ध स्वरूप है ।
९८. सिद्धिः= सबसे श्रेष्ठ सिद्धियों का स्वामी है।
९९. सर्वादिः= सर्व भूतों के आदि कारण ।
१००. अच्युतः= अपनी स्वरूप शक्ति से च्युत (पतित) न होने वाले ।
१०१. वृषाकपिः= वृष (धर्म) रूप और कपि (वराह) रूप ।
१०२. अमेयात्मा:= जिनके आत्मा का देश काल वस्तु से माप - परिच्छेद न किया जा सके ।
१०३. सर्वयोगविनिसृतः= सम्पूर्ण मायिक - भौतिकी संबंधों से रहित ।
१०४. वसुः =जो सब भूतों में बसते हैं और जिनमे सब भूत बसते हैं ।
१०५. वसुमनाः= जिनका मन प्रशस्त (श्रेष्ठ) है ।
१०६. सत्यः= सत्य स्वरूप ।
१०७. समात्मा:= जो राग द्वेषादि से दूर सम हैं ।
१०८. सम्मितः= समस्त पदार्थों से परिच्छिन्न ।
१०९. समः= सदा समस्त विकारों से रहित , संयम ।
११०. अमोघः= जो स्मरण किये जाने पर सदा फल देते हैं ।
१११. पुण्डरीकाक्षः= हृदयस्थ कमल में व्याप्त हैं ।
११२. वृषकर्मा:= जिनके कर्म धर्मरूप हैं ।
११३. वृषाकृतिः= जिन्होंने धर्म के लिए ही शरीर धारण किया है।
११४. रुद्रः= दुःख को दूर भगाने वाले , जो दुष्टों को रुलाने वाले ।
११५. बहुशिरः= बहुत से सिरों -शीश वाला ।
११६. बभ्रुः लोकों का भरण-पोषण करने वाला ।
११७. विश्वयोनिः= विश्व के कारण स्वरूप प्राण ।
११८. शुचिश्रवाः= जिनके नाम सुनने योग्य पावन हैं ।
११९. अमृतः= जिनका मृत अर्थात मरण-अन्त नहीं होता ।
१२०. शाश्वतः= स्थाणुः शाश्वत (नित्य) और स्थाणु (स्थिर) है ।
१२१. वरारोहः= जिनका आरोह (गोद) वर (श्रेष्ठ) है ।
१२२. महातपः= जिनका तप महान है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

सर्व दर्शन अज सर्वेश्वर सिद्ध, सिद्धि सर्वादि अच्युत विचारो ।
वृषाकपि अयमात्मा ब्रह्म है, सर्व योग विनिसृत वसुमन वारो ।।
वसुमना रु सत्य समात्मा, सम्मित वसुमना सत्य सुधारो ।
विष्णु नाम जपो सुखदायक, "रामप्रकाश" होय जीव सुधारो ।।७।।
समात्मा सम्मित सम अमोघ सु, पुण्डरीकाक्ष वृषकर्मा कहावे ।
रुद्र बहुशिर बभ्रु विश्वयोनि, शुचिश्रवा अमृत शाश्वत गावे ।।
वरारोह महातप सर्वग जानत, सर्वविद्भानु समर्थ शुचि भावे ।
विश्वअणु सम व्यापक विष्णु है, "रामप्रकाश' तहिं शीश नमावे ।।८।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

सर्वगः सर्वविद् - भानुः विष्वक - सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविद - अव्यंगो वेदांगो वेदवित् कविः ।।१४।।

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृता - कृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहः - चतुर्दंष्ट्रः - चतुर्भुजः ।।१५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

१२३. सर्वगः= जो सर्वत्र व्याप्त है ।
१२४. सर्वविद्भानुः= जो सर्ववित् है, भानु -भास्कर स्वरूप है ।
१२५. विष्वक्सेनः= जिनके सामने कोई सेना नहीं टिक सकती ।
१२६. जनार्दनः= दुष्टजनों को नरकादि लोकों में भेजने वाले एवँ भक्तों द्वारा पूज्य है।
१२७. वेदः= वेद स्वरूप (ज्ञान) रूप है ।
१२८. वेदविद्= वेद-ज्ञान को जानने वाले पाण्डित्यपूर्ण ।
१२९. अव्यंगः= जो किसी प्रकार के ज्ञान से अधूरा न हो।
१३०. वेदांगः= सर्व ज्ञान (वेद) जिनके अंग रूप हैं ।
१३१. वेदविद्= वेदों को विचारने वाले सर्वज्ञ ज्ञान ज्ञाता ।
१३२. कविः= सबको देखने वाले-विद्वता पूर्ण छन्द स्वरूप ।
१३३. लोकाध्यक्षः= समस्त लोकों का निरीक्षण करने वाले परमेष्ठी।
१३४. सुराध्यक्षः= सुरों (देवताओं) के अध्यक्ष ।
१३५. धर्माध्यक्षः= धर्म और अधर्म को साक्षात देखने वाले ।
१३६. कृताकृतः= कार्य रूप से कृत और कारणरूप से अकृत ।
१३७. चतुरात्मा:= चार पृथक विश्व व्यापक, भरण-पोषण , रक्षण ,शत्रु हन्ता की विभूतियों वाले ।
१३८. चतुर्व्यूहः= उपरोक्तानुसार चार व्यूहों वाले ।
१३९. चतुर्दंष्ट्रः= चार दाढ़ों या सींगों वाले ।
१४०. चतुर्भुजः= चार भुजाओं वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जनार्दन वेद विद अव्यँग जु, वेदांग वेदविद कवि सुहावे ।
लोकाध्यक्ष सुराध्यक्ष धर्माध्यक्ष, कृताकृत चतुरात्मा पावे ।।
चतुर्व्यूह चतुर्दष्टृ चतुर्भुज पूर्ण, जग नियन्ता घनानन्द गावे ।
“रामप्रकाश” विश्व पद व्यापक, हरदम ताहि शीश झुकावे ।।९।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

भ्राजिष्णु भोजनं भोक्ता सहिष्णुः जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ।।१६।।
उपेंद्रो वामनः प्रांशुः अमोघः शुचिः ऊर्जितः ।
अतींद्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ।।१७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

१४१. भ्राजिष्णुः= एकरस प्रकाश स्वरूप ।
१४२. भोजनम्= प्रकृति रूप भोज्य माया ,अन्न मय।
१४३. भोक्ता:= पुरुष रूप से प्रकृति को भोगने वाले ।
१४४. सहिष्णुः= दैत्यों की शक्ति को दहन -सहन करने वाले ।
१४५. जगदादिजः= जगत के आदि में उत्पन्न होने वाले ।
१४६. अनघः= जो अघ (पाप) रहित हो ।
१४७. विजयः= ज्ञान, वैराग्य व् ऐश्वर्य से विश्व को जीतने वाले ।
१४८. जेता:= समस्त भूतों को जीतने वाले ।
१४९. विश्वयोनिः= विश्व की उत्पत्ति कारण और योनि दोनों वही हैं ।
१५०. पुनर्वसुः= बार बार शरीरों में बसने वाले ।
१५१. उपेन्द्रः= अनुज रूप से इंद्र के पास रहने वाले ।

१५२. वामनः= भली प्रकार भजने योग्य शूक्ष्म हैं ।
१५३. प्रांशुः= तीनो लोकों को लांघने के कारण प्रांशु (ऊंचे) हो गए ।
१५४. अमोघः= जिनकी चेष्टा मोघ (व्यर्थ) नहीं होती ।
१५५. शुचिः= स्मरण करने वालों को पवित्र करने वाले ।
१५६. ऊर्जितः= अत्यंत बलशाली ।
१५७. अतीन्द्रः= जो बल और ऐश्वर्य में इंद्र से भी आगे हो ।
१५८. संग्रहः= प्रलय के समय सबका संग्रह करने वाले ।
१५९. सर्गः= जगत रूप और जगत का कारण ।
१६०. धृतात्मा:= अपने स्वरूप को एक रूप से धारण करने वाले ।
१६१. नियमः= प्रजा को नियमित करने वाले और नियम सिखाने वाले ।
१६२. यमः= अन्तः करण में स्थित होकर नियमन करने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भ्राजिष्णु भोजन भोक्ता सहिष्णु, जगदादिज अनघ अथाई ।
विजय जेता विश्वयोनि वामन, पुनर्वसु उपेंद्र प्रांशु सांई ।।
अमोघ शुचि उर्जित अतीन्द्र, सँग्रह सर्ग धृतात्म यम राई ।
"रामप्रकाश" नियम से ध्यावत, देवे पदार्थ आप गोसांई ।।१०।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अति - इंद्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ।।१८।।
महाबुद्धि: महा - वीर्यो महा - शक्ति: महा - द्युतिः ।
अनिर्देश्य - वपुः श्रीमान अमेयात्मा महाद्रि - धृक ।।१९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

१६३. वेद्यः= कल्याण की इच्छा वालों द्वारा जानने योग्य औषधीय स्वरूप ।
१६४. वैद्यः= सब विद्याओं के जानने वाले औपचारिकताओं का साक्ष्य ।
१६५. सदायोगी := सदा प्रत्यक्ष रूप से सर्वत्र होने के कारण ।
१६६. वीरहा := धर्म की रक्षा के लिए असुर योद्धाओं को मारते हैं।
१६७. माधवः= विद्या के पति ,वसन्त ऋतु स्वरूप ।
१६८. मधुः = मधु (शहद) के समान प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले ।
१६९. अतीन्द्रियः= इन्द्रियों से परे ,इन्द्रियातीत साक्षी ।
१७०. महामायः= मायावियों (लक्ष्मीवानों) धनपतियों के भी स्वामी ।
१७१. महोत्साहः= जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के लिए तत्पर रहने वाले ।
१७२. महाबलः= सर्व शक्तिमान सामर्थ्यवान ।
१७३. महाबुद्धिः= सर्वबुद्धिमान एवँ बुद्धिजीवियों के प्रेरक ।
१७४. महावीर्यः= संसार के उत्पत्ति के कारणरूप ओज ।
१७५. महाशक्तिः= अति महान शक्ति और सामर्थ्य के स्वामी ।
१७६. महाद्युतिः= जिनकी बाह्य और अंतर द्युति (ज्योति) महान है ।
१७७. अनिर्देश्यवपुः= जिसे बताया न जा सके ,अज्ञेय ,अज्ञात स्वरूप ।
१७८. श्रीमान्:= जिनमे सर्व ऐश्वर्य श्री सम्पन्न है ।
१७९. अमेयात्मा:= जिनकी आत्मा समस्त प्राणियों से अप्रमेय (अनुमान प्रमाण से रहित) है ।
१८०. महाद्रिधृक् := मंदराचल और गोवर्धन पर्वतों को धारण करने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

वैद्य वैद्यो सदायोगी वीरहा, माधव मधु अतीन्द्रिय भाई ।
महामाया महोत्साह महाबल, महाबुद्धि महावीर्या तांई ।।

महाशक्ति महाद्युति श्रीमान, अनिर्देश्य वपु अयमात्मा राई ।
"रामप्रकाश" महाधृक मानत, राम का नाम जपे चित लाई ।।११।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानंदो गोविंदो गोविदां - पतिः ।।२०।।
मरीचि: दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ।।२१।।
अमृत्युः सर्व - दृक् सिंहः सन - धाता संधिमान स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ।।२२।।
गुरुः गुरुतमो धामः सत्यः सत्य - पराक्रमः ।
निमिषो - अ - निमिषः स्रग्वी वाचस्पतिः उदार - धीः ।।२३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

१८१. महेष्वासः= जिनका धनुष महान विशाल है ।
१८२. महीभर्ता:= प्रलयकालीन जल में डूबी हुई पृथ्वी को धारण करने वाले ।
१८३. श्रीनिवासः= श्री - लक्ष्मी के निवास स्थान है ।
१८४. सतां गतिः= संत -भक्त जनों के पुरुषार्थ साधन हेतु मय है ।
१८५. अनिरुद्धः= प्रादुर्भाव के समय किसी से निरुद्ध न होने वाले ।
१८६. सुरानन्दः= सुरों (देवताओं की पृवृति) को आनंदित करने वाले ।
१८७. गोविन्दः= वाणी (गौ) को प्राप्त कराने एवँ रक्षण -प्रेरणा वाले ।
१८८. गोविदां:= पतिः = गौ (वाणी) पति , विद्यापति ।
१८९. मरीचिः= तेजस्वियों के परम तेज ।
१९०. दमनः= राक्षसों का दमन करने वाले ।
१९१. हंसः= संसार भय को नष्ट करने वाले ।
१९२. सुपर्णः= धर्म और अधर्मरूप सुन्दर पंखों वाले ।
१९३. भुजगोत्तमः= भुजाओं से चलने वालों में उत्तम ।
१९४. हिरण्यनाभः= हिरण्य (स्वर्ण) के समान नाभि वाले ।
१९५. सुतपाः= सुन्दर तप करने वालो का ध्येय स्वरूप ।
१९६. पद्मनाभः= पद्म के समान सुन्दर एवँ गहन-गँभीर नाभि वाले ।
१९७. प्रजापतिः= प्रजाओं के पति - विश्वम्भर ।
१९८. अमृत्युः= जिसकी मृत्यु (अन्त) न हो ।
१९९. सर्वदृक्:= प्राणियों के सब कर्म-अकर्मादि को देखने वाले साक्षी ।
२००. सिंहः= हनन करने वाले शक्तिशाली हैं ।
२०१. सन्धाता:= प्राकृतिक रूप से मनुष्यों को उनके कर्मों के फल देते हैं ।
२०२. सन्धिमान् := फलों के भोगनेवाले हैं ।
२०३. स्थिरः= सदा एकरूप - निश्चल हैं ।
२०४. अजः= भक्तों के हृदय में रहने वाले और असुरों का संहार करने वाले ।
२०५. दुर्मषणः= दानवादिकों से सहन नहीं किये जा सके ।
२०६. शास्ता:= श्रुति स्मृति से सबका अनुशासन करनेवाले हैं ।
२०७. विश्रुतात्म:= सत्यज्ञानादि रूप आत्मा का विशेषरूप से श्रवण करने वाले ।
२०८. सुरारिहा:= सुरोंमय - देववृति वाले सात्विक प्राणियों के शत्रुओं को मारने वाले ।
२०९. गुरुः= सब विद्याओं के उपदेष्टा और सबके जन्मदाता ,गौरवान्वित ।
२१०. गुरुतमः= ब्रह्मा आदिको भी ब्रह्मविद्या प्रदान करने वाले गुरू ।
२११. धाम:= परम ज्योति के भण्डार स्वरूप ।

२१२. सत्यः= सत्य-भाषणरूप, धर्मस्वरूप ।
२१३. सत्यपराक्रमः= जिनका पराक्रम सत्य अर्थात अमोघ है ।
२१४. निमिषः= जिनके नेत्र योगनिद्रा में मूंदे हुए हैं ।
२१५. अनिमिषः= मत्स्यरूप या आत्मारूप ।
२१६. स्रग्वी:= छः मोतियों की वैजयंती माला धारण करने वाले ।
२१७. वाचस्पतिः=उदारधीः विद्या के पति,सर्व पदार्थों को प्रत्यक्ष करने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

महेष्वास महिभर्ता श्री निवास, सतामगति अनिरुद्घ ध्याई ।
सुरानन्द गोविन्द गोविन्दा पति, मरीचि दमन हँस सुहाई ।।
सुपर्णा भुजँगोतम प्रजापति, हिरण्यनाभ सुतपा कहाई ।
"रामप्रकाश" सत पद्मनाभ कह, ध्यावत है गण देव मनाई ।।१२।।
प्रजापति सर्वदिक सिंह स्थिर, सँधाता सन्धिमान सुहावे ।
विश्रुरातत्मा सत्य पराक्रम, निमिष अनिमिष स्रग्वी कहावे ।।
अज दुर्मषण शास्ता गुरूतम, गुरू धाम वाचस्पति भावे ।
उदार धी वह "रामप्रकाश' है, सुर नर सात्विक शीश नमावे ।।१३।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अग्रणीः ग्रामणीः श्रीमान न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्र - मूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात ।।२४।।
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सं - प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निः अनिलो धरणीधरः ।।२५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

२१८. अग्रणीः= मुमुक्षुओं को उत्तम पद पर ले जाने वाले ।
२१९. ग्रामणीः= भूतग्राम (समूह प्राणियों) का नेतृत्व करने वाले ।
२२०. श्रीमान्:= जिनकी श्री अर्थात कान्ति सबसे बढ़ी चढ़ी है ।
२२१. न्यायः= न्याय (निर्णय) स्वरूप,न्यायाधीश, न्यायाधिपति ।
२२२. नेता:= जगतरूप यन्त्र को चलाने वाले ।
२२३. समीरणः= श्वासरूप से प्राणियों से चेष्टा करवाने वाले ।
२२४. सहस्रमूर्धा:= सहस्र मूर्धा (सिर) मुह के अन्दर तालू -जीभ का मूल भाग तालू वाले ।
२२५. विश्वात्मा:= विश्व की आत्मा -प्राण स्वरूप ।
२२६. सहस्राक्षः= सहस्र आँखों या इन्द्रियों वाले ।
२२७. सहस्रपात्:= सहस्र पाद (चरण) वाले ।
२२८. आवर्तनः= संसार चक्र का आवर्तन करने वाले हैं ।
२२९. निवृत्तात्मा:= संसार बंधन से निवृत्त (छूटे हुए) हैं ।
२३०. संवृतः= आच्छादन करनेवाली अविद्या से संवृत्त (ढके हुए) हैं ।
२३१. संप्रमर्दनः= अपने रूद्र और काल रूपों से सबका मर्दन करने वाले हैं ।
२३२. अहः संवर्तकः= दिन के प्रवर्तक त्रयकाल रूप हैं ।
२३३. वह्निः= हविका वहन करने वाली अग्नि हैं ।
२३४. अनिलः= अनादि- उन्नचास वायु स्वरूप है ।
२३५. धरणीधरः= वराहरूप से पृथ्वी को धारण करने वाले हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

अग्रणी ग्रामणी श्रीमान न्याय सु, नेता समीरण विश्वात्मा गावे ।
सहस्राक्ष सहस्रपात आवृतन, निवृत्तात्मा सँवृत वह्नि श्रम पावे ।।

सँप्रमर्दन अनिल सु धरणीधर, अह सुप्रसाद महर्षि गण ध्यावे।
“रामप्रकाश” सन्त साख निरन्तर, विष्णु है भव तारक आवे।।१४।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृक् - विश्वभुक् - विभुः।
सत्कर्ता सकृतः साधुः जह्नुः - नारायणो नरः।।२८।।
असंख्येयो - अप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्ट - कृत् - शुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः।।२७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

२३६. सुप्रसादः= जिनकी कृपा अति सुन्दर है।
२३७. प्रसन्नात्मा:= जिनका अन्तः करण रज और तम से दूषित नहीं है।
२३८. विश्वधृक्:= विश्व को धारण करने वाले धरती वत हैं।
२३९. विश्वभुक्:= विश्व का पालन -पोषण करने वाले पोषक हैं।
२४०. विभुः= हिरण्यगर्भादि रूप से विविध विश्व रूप होते हैं।
२४१. सत्कर्ता:= जिन को प्राणी सत्कार करते अर्थात पूजते हैं।
२४२. सत्कृतः= पूजितों से भी पूजित - श्रेष्ठता मे अग्रणीय।
२४३. साधुः= साध्य मात्र के साधक - सरल हैं
२४४. जह्नुः= अज्ञानियों को त्यागते और भक्तो को परमपद पर ले जाने वाले।
२४५. नारायणः= नर से उत्पन्न हुए तत्व नार-शक्ति हैं, जो भगवान् के अयन (घर) अर्थात् नार=जल अयन = निवास से नारायण है।
२४६. नरः= नयन कर्ता है -नार =जल , अयन=निवास - इसलिए सनातन परमात्मा नर कहलाता है।
२४७. असंख्येयः= जिनमे संख्या अर्थात नाम रूप भेदादि नहीं हो।
२४८. अप्रमेयात्मा:= जिनका आत्मा अर्थात स्वरूप अप्रमेय -अज्ञात है।
२४९. विशिष्टः= जो सबसे अतिशय (बढे चढ़े) हैं।
२५०. शिष्टकृत्:= जो सर्व श्रेष्ठ शासन करता हैं।
२५१. शुचिः= जो मलहीन पावन है।
२५२. सिद्धार्थः= जिनका सर्व अर्थ सिद्ध हो।
२५३. सिद्ध संकल्पः= जिनका संकल्प सिद्ध हो।
२५४. सिद्धिदः= कर्म कर्ताओं को अधिकारानुसार फल देने वाले।
२५५. सिद्धि साधनः= सिद्धि के साध्य - साधक की उपादेय सामग्री है।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

प्रसन्नात्मा विश्वधृक विश्वभुक, सत्कर्ता सत्कृत विभु बहाई।
नर नारायण असँख्य विशिष्ट, अप्रमेयात्मा शिष्ट कृत कहाई।।
सिद्ध सँकल्प शुचि सिद्धार्थ, सिद्धिदा सिद्ध साधन ताई।
विष्णु नाम भने “रामप्रकाश” ही, गावत जावत मोक्ष समाई।।१५।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

वृषाही वृषभो विष्णुः वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुति - सागरः।।२८।।
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेंद्रो वसुदो वसुः।
नैक - रूपो बृहद - रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः।।२९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

२५६. वृषाही:= जिनमे वृष (धर्म) जोकि अहः (दिन) है वो स्थित है।
२५७. वृषभः= जो भक्तों के लिए इच्छित वस्तुओं की वर्षा करते हैं।

२५८. विष्णुः= सब और व्याप्त रहने वाले-व्यापक, विश्व में अणु के समान शूक्ष्म ।
२५९. वृषपर्वा= धर्म की तरफ जाने वाली सीढ़ी है ।
२६०. वृषोदरः= जिनका उदर मानो प्रजा की वर्षा करता है ।
२६१. वर्धनः= बढ़ाने और पालना कर के वृद्धि करने वाले ।
२६२. वर्धमानः= जो प्रपंच रूप से बढ़ते रहते हैं ।
२६३. विविक्तः= बढ़ते हुए भी प्रपँच से सर्वथा पृथक (भिन्नाभिन्न) रहते हैं ।
२६४. श्रुतिसागरः= जिनमे समुद्र के सामान श्रुतियाँ रखी हुई हैं ।
२६५. सुभुजः= जिनकी जगत की रक्षा करने वाली भुजाएं अति सुन्दर हैं ।
२६६. दुर्धरः= जो मुमुक्षुओं के ह्रदय में अति कठिनता से धारण किये जाते हैं ।
२६७. वाग्मी:= जिनसे वेदमयी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ है।
२६८. महेन्द्रः= ईश्वरों के भी इश्वर -प्रभुत्व के प्रभु ।
२६९. वसुदः= वसु अर्थात धन - धाम देते हैं ।
२७०. वसुः= दिया जाने वाला वसु (धन) भी वही हैं ।
२७१. नैकरूपः= जिनके अनेक रूप हों ।
२७२. बृहद्रूपः= जिनके वराह आदि बृहत् (बड़े-बड़े) अनेकों रूप हैं ।
२७३. शिपिविष्टः= जो शिपि (यञ- यज्ञ) मे विष्ट (समिधा) रूप में स्थित होते हैं ।
२७४. प्रकाशनः= सबको प्रकाशित करने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

वृषाहि वृषभ विष्णु वृषोदर, वर्द्धन औ वर्द्धमान जानो ।
श्रुतिसागर रु विविक्त वृषपर्वा, सुभुज दुर्धर वाग्मी आनो ।।
नैकरूप वसुद रु वृहद रूप, शिपीविष्ट वसु प्रकाशन गानो ।
विष्णु नाम कल्याण कारक, "रामप्रकाश" गुण सागर खानो ।।१६।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

ओजः तेजो - द्युतिधरः प्रकाश - आत्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्रः चंद्रांशुः भास्कर - द्युतिः ।।३०।।
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिंदुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्य - धर्म - पराक्रमः ।।३१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

२७५. ओजस्तेजो द्युतिधरः= ओज, प्राण और बल को धारण करने वाले।
२७६. प्रकाशात्मा:= जिनकी आत्मा प्रकाश स्वरूप है।
२७७. प्रतापनः= जो अपनी किरणों से धरती को तप्त करते हैं।
२७८. ऋद्धः= जो धर्म, ज्ञान और वैराग्य से संपन्न हैं।
२७९. स्पष्टाक्षरः= जिनका ओंकार (ओ३म्) रूप अक्षर स्पष्ट है।
२८०. मन्त्रः= मन्त्रों के द्वारा जानने योग्य ।
२८१. चन्द्रांशुः= मनुष्यों को चन्द्रमा की किरणों के समान आल्हादित करने वाले।
२८२. भास्कर द्युतिः= सूर्य के तेज के समान तेजस्वी धर्म वाले ।
२८३. अमृतांशोद्भवः= समुद्र मंथन के समय जिनके कारण चन्द्रमा की उत्पत्ति हुई।
२८४. भानुः= भासित होने वाले सूर्य-भास्कर ।
२८५. शशबिन्दुः= चन्द्रमा के समान प्रजा का पालन करने वाले ।
२८६. सुरेश्वरः= देवताओं के ईश्वर ।
२८७. औषधम्:= संसार रोग के लिये औषधि स्वरूप ।
२८८. जगतः सेतुः= लोकों के पारस्परिक असंभेद के लिए इनको धारण करने वाला सेतु ।
२८९. सत्य धर्म पराक्रमः= जिनके धर्म-ज्ञान और पराक्रमादि गुण सत्य है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

ओज तेजो द्युतिधर प्रताड़न, प्रकाशात्मा ऋद्ध मन्त्र वारो ।
भास्कर द्युति चन्द्राँशु भानु, अमृतांशोद्भव शशबिन्दु सारो ।।
औषधीय सत्य धर्म पराक्रम, जगत सेतु भव तारण हारो ।
विश्व व्यापक विष्णु ध्यावत, "रामप्रकाश" भव होय किनारो ।।१७।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

भूत - भव्य - भवत् - नाथः पवनः पावनो - अनलः ।
कामहा कामकृत - कांतः कामः कामप्रदः प्रभुः ।। ३२ ।।
युगादि - कृत युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजित् - अनंतजित ।। ३३ ।।

शब्दार्थ~पद्यांश

२९०. भूत भव्य भवन्नाथः= भूत, भव्य (भविष्य) और भवत (वर्तमान) प्राणियों के नाथ है।
२९१. पवनः= पवित्र करने वाले परम पवित्र हैं ।
२९२. पावनः= सृष्टि चक्र चलाने वाले हैं ।
२९३. अनलः= प्राणों को आत्मभाव से ग्रहण करने वाले - तेजो मयी अग्नि स्वरूप हैं।
२९४. कामहा:= मोक्षकामी भक्तों और हिंसकों की कामनाओं को नष्ट करने वाले
२९५. कामकृत्:= सात्विक भक्तों की कामनाओं को पूरा करने वाले हैं।
२९६. कान्तः= अत्यंत क्रान्तिमय रूपवान हैं।
२९७. कामः= पुरुषार्थ की आकांक्षा वालों से कामना करने योग्य हैं ।
२९८. कामप्रदः= भक्तों की कामनाओं को पूरा करने वाले भक्त वत्सल हैं ।
२९९. प्रभुः= प्रकर्ष ,प्रभुत्व वाला स्वामी ।
३००. युगादिकृत्:= युगादि का आरम्भ करने वाले हैं ।
३०१. युगावर्तः= सतयुग आदि चतुर्युगों का युग धर्म आवर्तन करने वाले हैं ।
३०२. नैकमायः= अनेकों ब्रह्मण्ड की मायाओं को धारण करने वाले हैं ।
३०३. महाशनः= कल्पांत में संसार रूपी अशन (भोजन) को ग्रसने वाले।
३०४. अदृश्यः= समस्त ज्ञानेन्द्रियों एवँ मन-बुद्धि, वाणी का अविषय हैं।
३०५. व्यक्तरूपः= स्थूल रूप से जिनका स्वरूप व्यक्त है ।
३०६. सहस्रजित्:= युद्ध में सहस्रों देव-शत्रुओं को जीतने वाले।
३०७. अनन्तजित्:= अचिन्त्य शक्ति से समस्त भूतों को जीतने वाले।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भूत भव्य भव्यन्नाथ पवन, पावन अनल कामहा सारो ।
कामकृत कान्त कामप्रद, युगादि कृत प्रभु महशन वारो ।।
युगादि कृत युगावृत अदृश्य, सहस्रजित नेकमाय प्यारो ।
अनन्तजित श्री "रामप्रकाश" ताहि भजे भव होय किनारो ।।१८।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत कर्ता विश्वबाहुः महीधरः ।।३४।।
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपाम निधिरधिष्टानम् अप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ।।३५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

३०८. इष्टः= यज्ञ द्वारा पूजे जाने वाले ।
३०९. विशिष्टः सर्वघट अन्तर्यामी ।

३१०. शिष्टेष्टः= विद्वानों के ईष्ट ।
३११. शिखण्डी:= शिखण्ड (मयूर-पुच्छ) जिनका शिरोभूषण है ।
३१२. नहुषः= समूह भूतों को माया से बाँधने वाले।
३१३. वृषः= कामनाओं की वर्षा करने वाले ।
३१४. क्रोधहा:= साधुओं का क्रोध नष्ट करने वाले ।
३१५. क्रोधकृत्कर्ता:= क्रोध करने वाले दैत्यादिकों के कर्तन करने वाले हैं।
३१६. विश्वबाहुः= जिनके बाहु सब (चारों) और हैं ।
३१७. महीधरः= महि (पृथ्वी) को धारण करते हैं ।
३१८. अच्युतः= छः भाव विकारों से रहित है - जिस का कभी पतन नही होता ।
३१९. प्रथितः= जगत की उत्पत्ति आदि कर्मो से प्रसिद्ध ।
३२०. प्राणः= हिरण्यगर्भ रूप से प्रजा को जीवन देने वाले ।
३२१. प्राणदः= देवताओं और दैत्यों को प्राण देने या नष्ट करने वाले हैं ।
३२२. वासवानुजः= वासव (इंद्र) के अनुज (वामन अवतार) स्वरूप है ।
३२३. अपां-निधिः= जिसमे अप (जल) एकत्रित रहता है, वह सागर हैं।
३२४. अधिष्ठानम्:= जिनमे सब भूत स्थित अर्थात् सब का आधार हैं ।
३२५. अप्रमत्तः= कर्मानुसार फल देते हुए कभी चूकते नहीं हैं ।
३२६. प्रतिष्ठितः= जो अपनी महिमा में स्थित हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

इष्ट विशिष्ट विष्टेष्ट शिखण्डी, नहुष वृष क्रोधहा कारो ।
विश्वबाहु क्रोध कृत कर्ता, विश्वबाहु महीधर सारो ।।
अच्युत प्रथित प्राण प्राणद, वासवानुज अपानिधि वारो ।
अधिष्ठान अप्रमत्त प्रतिष्ठित, "रामप्रकाश" कहावन हारो ।।१९।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

स्कन्दः स्कन्द - धरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद भानु: आदिदेवः पुरंदरः ।।३६।।
अशोक: तारण: तारः शूरः शौरि: जनेश्वर: ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ।।३७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

३२७. स्कन्दः= स्कन्दन करने वाले हैं ।
३२८. स्कन्दधरः= स्कन्द अर्थात धर्ममार्ग को धारण करने वाले हैं ।
३२९. धूर्यः= समस्त भूतों के जन्मादिरूप धुर (बोझे) को धारण करने वाले हैं ।
३३०. वरदः इच्छित वरदान देने वाले हैं ।
३३१. वायुवाहनः= आवह आदि सात अथवा उन्नचास वायुओं को चलाने वाले हैं ।
३३२. वासुदेवः= जो वासु हैं और देव भी हैं अर्थात् सभी मे व्यापक है ।
३३३. बृहद्भानुः= अति बृहत् किरणों से संसार को प्रकाशित करने वाले ।
३३४. आदिदेवः= सबके आदि हैं और देव भी हैं ।
३३५. पुरन्दरः= देवशत्रुओं के पूरों (नगर)का ध्वंस करने वाले हैं ।
३३६. अशोकः= भूख-प्यास, जन्म-मरण, हर्ष-शोकादि छः उर्मियों से रहित हैं ।
३३७. तारणः= संसार सागर से तारने वाले हैं ।
३३८. तारः= भय -भ्रम से तारने वाले हैं ।
३३९. शूरः= पुरुषार्थ स्वरूप वीर हैं ।
३४०. शौरिः= वासुदेव की संतान शूरवीर ।
३४१. जनेश्वरः= जन अर्थात जीवों के ईश्वर ।

३४२. अनुकूलः= सब के आतम स्वरूप हैं ।
३४३. शतावर्तः= धर्म रक्षा के लिए जिनके समयानुसार सैंकड़ों अवतार हुए हैं ।
३४४. पद्मी:= जिनके हाथ में पद्म है ।
३४५. पद्मनिभेक्षणः= जिनके नेत्र पद्म (कमल) समान हैं

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

स्कन्द स्कन्दधर धूर्य वरद तार, वासुदेव पुरन्दर ओई ।
वृहद्भानु रु आदिदेव तारण, अशोक शूर जनेश्वर सोई ।।
शतावर्त अनुकूल रु पद्मी, पद्म निभेक्षण सत्य व्रत वोई ।
विष्णु नाम रटे सुख साधन, "रामप्रकाश" घर आनन्द होई ।।२०।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

पद्मनाभो - अरविंदाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत ।
महर्धि - ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुड़ध्वजः ।।३८।।
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षण लक्षण्यो लक्ष्मीवान समितिंजयः ।।३९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

३४६. पद्मनाभः= हृदय रूप पद्म की नाभि के बीच में स्थित कमल हैं।
३४७. अरविन्दाक्षः= जिनकी आँख अरविन्द (कमल) के समान है।
३४८. पद्मगर्भः= हृदयरूप पद्म में मध्य में उपासना करने वाले हैं।
३४९. शरीरभृत्:= अपनी योग माया से शरीर धारण करने वाले हैं।
३५०. महर्द्धिः= जिनकी विभूति महान है।
३५१. ऋद्धः= प्रपंच रूप धारण वाले ।
३५२. वृद्धात्मा:= जिनकी देह वृद्ध या अति पुरातन-सनातन है ।
३५३. महाक्षः= जिनकी अनेकों (अनन्त) महान (विशाल) आँखें (अक्षि) हैं।
३५४. गरुडध्वजः= जिनकी ध्वजा गरुड़ के चिन्ह वाली है।
३५५. अतुलः= जिनकी कोई तुलना नहीं है।
३५६. शरभः= जो नाशवान शरीर में प्रयगात्मा रूप से चेतन्य भासते हैं।
३५७. भीमः= जिनसे सब भमभीत रहकर डरते हैं।
३५८. समयज्ञः= समस्त भूतों में जो समभाव रखते हैं।
३५९. हविर्हरिः= यज्ञों में हवि के भाग को ग्रहण (स्वीकार) करते हैं।
३६०. सर्व लक्षण लक्षण्यः= परमार्थ स्वरूप परब्रह्म सच्चिदानन्दस्वरूप है।
३६१. लक्ष्मीवान्:= जिनके वक्ष स्थल में लक्ष्मी जी निवास करती हैं।
३६२. समितिञ्जयः= समिति अर्थात सर्व प्रकार से युद्ध को जीतने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

अरविन्दाक्ष रु पद्मनाभ है, शरीरभृत महर्द्धि सोई ।
पद्मगर्भ रु ऋद्ध वृद्धात्मा, गरुड़ ध्वज अतुल वोई ।।
शरभ भीम समयज्ञ पूरण, लक्ष्मीवान हविर्हरि जोई ।
सर्वलक्षण लक्षण्य लक्ष्मीवन्त, समितिञ्जय कहावे ओई ।।२१।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतु: दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवान - अमिताशनः ।।४०।।
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ।।४१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

३६३. विक्षरः= जिनका क्षर अर्थात नाश नहीं है।
३६४. रोहितः= अपनी इच्छा से रोहित वर्ण मूर्ति का स्वरूप धारण करने वाले।
३६५. मार्गः= जिनसे परमानंद प्राप्त होता है-मोक्षमार्ग ।
३६६. हेतुः= संसार के निमित्त और उपादान कारण हैं।
३६७. दामोदरः= दाम लोकों का नाम है, जिस के उदर में चौदह भुवन हैं।
३६८. सहः= सबको सहन करने वाले गँभीर हैं।
३६९. महीधरः= पर्वत रूप स्थिर होकर मही (पृथ्वी) को धारण करते हैं।
३७०. महाभागः= हर यज्ञ में जिन्हे सबसे बड़ा भाग मिलता है।
३७१. वेगवान्:= क्षिप्र - तीव्र गति वाले हैं।
३७२. अमिताशनः= संहार के समय सारे विश्व को खा जाने वाले महाकाल हैं ।
३७३. उद्भवः= भव यानी संसार उत्पति का कारण हैं ।
३७४. क्षोभणः= जगत की उत्पत्ति के समय प्रकृति और पुरुष में प्रविष्ट होकर क्षुब्ध करने वाले।
३७५. देवः जो स्तुत्य पुरुषों से स्तवन किये जाते हैं और सर्वत्र पूजे जाते हैं।
३७६. श्रीगर्भः= जिनके उदर में संसार रूपी श्री स्थित है।
३७७. परमेश्वरः= जो परम है और ऐश्वर्यशाली हैं ।
३७८. करणम्:= संसार की उत्पत्ति के सबसे बड़े साधन -तात्विक सामग्री युक्त हैं।
३७९. कारणम्:= जगत के उपादान और निमित्त रूप ।
३८०. कर्ता:= स्वतन्त्र शक्ति वान समर्थ।
३८१. विकर्ता= विचित्र भुवनों की अनुपम रचना करने वाले हैं।
३८२. गहनः= जिनका स्वरूप, गहनता की सामर्थ्य या कृत्य नहीं जाना जा सकता।
३८३. गुहः= अपनी माया से स्वरूप को ढक लेने वाले गोपनीयता वाले।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

हेतु दामोदर सह धरणीधर, अमिताशन महाभाग कहावे ।
वेगवान उद्भव रु क्षोभण, श्री गर्भ परमेश्वर गुह गावे ।।
करण कारण देव वह कर्ता, गहन गुह विकर्ता पावे ।
विष्णु व्यापक कला अनुपम, "रामप्रकाश" सन्त ताहि मनावे ।।२२।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो - ध्रुवः ।
परर्रद्धि परमस्पष्टः तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ।।४२।।
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयो - अनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठः धर्मो धर्मविदुत्तमः ।।४३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

३८४ व्यवसायः= ज्ञान मात्र स्वरूप का प्रसारण।
३८५ व्यवस्थानः= जिनमे सबकी व्यवस्था है।
३८६ संस्थानः= परम सत्ता का भण्डारण।
३८७ स्थानदः ध्रुवादिकों को उनके कर्मों के अनुसार स्थान देते हैं।
३८८ ध्रुवः= अविनाशी-अटल, अडिग।
३८९ परर्धिः= जिनकी विभूति सर्व श्रेष्ठ है।
३९०. परमस्पष्टः= परम और स्पष्ट हैं।
३९१. तुष्टः= परमानन्द स्वरूप प्रसन्नता।
३९२. पुष्टः सर्वत्र परिपूर्ण तृप्ति।
३९३. शुभेक्षणः= जिनका दर्शन सर्वदा शुभ है।

३९४ रामः= अपनी इच्छा से रमणीय शरीर धारण करने वाले
३९५. विरामः= जिनमे प्राणियों का विराम (अंत) होता है।
३९६. विरजः= विषय सेवन में जिन का कभी राग नहीं रहा है ।
३९७. मार्गः= जिन्हे जानकार मुमुक्षुजन अमर हो जाते हैं।
३९८. नेयः= ज्ञान से जीव को परमात्व भाव की तरफ ले जाने वाले।
३९९. नयः= प्रधान नेता-प्रमुख।
४००. अनयः= जिनका कोई और प्रधान नेता नहीं है।
४०१. वीरः= अतिशय विक्रम शाली।
४०२. शक्तिमतां श्रेष्ठः= सभी शक्तिमानों में सर्व श्रेष्ठ।
४०३. धर्मः= समस्त भूतों को धारण करने वाले।
४०४. धर्मविदुत्तमः= जिनकी आज्ञा स्वरूप समस्त वेद-शास्त्रों की श्रुतियाँ और स्मृतियाँ है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

व्यवसाय रु व्यवस्थान सँस्थान सु, स्थानद ध्रुव परर्धि गाता ।
परम स्पष्ट शुभेक्षण पुष्ट रु, राम विराम जु तुष्ट कहाता ।।
नेय मार्ग अनय नय वीर सु, धर्म शक्ति मता श्रेष्ठ विगाता ।
धर्मविदुत्तम विष्णुस्वरूप सो, "रामप्रकाश" मन ताहि को ध्याता ।।२३।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

वैकुंठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ।।४४।।
ऋतुः सुदर्शनः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्व - दक्षिणः ।।४५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

४०५. वैकुण्ठः= जगत के आरम्भ में बिखरे हुए भूतों को परस्पर मिलाकर उनकी गति रोकने वाले।
४०६. पुरुषः= सबसे पहले होने वाले पुरुषोत्तम ।
४०७. प्राणः= प्राण वायु रूप होकर चेष्टा करने वाले हैं।
४०८. प्राणदः= प्रलय के समय प्राणियों के प्राणों का खण्डन करते हैं।
४०९. प्रणवः= जिन्हे वेद -ऋषिगण प्रणाम करते हैं।
४१०. पृथुः= प्रपंच रूप से विस्तृत एवँ स्थिर हैं ।
४११. हिरण्यगर्भः ब्रह्मा की उत्पत्ति के कारण ।
४१२. शत्रुघ्नः= देवताओं के शत्रुओं को मारने वाले हैं।
४१३. व्याप्तः= सब कार्यों को व्याप्त करने वाले हैं।
४१४. वायुः= गंध वाली प्रसारण शक्ति हैं ।
४१५. अधोक्षजः= जो कभी अपने स्वरूप से नीचे न हो।
४१६. ऋतुः= ऋतु शब्द द्वारा कालरूप से लक्षित होते हैं।
४१७. सुदर्शनः= उनके नेत्र अति सुन्दर हैं और दर्शन भी सौभाग्यशाली है।
४१८. कालः= क्षण ,पल,घड़ी से कल्पान्त इत्यादि सब समय की गणना करने वाले हैं।
४१९. परमेष्ठी:= हृदयाकाश के भीतर परम महिमा में स्थित रहने के स्वभाव वाले।
४२०. परिग्रहः= भक्तों के अर्पण किये जाने वाले पुष्पादि को ग्रहण करने वाले।
४२१. उग्रः= जिनके भय से सूर्य भी समय पर उदयास्त होता है।
४२२. संवत्सरः= जिनमे सब भूत - प्राणी बसते हैं।
४२३. दक्षः= जो सब कार्य बड़ी चातुर्य पूर्ण शीघ्रता से करते हैं।
४२४. विश्रामः= परम विश्राम - मोक्ष देने वाले हैं ।
४२५. विश्वदक्षिणः= जो समस्त कार्यों में कुशल हैं।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

वैकुण्ठ पुरुष प्राण प्राणद, हिरण्यगर्भ प्रणव पृथु सारो ।
अधोक्षज शत्रुघ्न व्याप्त उग्र, सुदर्शन ऋतु वायु दक्ष वारो ।।
परिग्रह परमेष्ठी सम्वत्सर, विश्व दक्षिण विश्राम विचारो ।
काल विष्णु स्वरूप अनुपम, "रामप्रकाश" जप हो निस्तारो ।।२४।।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

वैकुण्ठ पुरुष प्राण प्राणद, हिरण्यगर्भ पृथु प्रणव सोई ।
व्याप्त अधोक्षज शत्रुघ्न रु, वायु सुदर्शन ऋतु घनोई ।।
परमेष्ठी काल उग्र परिग्रह, विश्वदक्षिण विश्राम दक्षोई ।
विष्णु नाम अनुपम सुन्दर, "रामप्रकाश" जपे सुख होई ।।२५।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम ।
अर्थो अनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ।।४६।।
अनिर्विण्णः स्थविष्ठो - अभूर्धर्म - यूपो महा - मखः ।
नक्षत्रनेमिः नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ।।४७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

४२६. विस्तारः= जिनमे समस्त लोक विस्तार पाते है ।
४२७. स्थावरस्स्थाणुः= स्थावर और स्थाणु हैं ।
४२८. प्रमाणम्:= संवित स्वरूप स्वतः प्रमाणित है।
४२९. बीजमव्ययम्:= बिना अन्यथाभाव के ही संसार के कारण हैं।
४३०. अर्थः= सबसे प्रार्थना किये जाने वाले हैं ।
४३१. अनर्थः जिनका कोई प्रयोजन नहीं है ।
४३२. महाकोशः= जिन्हे महान पँचकोष ढकने वाले हैं ।
४३३. महाभोगः जिनका सुखरूप महान भोग है ।
४३४. महाधनः= जिनका भोग साधन रूप महान धन - ऐश्वर्य है।
४३५. अनिर्विण्णः= जिन्हे कोई निर्वेद (उदासीनता) नहीं है ।
४३६. स्थविष्ठः= वैराजरूप से स्थित होने वाले हैं ।
४३७.अभूः= अजन्मा -एक रूपता मे स्थिति ।
४३८. धर्मयूपः= धर्म स्वरूप यूप में जिन्हे बाँधा जाता है ।
४३९. महामखः= जिनको अर्पित किये हुए मख (यज्ञ) महान हो जाते हैं।
४४०. नक्षत्रनेमिः= सम्पूर्ण नक्षत्र मण्डल के केंद्र सूर्य वत ज्योतिर्मान हैं ।
४४१. नक्षत्रीः= नक्षत्र पति चन्द्र स्वरूप ।
४४२. क्षमः= समस्त कार्यों में सामर्थ्यवान ।
४४३. क्षामः जो समस्त विकारों के क्षीण हो जाने पर आत्मभाव से स्थित रहते हैं ।
४४४. समीहनः= सृष्टि आदि के लिए सम्यक चेष्टा करते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

स्थावर स्स्थाणु विस्तार प्रमाणम्, महाकोश अनर्थ अर्थ सारो ।
महाभोग महाधन स्थविष्ठ, अनिर्वण्ण अस्थविष्ठ अभु वारो ।।
नक्षत्रनेमि महामख नक्षत्रीय, धर्मयूप सम्मीहन क्षम कारो ।
क्षाम विष्णु महा प्रभु सामर्थ, "रामप्रकाश" अखण्ड अपारो ।।२६।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।

सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमं ।।४८।।
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत ।
मनोहरो जित - क्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ।।४९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

४४५. यज्ञः= सर्व यज्ञ स्वरूप ।
४४६. इज्यः= जो परम पूज्य हैं ।
४४७. महेज्यः= मोक्ष रूप अक्षय फल देने वाले सबसे अधिक पूजनीय।
४४८ क्रतुः= तद्रूप - यथावत-तथागत।
४४९.सत्रम्:= जो विधिरूप धर्म को प्राप्त करता है
४५०सतां-गतिः= जिनके अलावा कोई और गति नहीं है
४५१. सर्वदर्शी:= जो प्राणियों के सम्पूर्ण कर्मों को देखते हैं
४५२. विमुक्तात्मा:= स्वभाव से ही जिनकी आत्मा मुक्त है
४५३. सर्वज्ञः= जो सर्व है और ज्ञानरूप है
४५४. ज्ञानमुत्तमम्:= जो प्रकृष्ट, अजन्य, और सबसे बड़ा साधक ज्ञान है
४५५. सुव्रतः= जिन्होंने अशुभ व्रत लिया है
४५६. सुमुखः= जिनका मुख सुन्दर है
४५७. सूक्ष्मः= शब्दादि स्थूल कारणों से रहित हैं
४५८. सुघोषः= मेघ के समान गंभीर घोष वाले हैं
४५९. सुखदः= सदाचारियों को सुख देने वाले हैं
४६०. सुहृत्:= बिना प्रत्युपकार की इच्छा के ही उपकार करने वाले हैं
४६१. मनोहरः= मन का हरण करने वाले हैं
४६२. जितक्रोधः= क्रोध को जीतने वाले
४६३. वीरबाहुः= अति विक्रमशालिनी बाहु के स्वामी
४६४. विदारणः= अधार्मिकों को विदीर्ण करने वाले हैं

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

यज्ञ इज्य महेज्य क्रतु सत्रम्, सर्वदर्शी विमुक्तात्मा भाई ।
ज्ञानमुतत्तम् सर्वज्ञ रु सुव्रत, सुघोष शूक्ष्म सुमुख ध्याई ।।
जितक्रोध मनोहर सुहृद सुखद, जितक्रोध विदारण पाई ।
वीरबाहु विष्णु सुखदायक, "रामप्रकाश" विदारण आई ।।२७।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ।।५०।।
धर्मगुब धर्मकृद धर्मी सदसत्क्षरं - अक्षरं ।
अविज्ञाता सहस्त्रांशु: विधाता कृतलक्षणः ।।५१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

४६५. स्वापनः= जीवों को माया से आत्मज्ञान रूप जाग्रति से रहित -मोहित करने वाले हैं।
४६६. स्ववशः= जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण हैं।
४६७. व्यापी:= सर्व व्यापी-व्याप्य है।
४६८.नैकात्मा:= जो विभिन्न विभूतियों के द्वारा नाना प्रकार से स्थित हैं।
४६९. नैककर्मकृत्:= जो संसार की उत्पत्ति, उन्नति और विपत्ति आदि अनेक कर्म करते हैं
४७०. वत्सरः= जिनमे सब कुछ बसा हुआ है।
४७१. वत्सलः= भक्तों के स्नेही-भक्त वत्सल ।
४७२. वत्सी:= वत्सों का पालन करने वाले।

४७३. रत्नगर्भः= रत्न जिनके गर्भरूप हैं।
४७४. धनेश्वरः= जो धनेश्वर्यों के स्वामी हैं।
४७५. धर्मगुब्:=धर्म का गोपन (रक्षा) करने वाले हैं।
४७६. धर्मकृत्:= धर्म की मर्यादा के अनुसार आचरण वाले हैं।
४७७. धर्मी:= धर्मों के मूल को धारण करने वाले हैं।
४७८. सत्:= सत्य स्वरूप परब्रह्म सच्चिदानन्दस्वरूप है।
४७९. असत्:= प्रपंचरूप अपर ब्रह्म प्राकृतिक प्रस्तारक है।
४८०. क्षरम्:= सर्व भूत मय है।
४८१ अक्षरम्:= कूटस्थ स्वरूप अक्षय अटल ।
४८२. अविज्ञाता:=वासना को न जानने वाला।
४८३. सहस्रांशुः= जिनके तेज से प्रज्वल्लित होकर सूर्य तपता है।
४८४.विधाता:= समस्त भूतों और पर्वतों को धारण करने वाले ।
४८५. कृतलक्षणः= नित्य सिद्ध चैतन्य स्वरूप।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

नैकात्मा स्वापन स्ववश क्षरम, नेककर्म कृत व्यापी जानो ।
वत्सल वत्सी रत्नगर्भ धर्मी, धर्मकृत धर्मेश्वर सत मानो ।।
धर्मगुब असत सत अक्षरम, क्षरम अविज्ञाता विधाता आनो ।
कृतलक्षण सहस्रांशु विष्णु, "रामप्रकाश" व्यापक परमानो ।।२८।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद गुरुः ।।५२।।
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीर भूतभृद्भोक्ता कपींद्रो भूरिदक्षिणः ।।५३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

४८६. गभस्तिनेमिः= जो गभस्तियों (किरणों) के बीच में सूर्यरूप से स्थित हैं।
४८७. सत्त्वस्थः= जो समस्त प्राणियों में स्थित हैं।
४८८. सिंहः= जो सिंह के समान पराक्रमी हैं।
४८९. भूतमहेश्वरः= भूतों के महान ईश्वर हैं।
४९०. आदिदेवः= जो सब भूतों का ग्रहण करते देव हैं।
४९१. महादेवः= जो अपने महान ज्ञानयोग और ऐश्वर्य से महिमान्वित हैं।
४९२. देवेशः= देवों के ईश देवाधिदेव हैं।
४९३. देवभृद्गुरुः= देंवताओं के पालक इन्द्र के भी शासक हैं।
४९४. उत्तरः= जो संसार बंधन से सर्वदा मुक्त हैं।
४९५. गोपतिः= गौओं के पालक-रक्षक है।
४९६. गोप्ता:= समस्त भूतों के पालक और जगत के रक्षक।
४९७. ज्ञानगम्यः= जो केवल ज्ञान से ही जाने जाते हैं।
४९८.पुरातनः= जो काल से भी पहले अकाल रहते हैं।
४९९. शरीरभूतभृत्:= शरीर की रचना करने वाले भूतों के पालक।
५००. भोक्ता:= पालन करने वाले।
५०१. कपीन्द्रः= वानरों के स्वामी।
५०२. भूरिदक्षिणः= जिनकी बहुत सी दक्षिणाएँ रहती हैं।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भूतमहेश्वर सिंह सत्त्वस्थ गोप्ता, गभस्तिनेमि महादेव स्वामी ।

देवगुरू देवेश गोपति उतर, पुरातन ज्ञान गम्य अन्तर्यामी ।।
शरीर भूतभृत कपिन्द्र भोक्ता, भूरिदक्षिण आदि गुरू नामी ।
"रामप्रकाश" विष्णु विष्णु भण, पाप नाश शुभ स्वर्ग गामी ।।२९।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

सोमपो - अमृतपः सोमः पुरुजित पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः ।।५४।।
जीवो विनयिता - साक्षी मुकुंदो - अमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयो - अंतकः ।।५५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५०३. सोमपः= जो समस्त यज्ञों में देवतारूप से सोमपान करते हैं।
५०४. अमृतपः आत्मारूप अमृतरस का पान करने वाले।
५०५. सोमः= चन्द्रमा (सोम) रूप से औषधियों का पोषण करने वाले।
५०६. पुरुजित्= पुरु अर्थात बहुतों को जीतने वाले।
५०७. पुरुसत्तमः= विश्वरूप अर्थात पुरु और उत्कृष्ट अर्थात सत्तम=सर्वोतम हैं।
५०८. विनयः= दुष्ट प्रजा को विनय अर्थात दंड देने वाले हैं।
५०९. जयः= सब भूतों को जीतने वाले हैं।
५१०. सत्यसन्धः= जिनकी संधा अर्थात संकल्प सत्य हैं।
५११. दाशार्हः= जो दशार्ह (उतम) कुल में उत्पन्न हुए।
५१२. सात्त्वतां पतिः= सात्वतों (वैष्णवों) के स्वामी।
५१३. जीवः= क्षेत्रज्ञ रूप से प्राण धारण करने वालेसाक्षी ।
५१४. विनयिता साक्षी= प्रजा की विनयिता को साक्षात देखने वाले।
५१५. मुकुन्दः= मुचकन्द -मोह से मुक्ति देने वाले हैं।
५१६. अमित विक्रमः= जिनका विक्रम (शूरवीरता) अतुलित है।
५१७. अम्भोनिधिः= जिनमे अम्भवृति (देव सवभाव) से रहते हैं।
५१८.अनन्तात्मा:= जो देश, काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न हैं।
५१९. महोदधिशयः= जो महोदधि (समुद्र) में शयन करते हैं।
५२०. अन्तकः= भूतों का अंत करने वाले।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

अमृतद सोम सोमद पुरुजित, पुरुसतम जय विनय अपारा ।
जीव सत्वतापति मुकुन्द दशार्ह, विनीता साक्षी अन्तक सारा ।।
अम्भोनिधि अनन्तात्मा अमित, विक्रम महोदधि विष्णु विचारा ।
विश्व व्यापक विष्णु दिवाकर, "रामप्रकाश" प्रणाम हमारा ।।३०।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनंदो नंदनो नंदः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ।।५६।।
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृंगः कृतांतकृत ।।५७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५२१. अजः= अजन्मा,अयोनिज ।
५२२. महार्हः= मह (पूजा) के योग्य।
५२३. स्वाभाव्यः= नित्यसिद्ध होने के कारण स्वभाव से ही उत्पन्न नहीं होते।
५२४. जितामित्रः= जिन्होंने शत्रुओं को जीता है।

५२५. प्रमोदनः= जो अपने ध्यानमात्र से ध्यानियों को प्रमुदित करते हैं।
५२६. आनन्दः= आनंद स्वरूप।
५२७. नन्दनः= आनंदित करने वाले हैं।
५२८. नन्दः= सब प्रकार की ऋद्धियाँ -सिद्धियों से संपन्न।
५२९. सत्यधर्मा:= जिनके धर्म ज्ञानादि गुण सत्य हैं।
५३०. त्रिविक्रमः= जिनके तीन विक्रम (डग) तीनों लोकों में क्रान्त (व्याप्त) हो गए।
५३१. महर्षिः= कपिलाचार्यः जो ऋषि रूप से उत्पन्न हुए कपिल हैं।
५३२. कृतज्ञः= कृत (जगत) और ज्ञ (आत्मा) हैं।
५३३. मेदिनीपतिः= मेदिनी (पृथ्वी) के पति,भूपति ।
५३४. त्रिपदः= जिनके तीन पद हैं-तत,त्वँ,असि ।
५३५. त्रिदशाध्यक्षः= जागृत , स्वप्न और सुषुप्ति - इन तीन अवस्थाओं के अध्यक्ष तुरिया साक्षी।
५३६. महाशृंगः= मत्स्य अवतार ।
५३७. कृतान्तकृत्:= कृत (जगत) का अंत करने वाले हैं,महाकाल ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

जितामित्र स्वाभाव्य महार्ह, अज प्रमोदन आनन्द नन्दा ।
सत्यधर्मा त्रिविक्रम नन्दन, मेदनीपति कृतज्ञ त्रिपद वन्दा ।।
कृतान्तकृत महर्षि महाशृँग, त्रिदिशाध्यक्ष सक्षम सुख कन्दा ।
विश्वकर्मा विष्वक प्रभु समर्थ, "रामप्रकाश" भज सो गोविन्दा ।।३१।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकांगदी ।
गुह्यो गंभीरो गहनो गुप्तश्चक्र - गदाधरः ।।५८।।
वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणो - अच्युतः ।
वरूणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ।।५९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५३८. महावराहः= महान हैं और वराह हैं।
५३९. गोविन्दः= गो अर्थात वाणी से प्राप्त होने वाले - जो इन्द्रियों के पालक, रक्षक, प्रेरक हैं।
५४०. सुषेणः= जिनकी पार्षदरूप सुन्दर सेना है।
५४१. कनकांगदी:= जिनके कनकमय (सोने के) अंगद(भुजबन्द) हैं।
५४२. गुह्यः= गुहा यानि हृदयाकाश में छिपे हुए हैं।
५४३. गँभीरः= जो गंभीर ,गहन ,घन हैं।
५४४. गहनः= कठिनता से प्रवेश किये जाने योग्य हैं।
५४५. गुप्तः= जो वाणी और मन का अविषय हैं।
५४६. चक्रगदाधरः= मन रूपी चक्र और बुद्धि रूपी गदा को लोक रक्षा हेतु धारण करने वाले।
५४७. वेधाः विधान करने वाले हैं।
५४८. स्वांगः= कार्य करने में स्वयं ही अंग-कारण करण हैं।
५४९. अजितः= अपने अवतारों में किसी से नहीं जीते गए ।
५५०. कृष्णः= कृष्णद्वैपायन-व्याप्य, व्यास है।
५५१. दृढः= जिनके स्वरूप सामर्थ्यादि की कभी च्युति नहीं होती।
५५२. संकर्षणोऽच्युतः= जो एक साथ ही आकर्षण करते हैं और पद च्युत-पतन नहीं होते।
५५३. वरुणः= अपनी किरणों का संवरण करने वाले सूर्य हैं।
५५४. वारुणः= वरुण के पुत्र वसिष्ठ या अगस्त्य।
५५५. वृक्षः= वृक्ष के समान अचल भाव से स्थित।
५५६.पुष्कराक्षः= हृदय कमल में चिंतन किये जाते हैं।

५५७. महामनाः= सृष्टि,स्थिति और अंत ये तीनों कर्म मन से करने वाले ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

गोविन्द महावराह सुषेण, कनकाँगदी गँभीर गुह पाई ।
चक्रगदाधर गहन वारुण, स्वाँग वेधा अजित अजाई ।।
सँकर्षणोच्युत दृढ कृष्ण, वरुण वारुण महामना ध्याई ।
पुष्कराक्ष विष्णु सो वृक्षस, "रामप्रकाश" सो है सुखदाई ।।३२।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

भगवान भगहानंदी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णु: - गतिसत्तमः ।।६०।।
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिविःस्पृक् सर्वदृक व्यासो वाचस्पतिः अयोनिजः ।।६१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५५८. भगवान् := सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य ,षडेश्वर्य युक्त कला जिनमें है।
५५९. भगहा:= संहार के समय ऐश्वर्यादि का हनन -प्रलय करने वाले हैं।
५६०.आनन्दी:= सुख स्वरूप आनन्द घन ।
५६१. वनमाली:= बाँस ,सीप,सूअर ,गिरि, हाथी , कच्छप, इन छ:मोतियों से बनी वैजयंती नाम की वनमाला धारण करने वाले हैं ।
५६२. हलायुधः= जिनका आयुध (शस्त्र) ही हल है।
५६३. आदित्यः= अदिति के गर्भ से उत्पन्न होने वाले।
५६४. ज्योतिरादित्यः= सूर्य मण्डलान्तर्गत ज्योति में स्थित प्रकाशक।
५६५. सहिष्णुः= शीतोष्णादि द्वंद्वों को सहन करने वाले।
५६६. गतिसत्तमः= गति हैं और सर्वश्रेष्ठ हैं।
५६७. सुधन्वा:= जिनका इन्द्रियादिमय सुन्दर शारंग धनुष है।
५६८. खण्डपरशु:= जिनका परशु अखंड हैँ ।
५६९. दारुणः= सन्मार्ग के विरोधियों के लिए दारुण (कठोर) हैं ।
५७०. द्रविणप्रदः= भक्तों को द्रविण (इच्छित धन) देने वाले हैं।
५७१. दिवःस्पृक्:= दिव (स्वर्ग) का स्पर्श करने वाले हैं।
५७२. सर्वदृग्व्यासः= सम्पूर्ण ज्ञानों का विस्तार करने वाले हैं।
५७३. वाचस्पतिरयोनिजः= विद्या के पति और जननी से जन्म न लेने वाले हैं।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

आनन्दी भगवान भगहा, हलायुद्ध वनमाली हमारा ।
ज्योतिरादित्य आदित्य सहिष्णु, गतिसत्तम सुधन्वा सारा ।।
द्रविणप्रद दारुण खण्ड परशु, सर्वदृग्वयास दिवस्पृक हारा ।
अयोनिज वाचस्पति विष्णु, "रामप्रकाश" प्रणाम हमारा ।।३३।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक ।
संन्यासकृत् - छमः शांतो निष्ठा शांतिः परायणम ।।६२।।
शुभांगः शांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ।।६३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५७४.त्रिसामा:= तीन साम मन्त्रों द्वारा सामगान करने वालों से स्तुति किये जाने वाले हैं।
५७५. सामगः= सामवेद के मन्त्रों के सामगान करने वाले हैं।

५७६. साम := सामवेद ।
५७७. निर्वाणम् := परमानंद स्वरूप ब्रह्म ।
५७८. भेषजम् := संसार रूप रोग की परमौषधि ।
५७९. भृषक् := संसार रूप रोग से छुड़ाने वाली ब्रह्मविद्या का उपदेश देने वाले हैं।
५८०. संन्यासकृत् := मोक्ष के लिए संन्यास की रचना करने वाले हैं।
५८१. समः= सन्यासियों को ज्ञान के साधन शम दमादि का उपदेश देने वाले ।
५८२. शान्तः= विषय सुखों में अनासक्त रहने वाले।
५८३. निष्ठा:= प्रलयकाल में प्राणी सर्वथा जिनमे वास करते हैं।
५८४.शान्तिः= सम्पूर्ण अविद्या मयी त्रियकाल-त्रय ताप की निवृत्तिवान।
५८५. परायणम् := पुनरावृत्ति की शंका से रहित परम उत्कृष्ट स्थान हैं।
५८६.. शुभांगः= सुन्दर शरीर धारण करने वाले हैं।
५८७. शान्तिदः= परम शान्ति देने वाले हैं।
५८८. स्रष्टा:= आरम्भ में सब भूतों को रचने वाले हैं।
५८९. कुमुदः= कु अर्थात पृथ्वी में मुदित होने वाले हैं।
५९०. कुवलेशयः= कु अर्थात पृथ्वी के वलन करने से जल कुवल कहलाता है, उसमे शयन करने वाले हैं
५९१. गोहितः= गौओं के हितकारी हैं ,
५९२. गोपतिः= गो अर्थात भूमि और इन्द्रियों के पति हैं।
५९३. गोप्ता:= गुप्त रूप से जगत के रक्षक हैं।
५९४. वृषभाक्षः= वृष अर्थात धर्म जिनकी दृष्टि है।
५९५. वृषप्रियः= जिन्हे वृष अर्थात धर्म प्रिय है।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

निर्वाणम भेषजम सामग, त्रिसामा साम भृषक सारा ।
सन्यासकृत सम शान्त निष्ठा, शान्ति शान्तिद गोप्ता वारा ।।
शुभाँग सृष्टा कुमुद गोहित, कुवलेशय गोपति विस्तारा ।
वृषभाक्ष गोप्ता वृषप्रिय ही, "रामप्रकाश" विष्णु अवतारा ।।३४।।

शब्दार्थ~पद्यांश

५९६. अनिवर्ती:= देवासुर संग्राम से पीछे न हटने वाले हैं।
५९७. निवृतात्मा:= जिनकी आत्मा स्वभाव से ही विषयों से निवृत्त है।
५९८. संक्षेप्ता:= संहार के समय विस्तृत जगत को सूक्ष्मरूप से संक्षिप्त करने वाले हैं।
५९९. क्षेमकृत्:= प्राप्त हुए पदार्थ की रक्षा करने वाले हैं।
६००. शिवः= अपने नाम स्मरण मात्र से पवित्र करने वाले हैं।
६०१. श्रीवत्सवक्षाः= जिनके वक्षस्थल में श्रीवत्स नामक चिन्ह है।
६०२. श्रीवासः= जिनके वक्षस्थल में कभी नष्ट न होने वाली श्री वास करती हैं।
६०३. श्रीपतिः= श्री ऐश्वर्य के पति।
६०४. श्रीमतां वरः= ब्रह्मादि श्रीमानों में प्रधान हैं।
६०५. श्रीदः= भक्तों को श्री देते हैं , इसलिए श्रीद हैं ।
६०६. श्रीशः= जो श्री समूह ऐश्वर्य लक्ष्मी के ईश हैं ।
६०७. श्रीनिवासः= जो श्रीमानों में निवास करते हैं ।
६०८. श्रीनिधिः= जिनमे सम्पूर्ण सप्त - श्रियां एकत्रित हैं ।
६०९. श्रीविभावनः= जो समस्त भूतों को विविध प्रकार की श्रियां देते हैं।
६१०. श्रीधरः= जिन्होंने श्री को छाती में धारण किया हुआ हैं।
६११. श्रीकरः= भक्तों को श्रीयुक्त करने वाले हैं।
६१२. श्रेयः= जिनका स्वरूप अखण्ड सुख को प्राप्त कराता है।

६१३. श्रीमान्:= जिनमे श्रेष्ठ श्रियां हैं ।
६१४. लोकत्रयाश्रयः= जो तीनों लोकों के आश्रय भूत हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

निवृतात्मा अनिवर्ति श्रीधर, सँक्षेप्ता श्रीवास श्रीपति सारा ।
श्रीवत्सवक्षा श्रीश श्रीनिधि, श्रीद श्रीकर श्रीधर श्रेयकारा ।।
लोकत्रयाश्रय श्रीविभावन, श्रीमतांवर श्रेय शिव सुधारा ।
श्रीमान विष्णु सोई आप है, "रामप्रकाश" वह सिरजणहारा ।।३५।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

स्वक्षः स्वंगः शतानंदो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वर: ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ।।६६।।
उदीर्णः सर्वत: चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ।।६७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

६१५. स्वक्षः= जिनकी आँखें कमल के समान सुन्दर हैं ।
६१६. स्वङ्गः= जिनके अंग स्वत: स्वयँ सुन्दर हैं।
६१७. शतानन्दः= जो परमानंद स्वरूप उपाधि भेद से सैंकड़ों प्रकार के स्वरूप में हो जाते हैं।
६१८. नन्दिः= परमानन्द स्वरूप सच्चिदानन्द ।
६१९. ज्योतिर्गणेश्वरः= प्राकृतिक ज्योतिर्गणों के ईश्वर ।
६२०. विजितात्मा:= जिन्होंने आत्मा अर्थात मन को जीत लिया है।
६२१. विधेयात्मा:= जिनका स्वरूप किसीके द्वारा विधिरूप से नहीं कहा जा सकता।
६२२. सत्कीर्तिः= जिनकी कीर्ति सत्य रूप है ।
६२३. छिन्नसंशयः= जिन्हे कोई संशय नहीं है ।
६२४. उदीर्णः= जो सब प्राणीओं से उत्तीर्ण है।
६२५. सर्वतश्चक्षुः= जो अपने चैतन्यरूप से सबको देखते हैं ।
६२६. अनीशः जिनका कोई अन्य ईश-अधिपति नहीं है।
६२७. शाश्वत:=स्थिरः जो नित्य होने पर भी कभी विकार को प्राप्त नहीं होते।
६२८. भूशयः= लंका जाते समय समुद्रतट पर भूमि पर सोये थे।
६२९. भूषणः= जो अपने अवतारों से पृथ्वी को विभूषित करते रहे हैं।
६३०. भूतिः= समस्त विभूतियों के महाकारण हैं ।
६३१. विशोकः= जो सभी द्वन्द्वों के शोक से परे हैं ।
६३२. शोकनाशनः= जो स्मरणमात्र से भक्तों का शोक नष्ट कर दे ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

स्वक्ष स्वङ्ग शतानन्द नन्दि, ज्योतिर्गणेश्वर शाश्वत सारो ।
विजितात्मा विधेयात्मा भूषण, सत्कीर्ति छिन्नसँशय वारो ।।
सर्वतश्चक्षु अनीश शाश्वत, भूशय भूषण भूति विसारो ।
शोकनाशन विशोक विष्णु, "रामप्रकाश" गण ध्यान हमारो ।।३६।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ।।६८।।
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ।।६९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

६३३. अर्चिष्मान्:= जिनकी अर्चियों (किरणों) से सूर्य, चन्द्रादि अर्चिष्मान हो रहे हैं।
६३४.. अर्चितः= जो सम्पूर्ण लोकों से अर्चित (पूजित) हैं ।
६३५. कुम्भः= कुम्भ (घड़े) के समान जिनमे सब वस्तुएं स्थित हैं ।
६३६. विशुद्धात्मा:= तीनों गुणों से अतीत होने के कारण विशुद्ध आत्मा हैं ।
६३७. विशोधनः= अपने स्मरण मात्र से पापों का नाश करने वाले हैं।
६३८. अनिरुद्धः= शत्रुओं द्वारा कभी रोके न जाने वाले।
६३९. अप्रतिरथः= जिनका कोई विरुद्ध पक्ष नहीं है।
६४०. प्रद्युम्नः= जिनका दयुम्न (धन) श्रेष्ठ हैँ
६४१. अमितविक्रमः= जिनका विक्रम अपरिमित -अपार है।
६४२. कालनेमीनिहा:= कालनेमि नामक असुर का हनन करने वाले ।
६४३. वीरः= जो दश शूर को जीतने वाले वीर (महावीर) हैं
६४४. शौरी:= जो शूर (सूर्य) कुल में उत्पन्न हुए हैं ।
६४५. शूरजनेश्वरः= इंद्र आदि शूरवीरों के भी शासक ।
६४६. त्रिलोकात्मा:= तीनों लोकों की आत्मा हैं ।
६४७. त्रिलोकेशः= जिनकी आज्ञा से तीनों लोक अपना कार्य करते हैं ।
६४८. केशवः= ब्रह्मा,विष्णु और शिव नाम की शक्तियां केश हैं , उनसे युक्त होने वाले ।
६४९. केशिहा:= केशी नामक असुर को मारने वाले ।
६५०. हरिः= अविद्यारूप कारण सहित संसार के भय को हर लेते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

विशुद्धात्मा विशोधन अनिरुद्‌घ, अर्चित कुम्भ प्रद्‌युम्न प्यारा ।
अप्रतिरथ अर्चिष्मान शौरी, अमित विक्रम केशव हरि धारा ।।
कालनेमि शूरजनेश्वर, त्रिलोकेश त्रिलोकात्म अपारा ।
केशिहा है विष्णु नाम यह, "रामप्रकाश" जप हो निस्तारा ।।३७।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णु: वीरो अनंतो धनंजयः ।।७०।।
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृत् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ।।७१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

६५१. कामदेवः= कामना किये जाते हैं , इसलिए काम स्वरूप हैं और देव भी हैं ।
६५२. कामपालः= कामियों की कामनाओं का पालन करने वाले हैं ।
६५३. कामी:= पूर्ण काम -अनैच्छिक हैं ।
६५४. कान्तः= परम सुन्दर देह वाले हैं ।
६५५. कृतागमः= जिन्होंने श्रुति,स्मृति आदि आगम (शास्त्र) रचे हैं ।
६५६. अनिर्देश्यवपुः= जिनका रूप निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता ।
६५७. विष्णुः= जिनकी प्रचुर कान्ति पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके स्थित है।
६५८. वीरः= जो शौर्य गति आदि से युक्त हैं।
६५९. अनन्तः= देश, काल, वस्तु, सर्वात्मा आदि से अपरिच्छिन्न ।
६६०. धनञ्जयः= अर्जुन के रूप में जिन्होंने दिग्विजय के समय बहुत सा धन जीता था ।
६६१. ब्रह्मण्यः= जो तप,वेद,ब्राह्मण - विद्वानों और ज्ञान के हितकारी हैं ।
६६२. ब्रह्मकृत्:= तपादि के करने वाले हैं ।
६६३. ब्रह्मा:= ब्रह्मरूप से सबकी रचना करने वाले हैं ।

६६४. ब्रहम;= बड़े तथा बढ़ानेवाले हैं ।
६६५. ब्रह्मविवर्धनः= तपादि को बढ़ाने वाले हैं ।
६६६. ब्रह्मविद्;= वेद तथा वेद के अर्थ को यथावत जानने वाले हैं ।
६६७. ब्राह्मणः= ब्राह्मण अर्थात् विद्वत ब्रह्म रूप है ।
६६८. ब्रह्मी:= ब्रह्म के शेषभूत जिनमे हैं ।
६६९. ब्रह्मज्ञः= जो अपने आत्मभूत वेदों को जानते हैं ।
६७०.. ब्राह्मणप्रियः= जो ब्रह्मविद् विद्वानों (ब्राह्मणों) को प्रिय हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

कामपाल कृतागम कामी, कामदेव अनन्त विष्णु सांई ।
अनिर्देश्यवपु वीर धनञ्जय, ब्रह्मण्य ब्रह्मकृत ब्रह्मराई ।।
ब्रह्मा ब्राह्मण ब्रह्मविद ब्रह्मी, ब्रह्मप्रिय ब्रह्मविवर्धन पाई ।
सच्चिदानन्द विष्णु परब्रह्म, "रामप्रकाश" गुण ताहित गाई ।।३८।।

श्री विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ।।७२।।
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ।।७३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

६७१. महाक्रमः= जिनका डग महान बलशाली है ।
६७२. महाकर्मा:= जगत की उत्पत्ति जैसे जिनके कर्म महान हैं ।
६७३. महातेजा:= जिनका तेज महान है ।
६७४. महोरगः= जो महान उरग (वासुकि सर्प रूप) काल है ।
६७५. महाक्रतुः= जो महान क्रतु (यज्ञ) है ।
६७६. महायज्वा:= महान हैं और लोक संग्रह के लिए यज्ञानुष्ठान करने से यज्वा भी हैं ।
६७७. महायज्ञः= महान और यज्ञ स्वरूप हैं ।
६७८. महाहविः= महान हैं और हवि (यज्ञ -प्रसाद) हैं
६७९. स्तव्यः= जिनकी सब स्तुति करते हैं , किन्तु स्वयं किसीकी स्तुति नहीं करते ।
१८०. स्तवप्रियः= जिनकी ,नर,किन्नर देवाधिदेव इत्यादि सभी स्तुति करते हैं।
६८१. स्तोत्रम्;= वह गुण कीर्तन हैं , जिससे उन्ही की स्तुति की जाती है ।
६८२. स्तुतिः= स्तवन क्रिया युक्त है ।
६८३. स्तोता:= सर्वरूप होने के कारण स्तुति करने वाले भी स्वयं हैं ।
६८४. रणप्रियः= जिन्हे रण भूमि प्रिय है ।
६८५. पूर्णः= जो समस्त कामनाओं और शक्तियों से संपन्न हैं ।
६८६. पूरयिता:= जो केवल पूर्ण ही नहीं हैं अपितु सबको संपत्ति से पूर्ण करने भी वाले हैं ।
६८७. पुण्यः= स्मरण मात्र से पापों का क्षय करने वाले हैं ।
६८८. पुण्यकीर्तिः= जिनकी कीर्ति मनुष्यों को पुण्य प्रदान करने वाली है ।
६८९. अनामयः= जो व्याधियों से पीड़ित नहीं होते ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

महाक्रम महातेजा महोरग, महाकर्मा महायज्ञ प्यारा ।
महाक्रतु महाहवि रणप्रिय, सत्वप्रिय पूरियता सो सारा ।।
पूण्यकीर्ति स्तोत्र पूर्ण पूण्य, अनामय सत्वप्रिय अपारा ।
"रामप्रकाश" सृष्टि मय विष्णु, ताहि नित्य प्रणाम हमारा ।।३९।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ।।७४।।
सद्गतिः सकृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ।।७५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

६९०. मनोजवः= जिनका मन वायु वेग के समान तीव्र है ।
६९१. तीर्थंकरः= जो चौदह विद्याओं और वेद विद्याओं के कर्ता तथा वक्ता हैं ।
६९२. वसुरेताः= स्वर्ण जिनका वीर्य है ।
६९३. वसुप्रदः= जो खुले हाथ से अभय दान धन देते हैं ।
६९४. वासुप्रदः= जो भक्तों को मोक्षरूप उत्कृष्ट फल देते हैं ।
६९५. वासुदेवः= वासुदेवजी के पुत्र ।
६९६. वसुः= जिनमे सब भूत प्राणियों का निवास हैं ।
६९७. वसुमना:= जो समस्त पदार्थों में सामान्य भाव से बसते हैं ।
६९८. हविः= जो ब्रह्म -यज्ञ को अर्पण किया जाता है ।
६९९. सद्गतिः= जिनकी गति यानी बुद्धि श्रेष्ठ है ।
७००. सत्कृतिः= जिनकी जगत की उत्पत्ति आदि कृति श्रेष्ठ है ।
७०१. सत्ता:= सजातीय, विजातीय भेद से रहित अनुभूति हैं ।
७०२.सद्भूतिः= जो अबाधित और बहुत प्रकार से भासित हैं ।
७०३. सत्परायणः= सत्पुरुषों के श्रेष्ठ स्थान हैं ।
७०४. शूरसेनः= जिनकी सेना शूरवीर है और हनुमान जैसे शूरवीर उनकी सेना में हैं ।
७०५. यदुश्रेष्ठः= यदुवंशियों में प्रधान हैं ।
७०६. सन्निवासः= विद्वानों के आश्रय -अधिष्ठाता अधिष्ठान है ।
७०७. सुयामुनः= जिनके यामुन अर्थात यमुना सम्बन्धी सुन्दर हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

मनोजव तीर्थँकर वसुरेता, वासुदेव वसुमना सतवारी ।
सत्यपरायण सद्गति सद्भूति, सत्कृति यदुश्रेष्ठ हवि सारी ।।
सन्निवास सुयामुन शूरसेन, वसुप्रद वसु सता बलिहारी ।
"रामप्रकाश" विश्वधृक विष्णु, नमो नमो नित वार हजारी ।।४०।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयो - अनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरो - अथापराजितः ।।७६।।
विश्वमूर्तिमहार्मूर्तिः दीप्तमूर्तिः अमूर्तिमान ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ।।७७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

७०८. भूतावासः= जिनमे सर्व भूत मुख्य रूप से निवास करते हैं ।
७०९. वासुदेवः= जगत को माया से आच्छादित करते हैं और देव भी हैं ।
७१०. सर्वासुनिलयः= सम्पूर्ण प्राण जिस जीवरूप आश्रय में लीन हो जाते हैं ।
७११. अनलः= जिनकी शक्ति और संपत्ति की समाप्ति नहीं है ।
७१२. दर्पहा:= धर्मविरुद्ध मार्ग में रहने वालों का दर्प -अहंकार नष्ट करते हैं ।
७१३. दर्पदः= धर्म मार्ग में रहने वालों को दर्प (गर्व) स्वाभिमान देते हैं ।
७१४. दृप्तः= अपने आत्मारूप अमृत का आस्वादन करने के कारण नित्य प्रमुदित रहते हैं।

७१५. दुर्धरः= जिन्हे बड़ी कठिनता से धारण किया जा सकता है ।
७१६. अथापराजितः= जो किसी से कदापि पराजित नहीं होते ।
७१७. विश्वमूर्तिः= वैराट रूप में विश्व जिनकी मूर्ति है ।
७१८. महामूर्तिः= जिनकी मूर्ति बहुत बड़ी महान है ।
७१९. दीप्तमूर्तिः= जिनकी मूर्ति दीप्तमति ज्योतिर्मय है ।
७२०. अमूर्तिमान्:= जिनकी कोई कर्मजन्य साकार मूर्ति नहीं है ।
७२१. अनेकमूर्तिः= भक्तों का उपकार करने वाली अनेकों मूर्तियां (अवतार) धारण करते हैं ।
७२२. अव्यक्तः= जो मन वाणी व्यक्त (प्रकट) नहीं होते , अवाच्य ।
७२३. शतमूर्तिः= जिनकी विकल्पजन्य अनेक मूर्तियां हैं ।
७२४. शताननः= जो सैंकड़ों मुख वाले है-वैराट है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

दर्पहा दर्पद दृप्त दुर्धर अव्यक्त, दीप्तमूर्ति महामूर्ति छाया ।
शतमूर्ति रु अनेकमूर्ति विश्व, वासुदेव भूतावास अमाया ।।
सर्वासुनिलय अनल अमूर्ति, विष्णु शतानन अमोघ आया ।
अनन्त अजय गोविन्द भज, "रामप्रकाश" भक्त सुख पाया ।।४१।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

एको नैकः सवः कः किं यत - तत - पद्मनुत्तमम ।
लोकबंधु: लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ।।७८।।
सुवर्णोवर्णो हेमांगो वरांग: चंदनांगदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरऽचलश्चलः ।।७९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

७२५. एकः= जो सजातीय, विजातीय और बाकी भेदों से शून्य हैं ।
७२६. नैकः= जिनकी माया से अनेक रूप प्रस्तारित होते हैं ।
७२७. सवः= वो स्वयँ यज्ञ हैं , जिससे सोम निकाला जाता है ।
७२८. कः= जो सुख स्वरूप ।
७२९. किम:= जो विचार करने योग्य है ।
७३०. यत्:= जिनसे सब भूत उत्पन्न होते हैं ।
७३१. तत्:= जो विस्तार करता है ।
७३२. पद्मनुत्तमम्:= वह पद हैं और उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं है, इसलिए अनुत्तम भी हैं ।
७३३.लोकबन्धुः= जिनमे सब लोक बंधे रहते हैं ।
७३४. लोकनाथः= जो लोकों से याचना किये जाते हैं और उनपर शासन करते हैं ।
७३५. माधवः= मधुवंश में उत्पन्न होने वाले हैं ।
७३६. भक्तवत्सलः= जो भक्तों के प्रति स्नेहयुक्त रक्षक हैं ।
७३७. सुवर्णवर्णः= जिनका वर्ण सुवर्ण के समान क्रान्तिमय है ।
७३८. हेमांगः= जिनका शरीर हेम (सुवर्ण) के समान है ।
७३९. वरांगः= जिनके अंग वर (सुन्दर) हैं ।
७४०. चन्दनांगदी:= जो चन्दनों और अंगदों (भुजबन्द) से विभूषित हैं ।
७४१. वीरहा:= धर्म की रक्षा के लिए दैत्यवीरों का हनन करने वाले हैं ।
७४२. विषमः= जिनके समान कोई नहीं है ।
७४३. शून्यः= जो समस्त विशेषों से रहित होने के कारण शून्य के समान हैं ।
७४४. घृताशी:= जिनकी आशिष घृत यानी विगलित हैं ।
७४५. अचलः= जो किसी भी तरह से विचलित - चलायमान नहीं होते ।
७४६. चलः= जो वायुरूप से चलते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

एक नेक यत तत क किम, पद्मनुतम लोकबन्धु ध्याई ।
भक्तवत्सल सुवर्ण वर्ण, लोकनाथ रु माधव गाई ।।
चन्दनांगदी वीरहा विषम, घृताशी चल अचल ताई ।
वरांग शून्य व्याप्त चेतन, "रामप्रकाश" विष्णु सत सांई ।।४२।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ।।८०।।
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्रृंगो गदाग्रजः ।।८१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

७४७. अमानी:= जिन्हे अनात्म वस्तुओं में आत्माभिमान नहीं है ।
७४८. मानदः= जो भक्तों को आदर मान देते हैं ।
७४९. मान्यः= जो सबके सम्माननीय पूजनीय हैं।
७५०. लोकस्वामी:= चौदहों लोकों के स्वामी हैं ।
७५१. त्रिलोकधृक्:= तीनों लोकों को धारण करने वाले हैं ।
७५२. सुमेधा:= जिनकी मेधा अर्थात प्रज्ञा (अन्तर्बुद्धि) सुन्दर है ।
७५३. मेधजः= मेध अर्थात यज्ञ में उत्पन्न होने वाले हैं ।
७५४. धन्यः= कृतार्थ -कल्याण रूप हैं ।
७५५. सत्यमेधः= जिनकी मेधा सत्य मय है ।
७५६. धराधरः= जो अपने सम्पूर्ण अंशों से पृथ्वी को धारण करते हैं ।
७५७. तेजोवृषः= आदित्य रूप से सदा तेज की वर्षा करते हैं ।
७५८. द्युतिधरः= द्युति को धारण करने वाले हैं ।
७५९. सर्वशस्त्रभृतां वरः= समस्त शस्त्रधारियों में सर्व श्रेष्ठ ।
७६०. प्रग्रहः= भक्तों द्वारा समर्पित किये हुए पुष्पादि ग्रहण करने वाले हैं ।
७६१. निग्रहः= अपने अधीन करके सबका निग्रह करते हैं ।
७६२. व्यग्रः= जिनका कभी विनाश नहीं होता ।
७६३. नैकश्रृंगः= जो चार सींग (भरण पोषणयुक्त रक्षणादि) शक्ति वाले हैं ।
७६४. गदाग्रजः= मंत्र से पहले ही प्रकट होते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

लोक स्वामी मान्य मानद, त्रिलोक अमानी महावीरा ।
सत्यमेध सुमेधा मेधज, तेजोवृष धराधर द्युतिधीरा ।।
सर्व शास्त्रभृतावर प्रग्रह व्यग्र, निग्रह गदाग्रज गँभीरा ।
नैकश्रृंग अविषय विष्णु, राघव "रामप्रकाश" सधीरा ।।४३।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

चतुर्मूर्ति: चतुर्बाहु: श्चतुर्व्यूह: चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भाव: चतुर्वेदविदेकपात ।।८२।।
समावर्तो - अनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ।।८३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

७६५. चतुर्मूर्तिः= विश्वयोनि मे जिनकी चार मूर्तियां हैं ।
७६६. चतुर्बाहुः= चतुर्व्यूह में जिनकी चार भुजाएं हैं

७६७. चतुर्व्यूहः= जिनके पर,विभव,अर्चा आदि चार व्यूह हैं ।
७६८. चतुर्गतिः= जिनके चार आश्रम और चार वर्णों की सामाजिक व्यवस्थित गति है ।
७६९. चतुरात्मा:= राग द्वेष से रहित जिनका मन चतुर है ।
७७०. चतुर्भावः= जिनसे धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष पैदा होते हैं ।
७७१. चतुर्वेदविद्:= चारों वेदों को जानने वाले सर्व ज्ञाता ।
७७२. एकपात्:= जिनका एक पाद महतत्त्व महान है ।
७७३. समावर्तः= संसार चक्र को भली प्रकार घुमाने वाले हैं ।
७७४. निवृत्तात्मा:= जिनका मन विषयों से निवृत्त है ।
७७५. दुर्जयः= जो किसी से जीते नहीं जा सकते ।
७७६. दुरतिक्रमः= जिनकी आज्ञा का उल्लंघन सूर्यादि भी नहीं कर सकते ।
७७७. दुर्लभः= दुर्लभ भक्ति से प्राप्त होने वाले हैं ।
७७८. दुर्गमः= कठिन साधना से किये उपायों से जाने जाते हैं ।
७७९. दुर्गः= कई विघ्नों से आहत हुए पुरुषों द्वारा कठिनता से प्राप्त किये जाते हैं ।
७८०. दुरावासः= जिन्हे बड़ी कठिनता से चित्त में बसाया जाता है ।
७८१. दुरारिहा:= दुष्ट मार्ग में चलने वालों को मारते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

चतुमूर्ति चतुर्बाहु दुर्जय, चतुर्व्यूह चतुर्गति वारा ।
चतुरात्मा चतुर्भाव दुर्गम, चतुर्वेदविद दुर्ग सारा ।।
एकपात समावर्त दुर्लभ, दुरारिहा दुरतिक्रम हारा ।
दुरावास रु निवृत्तात्मा, "रामप्रकाश" हरिहर धारा ।।४४।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ।
इंद्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ।।८४।।
उद्भवः सुंदरः सुंदो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः श्रृंगी जयंतः सर्वविज - जयी ।।८५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

७८२. शुभांगः= सुन्दर अंगों से ध्यान किये जाते हैं ।
७८३. लोकसारंगः= लोकों के सार तत्त्व हैं ।
७८४. सुतन्तुः= जिनका तंतु - यह विस्तृत जगत सुन्दर हैं ।
७८५. तन्तुवर्धनः= उसी तंतु को बढ़ाते या काटते हैं ।
७८६. इन्द्रकर्मा:= जिनका कर्म इंद्र के कर्म के समान ही है ।
७८७. महाकर्मा:= जिनके कर्म अतिशय महान हैं ।
७८८. कृतकर्मा:= जिन्होंने धर्म रूप कर्म किया है ।
७८९. कृतागमः:= जिन्होंने वेदरूप आगम बनाया है ।
७९०. उद्भवः= जिनका जन्म नहीं होता-अजन्मा है ।
७९१. सुन्दरः= विश्व से बढ़कर सौभाग्यशाली ।
७९२. सुन्दः= शुभ उन्दन (आर्द्रभाव) करते हैं ।
७९३. रत्ननाभः= जिनकी नाभि रत्न के समान सुन्दर है ।
७९४. सुलोचनः= जिनके लोचन अतिसुन्दर हैं ।
७९५. अर्कः= ब्रह्मा आदि पूजनीयों के भी परम पूजनीय हैं ।
७९६. वाजसनः= याचकों को वाज (अन्नादि) देते हैं ।
७९७. श्रृंगी:= प्रलय समुद्र में सींगवाले मत्स्यविशेष का रूप धारण करने वाले हैं ।
७९८. जयन्तः= शत्रुओं को अतिशय से जीतने वाले हैं ।

७९९. सर्वविज्जयी:= जो सर्ववित हैं और जयी - विजयी हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

लोकसारँग रु तन्तुवर्धन, कृतागम सुभांग प्यारा ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा सतन्तु, उद्भव सुन्दर सुन्दवारा ।।
सर्वविजयी रु जयन्त शृँगी, कृतकर्मा वाजसन सारा ।
रत्ननाभ सुलोचन अर्क ही, "रामप्रकाश" है स्वयँ अपारा ।।४५।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

सुवर्ण बिंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाहृदो महागर्तो महाभूतो महानिधः ।।८६।।
कुमुदः कुंदरः कुंदः पर्जन्यः पावनो - अनिलः ।
अमृतांशो - अमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ।।८७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

८००. सुवर्णबिन्दुः= जिनके अवयव (अँग) सुवर्ण के समान हैं ।
८०१. अक्षोभ्यः= जो राग द्वेषादि और देवशत्रुओं से क्षोभित नहीं होते ।
८०२. सर्ववागीश्वरेश्वरः= ब्रह्मादि समस्त वागीश्वरों के भी ईश्वर हैं ।
८०३. महाहृदः= एक बड़े सरोवर के समान गहन स्वभाव हैं ।
८०४. महागर्तः= जिनकी माया गर्त (गड्ढे) के समान दुस्तर है ।
८०५. महाभूतः= तीनों काल से अनवच्छिन्न (विभाग रहित) स्वरूप हैं ।
८०६. महानिधिः= जो महान और निधि स्वरूप भी हैं ।
८०७.. कुमुदः= कु (पृथ्वी) को उसका भार उतारते हुए मोदित करते हैं ।
८०८. कुन्दरः= कुन्द पुष्प के समान शुद्ध फल देते हैं ।
८०९. कुन्दः= कुन्द के समान सुन्दर अंगवाले हैं ।
८१०. पर्जन्यः= पर्जन्य (मेघ) के समान कामनाओं की वर्षा करने वाले हैं ।
८११. पावनः= स्मरणमात्र से पवित्र करने वाले हैं ।
८१२. अनिलः= जो इल (प्रेरणा करने वाला) से रहित हैं ।
८१३. अमृतांशुः= अमृत का भोग करने वाले हैं ।
८१४. अमृतवपुः= जिनका शरीर जरा- मरण से रहित है ।
८१५. सर्वज्ञः= जो सब कुछ जानते हैं -अन्तर्यामी ।
८१६. सर्वतोमुखः= सब ओर नेत्र, शिर और मुख वाले वैराट हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

सर्ववागीश्वर अक्षोभ्य कुन्दर, स्वर्णबिन्दु महाहृद भाई ।
महगर्त महाभूत अनिल, कुन्द महानिधि कुमुद साँई ।।
पर्जन्य रु अमृतांशु पावन, सर्वोमुख अमृतवपु झाँई ।
सर्वज्ञ विष्णु सर्व हित साधन, "रामप्रकाश" अपार अपाई ।।४६।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधो औदुंबरो - अश्वत्थ: चाणूरांध्रनिषूदनः ।।८८।।
सहस्रार्चिः सप्तजिव्हः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघो - अचिंत्यो भयकृत् - भयनाशनः ।।८९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

८१७. सुलभः= केवल समर्पित भक्ति से सुखपूर्वक मिल जाने वाले ।
८१८. सुव्रतः= जो सुन्दर व्रत (भोजन) करते हैं ।

८१९. सिद्धः= जिनकी सिद्धि दूसरे के अधीन नहीं है ।
८२०. शत्रुजित्= देव पुरुषों के शत्रुओं को जीतने वाले हैं ।
८२१. शत्रुतापनः= देव पुरुषों के शत्रुओं को तपानेवाले हैं ।
८२२. न्यग्रोधः= जो नीचे की ओर उगते हैं और सबके ऊपर विराजमान हैं ।
८२३. उदुम्बरः= अम्बर से भी ऊपर उन्नत हैं ।
८२४. अश्वत्थः= श्व अर्थात कल भी रहनेवाला नहीं है ।
८२५. चाणूरान्ध्रनिषूदनः= चाणूर नामक अन्ध्र जाति के वीर को मारने वाले हैं ।
८२६. सहस्रार्चिः= जिनकी सहस्र अर्चियाँ (किरणें) हैं ।
८२७. सप्तजिह्वः= उनकी अग्निरूपी सात ज्वालामुखी जिह्वाएँ हैं ।
८२८. सप्तैधाः= जिनकी सात ऐधाएँ हैं अर्थात दीप्तियाँ हैं ।
८२९. सप्तवाहनः= सात घोड़े (सूर्यरूप) जिनके वाहन हैं ।
८३०. अमूर्तिः= जो मूर्तिहीन , अदृश्य अरूप है।
८३१. अनघः= जिनमे अघ (दुःख) या पाप नहीं है ।
८३२. अचिन्त्यः= सब प्रमाणों के अविषय हैं ।
८३३. भयकृत्= भक्तों का भय काटने वाले हैं ।
८३४. भयनाशनः= धर्म का पालन करने वालों का भय नष्ट करने वाले हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

सुलभ सुव्रत सिद्ध शत्रुजित, शत्रुतापन उदम्बर वासी ।
चाणूरान्ध्रनिषुदन अनघ, सप्तजिह्व सप्तवाहन रासी ।।
सप्तैधा सहस्रिर्चि भयकृत, अचिन्त्य अमूर्ति अनासी ।
भयनाशन विष्णु सुखरूप, "रामप्रकाश" सो अविनाशी ।।४७।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अणु:बृहत कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ।।९०।।
भारभृत् - कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ।।९१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

८३५. अणुः= जो अत्यंत सूक्ष्म हैं ।
८३६. बृहत्= जो महान से भी अत्यंत महान हैं ।
८३७. कृशः= जो अस्थूल हैं ।
८३८. स्थूलः= जो सर्वात्मक हैं ।
८३९. गुणभृत्= जो सत्व, रज और तम गुणों के अधिष्ठाता हैं ।
८४०. निर्गुणः= जिनमे तीनोँ गुणों का अभाव है ।ण
८४१. महान्= जो अंग, शब्द, शरीर और स्पर्श से रहित हैं और महान हैं ।
८४२. अधृतः= जो किसी से भी धारण नहीं किये जाते ।
८४३. स्वधृतः= जो स्वयं अपने आपसे ही धारण किये जाते हैं ।
८४४. स्वास्यः= जिनका ताम्रवर्ण मुख अत्यंत सुन्दर है ।
८४५. प्राग्वंशः= जिनका वंश भक्ति भक्त सबसे पहले हुआ है ।
८४६. वंशवर्धनः= अपने वंशरूप प्रपंच को बढ़ाने अथवा नष्ट करने वाले हैं
८४७. भारभृत्= अनंतादिरूप से पृथ्वी का भार उठाने वाले हैं ।
८४८. कथितः= सम्पूर्ण वेदों में जिनका कथन है ।
८४९. योगी= योग ज्ञान को कहते हैं , उसी से प्राप्त होने वाले हैं ।
८५०. योगीशः= जो अंतराय अपेक्षाओं से रहित हैं ।

८५१. सर्वकामदः= जो सब कामनाएं देते हैं।
८५२. आश्रमः= जो समस्त भटकते हुए पुरुषों के लिए आश्रयदाता आश्रम के समान हैं।
८५३. श्रमणः= जो समस्त अविवेकियों को संतप्त करते हैं।
८५४. क्षामः= जो सम्पूर्ण प्रजा को क्षाम अर्थात क्षीण करते हैं।
८५५. सुपर्णः= जो संसार वृक्षरूप हैं और जिनके छन्द रूप सुन्दर पत्ते हैं ।
८५६. वायुवाहनः= जिनके भय से वायु चलती है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

गुणभृत स्वधृत अवधृत, निर्गुण महान अधृत राशी ।
अणु बृहत स्थूल कृश क्षाम, वायु वाहन सुपर्ण आशी ।।
श्रमण आश्रम सर्वकामद, योगी योगीश कथित वाशी ।
स्वासय रु प्राग्वँश विष्णु, "रामप्रकाश" गुरू अविनाशी ।।४८।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

धनुर्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियंता नियमो यमः ।।९२।।
सत्त्ववान सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्हो - अर्हः प्रियकृत - प्रीतिवर्धनः ।।९३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

८५७. धनुर्धरः= जिन्होंने राम के रूप में महान धनुष धारण किया था ।
८५८. धनुर्वेदः= जो दशरथकुमार धनुर्वेद जानते हैं ।
८५९. दण्डः= जो दमन करनेवालों के लिए दण्ड हैं ।
८६०. दमयिता:= जो यम और राजा के रूप में प्रजा का दमन करते हैं ।
८६१.. दमः= दण्डकार्य और उसका फल दम अर्थात् साम दाम दण्ड भेद युक्त ।
८६२.. अपराजितः= जो शत्रुओं से पराजित नहीं होते ।
८६३.सर्वसहः= समस्त कर्मों में सर्व समर्थ हैं ।
८६४. अनियन्ता:= सबको अपने अपने कार्य में नियुक्त करते हैं ।
८६५. नियमः= जिनके लिए कोई नियम नहीं है ।
८६६. अयमः= जिनके लिए कोई यम अर्थात मृत्यु नहीं है ।
८६७. सत्त्ववान्:= जिनमे शूरता-पराक्रम आदि सत्व हैं ।
८६८ सात्त्विकः= जिनमे सत्वगुण प्रधानता से स्थित है ।
८६९. सत्यः= सभी काल में सनातन अक्षय में साधू हैं ।
८७०. सत्यधर्मपरायणः= जो सत्य हैं और धर्मपरायण भी हैं ।
८७१. अभिप्रायः= प्रलय के समय संसार जिनके सम्मुख जाता है ।
८७२. प्रियार्हः= जो प्रिय ईष्ट वस्तु निवेदन करने योग्य है ।
८७३. अर्हः= जो पूजा के साधनों से पूजनीय हैं ।
८७४. प्रियकृत्:= जो स्तुतिआदि के द्वारा भजने वालों का प्रिय करते हैं ।
८७५. प्रीतिवर्धनः= जो भजने वालों की प्रीति भी बढ़ाते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

धनुर्धर दण्ड धनुर्वेद दम, अपराजित अनियन्ता सोई ।
अयम सर्वसह सत्यवान रु, सत्यधर्म परायण सतोई ।।
अभिप्राय प्रियकृत प्रियार्ह, प्रीतिवर्धन दमयिता होई ।
सात्विक नियम अर्ह विष्णु, "रामप्रकाश" यह मानत कोई ।।४९।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ।।९४।।
अनंतो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकधिष्ठानमद्भुतः ।।९५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

८७६. विहायसगतिः= जिनकी गति अर्थात आश्रय अवकाश है ।
८७७. ज्योतिः= जो स्वयं ही प्रकाशित होता ।
८७८. सुरुचिः= जिनकी रुचि अति सुन्दर है ।
८७९. हुतभुक्:= जो यज्ञ की आहुतियों को भोगते हैं ।
८८०. विभुः= जो सर्वत्र वर्तमान हैं और तीनों लोकों के प्रभुत्व के स्वामी है।
८८१. रविः= जो रसों को ग्रहण करते हैं।
८८२. विरोचनः= जो विविध प्रकार से सुशोभित होते हैं।
८८३. सूर्यः= जो श्री (शोभा) को जन्म देते हैं।
८८४. सविता:= सम्पूर्ण जगत का प्रसव (उत्पत्ति) करने वाले हैं ।
८८५. रविलोचनः= रवि जिनका लोचन अर्थात नेत्र हैं ।
८८६. अनन्तः= जिनमे नित्य, सर्वगत और देश काल परिच्छेद का अभाव है।
८८७. हुतभुक्:= जो हवन किये हुए को भोगते हैं।
८८८. भोक्ता= जो जगत का पालन करते हैं।
८८९. सुखदः= जो भक्तों को मोक्षरूप सुख देते हैं।
८९०. नैकजः= जो धर्मरक्षा के लिए बारबार जन्म लेते हैं।
८९१. अग्रजः= जो सबसे आगे उत्पन्न होता है।
८९२. अनिर्विण्णः= जिन्हे सर्वकामनाएँ प्राप्त होने के कारण अप्राप्ति का खेद नहीं है।
८९३. सदामर्षी:= साधुओं को अपने सम्मुख क्षमा करते हैं।
८९४. लोकाधिष्ठानम्:= जिनके आश्रय से तीनों लोक स्थित हैं।
८९५. अद्भुतः= जो अपने स्वरूप, शक्ति, व्यापार और कार्य में अद्भुत है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

विहायगति रु ज्योति सुरुचि, सुखद भोक्ता अग्रज भाया ।
हुतभुक वीरोचन सूर्य सविता, रविलोचन अनन्त अमाया ।।
अनिर्विण रु नैकज अद्भुत, लोकाधिष्ठान सदामर्षी राया ।
सम विषम सर्वत्र विष्णु है, "रामप्रकाश" त्रयलोक अथाया ।।५०।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

सनात् - सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत स्वस्ति स्वस्तिभुक स्वस्तिदक्षिणः ।।९६।।
अरौद्रः कुंडली विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ।।९७।।

शब्दार्थ~पद्यांश

८९६. सनात्:= काल भी जिनका एक विकल्प ही है ।
८९७. सनातनतमः= जो ब्रह्मादि सनतनों से भी अत्यंत सनातन हैं ।
८९८. कपिलः= बडवानल रूप में जिनका वर्ण कपिल है ।
८९९. कपिः= जो सूर्य रूप से जल को अपनी किरणों से पीते हैं।
९००. अव्ययः= प्रलयकाल में जगत में विलीन होते हैंऋ।

९०१. स्वस्तिदः= भक्तों को स्वस्ति अर्थात मंगल देते हैं ।
९०२. स्वस्तिकृत्:= जो स्वस्ति -कल्याण ही करते हैं ।
९०३. स्वस्ति:= जो परमानन्द स्वरूप हैं ।
९०४. स्वस्तिभुक्:= जो स्वस्ति भोगते हैं और भक्तों की स्वस्ति - रक्षा करते हैं ।
९०५. स्वस्तिदक्षिणः= जो स्वस्ति करने में समर्थ हैं ।
९०६. अरौद्रः= कर्म, राग और कोप जिनमे ये तीनों रौद्र नहीं हैं ।
९०७. कुण्डली:= सूर्य मण्डल के समान कुण्डल धारण किये हुए हैं ।
९०८. चक्री:= सम्पूर्ण लोकों की रक्षा के लिए मनस्तत्त्वरूप सुदर्शन चक्र धारण किया है ।
९०९. विक्रमी:= जिनका डग तथा शूरवीरता समस्त पुरुषों से विलक्षण है ।
९१०.. ऊर्जितशासनः= जिनका श्रुति-स्मृतिस्वरूप शासन अत्यंत उत्कृष्ट है ।
९११. शब्दातिगः= जो शब्दातीत होने के कारण शब्द से कहे नहीं जा सकते ।
९१२. शब्दसहः= समस्त वेद तात्पर्य रूप से जिन का वर्णन करते हैं।
९१३. शिशिरः= जो तापत्रय से तपे हुओं के लिए विश्राम का स्थान हैं ।
९१४. शर्वरीकरः= ज्ञानी-अज्ञानी दोनों की शर्वरीयों (रात्रि) के करने वाले हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

सनातन कपिल सनात विक्रम, उर्जितशासन शब्दसह धारा ।
स्वस्तिकृत स्वस्ति स्वस्तिभुक, अव्यय कपि स्वस्ति भुक वारा ।।
स्वस्ति दक्षिण अरौद्र कुण्डली, शब्दातिग शिशिर चक्री कारा ।
शर्वरीसह विक्रमी शब्दसह, "रामप्रकाश" सत विष्णु अपारा ।।५१।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।।९८।।
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः संतो जीवनः पर्यवस्थितः ।।९९।।

शब्दार्थ~पद्यांश

९१५. अक्रूरः= जिनमे क्रूरता का अभाव है ।
९१६. पेशलः= जो कर्म, मन, वाणी और शरीर से सुन्दर हैं ।
९१७. दक्षः= बढ़ा-चढ़ा, शक्तिमान तथा शीघ्र कार्य करने वाली ये तीनों दक्षता जिनमे है ।
९१८. दक्षिणः= जो सब ओर जाते हैं और सबको मारते हैं ।
९१९. क्षमिणांवरः= जो क्षमा करने वाले योगियों आदि में श्रेष्ठ हैं ।
९२०. विद्वत्तमः= जिन्हे सब प्रकार का ज्ञान है और किसी को नहीं है ।
९२१. वीतभयः= जिनका संसारिकरूप भय बीत (निवृत्त हो) गया है ।
९२२. पुण्य श्रवण कीर्तनः= जिनका श्रवण और कीर्तन पुण्यकारक है ।
९२३. उत्तारणः= संसार सागर से पार उतारने वाले हैं ।
९२४. दुष्कृतिहा:= पाप नाम की दुष्कृतियों का हनन करने वाले हैं ।
९२५. पुण्यः= अपनी स्मृतिरूप वाणी से सबको पुण्य का उपदेश देने वाले हैं ।
९२६. दुःस्वप्ननाशनः= दुःस्वप्नों को नष्ट करने वाले हैं ।
९२७. वीरहा:= संसारियों को मुक्ति देकर उनकी गतियों का हनन करने वाले हैं ।
९२८. रक्षणः= तीनों लोकों की रक्षा करने वाले हैं ।
९२९. सन्तः= सन्मार्ग पर चलने वाले सन्त रूप हैं ।
९३०. जीवनः= प्राणरूप से समस्त प्रजा को जीवित रखने वाले हैं ।
९३१. पर्यवस्थितः= विश्व को सब ओर से व्याप्त करके स्थित है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

अक्रूर पेशल दक्षिण पूण्य, क्षमिणावर दुष्कृतिहा सोई ।
दक्ष वीरहा सन्त जीवन, पूण्य श्रवण कीर्तन सब होई ।।
विद्वतम वीतभय उतारण, दुस्वप्न नाशन रक्षण जोई ।
पर्यवस्थित विष्णु नाम से, "रामप्रकाश" भय रहे न कोई ।।५२।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

अनंतरूपो - अनंतश्री: जितमन्यु: भयापहः ।
चतुरश्रो गंभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ।।१००।।
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मी: सुवीरो रुचिरांगदः ।
जननो जनजन्मादि: भीमो भीमपराक्रमः ।।१०१।।

शब्दार्थ~पद्यांश

९३२. अनन्तरूपः= जिनके विविध रूप अनंत हैं ।
९३३. अनन्तश्रीः= जिनकी श्री निधि अपरिमित है ।
९३४. जितमन्युः= जिन्होंने मन्यु अर्थात क्रोध को जीता है ।
९३५. भयापहः= जो सत पुरुषों का संस्कारजन्य भय नष्ट करने वाले हैं ।
९३६. चतुरश्रः= न्याय युक्त सब के प्रिय है ।
९३७. गंभीरात्मा:= जिनका मन गंभीर है ।
९३८. विदिशः= जो विविध प्रकार के कर्म फल देते हैं ।
९३९. व्यादिशः= इन्द्रादि को विविध प्रकार की आज्ञा देने वाले हैं ।
९४०. दिशः= सबको उनके कर्मों का फल देने वाले हैं ।
९४१. अनादिः= जिनका कोई आदि नहीं है ।
९४२. भूर्भूवः= भूमि आदि त्रय लोकों के भी आधार है ।
९४३. लक्ष्मीः= पृथ्वी की लक्ष्मी अर्थात शोभा हैं ।
९४४. सुवीरः= जो विविध प्रकार से सुन्दर स्फुरण करते हैं ।
९४५. रुचिरांगदः= जिनकी अंगद (भुजबन्द) कल्याण स्वरूप हैं ।
९४६.जननः= चौरासी लाख जीव- जन्तुओं को उत्पन्न करने वाले हैं ।
९४७. जनजन्मादिः= जन्म लेनेवाले जीव की उत्पत्ति के कारण हैं ।
९४८. भीमः= भय के कारण विशाल हैं ।
९४९. भीमपराक्रमः= जिनका पराक्रम असुरों के भय का कारण होता है ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

अनन्तरूप अनन्तश्री लक्ष्मी, भीमपराक्रम भीम भारी ।
जनजन्मादि जनन रुचिरांगद, भूर्भुव चतुर्श्र दिश चारी ।।
जितमन्यु गँभीरात्मा विदिश, अनादि व्यादिश ताप हारी ।
विष्णु सुवीर आप समर्थ, "रामप्रकाश" तिनकी बलिहारी ।।५३।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

आधारनिलयो - धाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ।।१०२।।
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्यु जरातिगः ।।१०३।।

शब्दार्थ~पद्यांश

९५०. आधारनिलयः= पृथ्वी आदि पंचभूत आधारों के भी आधार -अधिष्ठान है ।
९५१. अधाता:= जिनका कोई धाता (बनाने वाला) नहीं है ।

९५२. पुष्पहासः= पुष्पों के हास (खिलने)के समान जिनका प्रपंचरूप से विकास होता है ।
९५३. प्रजागरः= प्रकर्षरूप से जागने वाले हैं ।
९५४. ऊर्ध्वगः= सबसे ऊपर शासन हैं ।
९५५. सत्पथाचारः= जो सत्पथ का आचरण करते हैं ।
९५६. प्राणदः= जो मरे हुओं को जीवित कर सकते हैं ।
९५७. प्रणवः= जिनके वाचक ॐ कार का नाम प्रणव है ।
९५८. पणः= जो व्यवहार करने वाले हैं ।
९५९. प्रमाणम्:= जो स्वयं प्रमा रूप प्रमाण हैं ।
९६०. प्राणनिलयः= जिनमे प्राण अर्थात इन्द्रियां लीन होती है ।
९६१. प्राणभृत्:= जो अन्नरूप से प्राणों का पोषण करते हैं ।
९६२. प्राणजीवनः= प्राण नामक वायु से प्राणियों को जीवित रखते हैं ।
९६३. तत्त्वम्:= तथ्य, अमृत, सत्य ये सब शब्द जिनके वाचक हैं ।
९६४. तत्त्वविद्:= तत्व अर्थात स्वरूप को यथावत जानने वाले हैं ।
९६५. एकात्मा:= जो एक आत्मा स्वरूप हैं ।
९६६. जन्ममृत्युजरातिगः= जो न जन्म लेते हैं न मरते हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

पुष्पहास आधार निलय, जन्म मृत्युजरातिग नागा ।
प्रजागर अधाता प्राणद, प्रणव पण प्रमाण विभागा ।।
प्राणजीवन प्राणभृत तत्वम, तत्त्वविद एकात्म साग ।
सत्पथाचर ऊर्ध्वग प्राण, निलय विष्णु श्री अनुरागा ।।५४।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

भूर्भवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ।।१०४।।
यज्ञभृत् - यज्ञकृत् - यज्ञी यज्ञभुक् - यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृत - यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ।।१०५।।

शब्दार्थ~पद्यांश

९६७. भूर्भुवःस्वस्तरुः= भू,भुवः और स्वः ~ जिनका सार है , उनका होमादि करके प्रजा तरती है ।
९६८. तारः= संसार सागर से तारने वाले हैं ।
९६९. सविताः= सम्पूर्ण लोकों के उत्पन्न करने वाले हैं ।
९७०. प्रपितामहः= पितामह ब्रह्मा -सृष्टा के भी पिता है ।
९७१. यज्ञः= यज्ञ स्वरूप हैं ।
९७२. यज्ञपतिः= सर्व यज्ञों के स्वामी हैं ।
९७३. यज्वा:= जो यजमान रूप से स्थित हैं ।
९७४. यज्ञांगः= यज्ञ जिनके अंग हैं ।
९७५. यज्ञवाहनः= फल हेतु यज्ञों का वहन करने वाले हैं ।
९७६. यज्ञभृद् := यज्ञ को धारण कर उसकी रक्षा करने वाले हैं ।
९७७. यज्ञकृत्:= जगत के आरम्भ और अंत में यज्ञ करते हैं ।
९७८. यज्ञी:= अपने आराधनात्मक यज्ञों के शेषी हैं ।
९७९. यज्ञभुक्:= यज्ञ को भोगने वाले हैं ।
९८० यज्ञसाधनः= यज्ञ जिनकी प्राप्ति का साधन है ।
९८१. यज्ञान्तकृत्:= यज्ञ के फल की प्राप्ति कराने वाले हैं ।
९८२. यज्ञगुह्यम्:= यज्ञ द्वारा प्राप्त होने वाले ।
९८३.. अन्नम्:= भूतों (अन्नमय ब्रह्म) से खाये जाते हैं ।

९८४. अन्नादः= अन्न को खाने वाले हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

भूर्भुव स्वतरु तार सविता, प्रपितामह यज्ञ भारी ।
यज्ञवाहन यज्ञकृत यज्ञभृद, यज्ञभुक यज्ञकृत वारी ।।
यज्ञसाधन यज्ञान्तकृत यज्ञी, यज्ञगुह्यम अन्नाद सारी ।
अन्नम विष्णु परब्रह्म आप, "रामप्रकाश" ताकी बलिहारी ।।५५।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनंदनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ।।१०६।।
शंखभृन्नंदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ।।१०७।।

सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः इति।

शब्दार्थ~पद्यांश

९८५. आत्मयोनिः= आत्मा ही योनि है , इसलिए वे आत्मयोनि है ।
९८६. स्वयंजातः= निमित्त कारण भी वही हैं ।
९८७. वैखानः= जिन्होंने वराह रूप धारण करके पृथ्वी को खोदा था ।
९८८. सामगायनः= सामगान करने वाले है ।
९८९. देवकी नन्दनः= देवकी के पुत्र कृष्ण ।
९९०. स्रष्टा:= सम्पूर्ण लोकों के रचयिता हैं ।
९९१. क्षितीशः= क्षिति अर्थात पृथ्वी के ईश (स्वामी) हैं ।
९९२.पापनाशनः= पापों का नाश करने वाले हैं ।
९९३. शंखभृत्:= जिन्होंने पांचजन्य नामक शंख धारण किया है ।
९९४. नन्दकी:= जिनके पास विद्यामय नामक खडग है ।
९९५. चक्री:= जिनकी आज्ञा से संसारचक्र चल रहा है ।
९९६. शार्ङ्गधन्वा:= जिन्होंने शारँग नामक धनुष धारण किया है ।
९९७. गदाधरः= जिन्होंने कौमोदकी नामक गदा धारण किया हुआ है ।
९९८. रथांगपाणिः= जिनके हाथ में रथाङ्ग अर्थात सुदर्शन चक्र है ।
९९९. अक्षोभ्यः= जिन्हे क्षोभित नहीं किया जा सकता ।
१०००. सर्वप्रहरणायुधः= प्रहार करने वाली सभी वस्तुएं जिनके आयुध (शस्त्रास्त्र) हैं ।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

देवकीनन्दन सामगायन, आत्मयोनि वैखानस जोई ।
पापनाशन क्षितीस नन्दकी, शार्ङ्गधन्वा गदाधर सोई ।।
स्वयँजात शँखभृत सृष्टा, रथाँगपाणि अक्षोभ्य वोई ।
सर्व प्रहारणायुध चक्री, विष्णु सहस्र नाम इति होई ।।५६।।

विष्णु सहस्र पाठ - श्लोक

वनमालि गदी शार्ङ्गी शंखी चक्री च नंदकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णुः वासुदेवोअभिरक्षतु ।।१०८।।

भाष्यानुवाद ~ सवैया छन्द

रक्षा करो हे दीनबन्धु नित, शरणागति शरणागत आयो ।
शँख सुदर्शन चक्र कमल धर, चतुर्भुजी श्री विष्णु सुहायो ।।
परा अपरा रक्षक व्यापक, परम शक्ति वर रूप अघायो ।
"रामप्रकाश" करे नित वन्दन, पार करो भव टेर सुनायो ।।५७।।

हे भगवान् नारायण हमारी रक्षा कीजिये , वही विष्णु भगवान् जिन्होंने वनमाला पहनी है ।जिन्होंने गदा, शंख, खड्ग और चक्र धारण किया हुआ है - वही विष्णु हैं और वही वासुदेव सर्व व्याप्त शक्ति हैं।

~फल श्रुति~

सवैया छन्द

महाभारत में भीष्म पितामह, युधिष्ठर के प्रति पाठ सुनावे ।
नियमित कार्य मे पाठ विधिवत, श्रद्धा पूर्वक प्रेम लगावे ।।
श्रवण वाचन प्रेरित जो कर, लोक परलोक महा फल पावे ।
"रामप्रकाश" होवे नित मँगल, मन वाञ्छित प्रयोजन लावे ।।५८।।

धर्मराज युधिष्टिर के प्रति भीष्म जी बोले ~इस प्रकार विष्णु जी के सहस्र नाम होते हैं जो सदा नियमित होकर इसका पाठ श्रवण करता अथवा नित्य नियम से पाठ का जप -वाचन करता है, उसे जीवन में और मृत्यु के बाद भी कभी अशुभता नहीं देखनी पड़ती ।

पाठ रू श्रवण पूण्य फले फल, विद्या विजय लक्ष्मी नित आवे ।
मानव देह अक्षय फल दायक, पाठ पुरुषार्थ से वह पावे ।।
मनोकामना फलित होवे सब, धर्म अर्थादिक पूरण चावे ।
"रामप्रकाश" सन्त शाख भरे यह, झूठ नही नित सत्य कमावे ।।५९।।

सहस्रनाम का श्रवण करने से विद्यार्थी ~ विद्वान विद्या ,युद्धभूमि में विजय और पुरुषार्थी को धन एवँ मानव मात्र को सुख समृद्धि सिद्धिदा है।

धन चाहे तस अर्थ सिद्धि वह, धर्म बढे यश उतम पावे ।
सुख ऐश्वर्य की चाह करे तब, पाठ किये पुरुषोत्तम थावे ।।
विजय विभूति विभूषित भूषण, लोकत्रयाश्रय उतम गावे ।
पँचम वेद की शाख यही कह "रामप्रकाश" कथ वही सुनावे ।।६०।।

सहस्रनाम का पाठ करने से~जिसे धर्म चाहिए उसे धर्म मिलता है ,जिसे धन चाहिए उसे धन सिद्धि, जिसे सुख चाहिए उसे सुख मिलता है , जिसे संतान चाहिए - उसे संतान मिलती है।

दरिद्रता जावत उद्यम से अरु, हरि नाम जपे सब पाप नसावे ।
मौन रहन से कटे कलेश रु, जागृत से भय शोक विलावे ।।
सतगुरू शरण कटे भव बन्धन, राम शरण ते दु:ख न आवे ।
"रामप्रकाश" सतसँगत ते सब, ज्ञान रु ध्यान से मोक्ष समावे ।।६१।।

~दोहा~

मुख पावन हरि नाम जप, हृदय होय ब्रहज्ञान ।
पद पावन सन्त दर्शन हित, हस्त पावन कर दान ।।६२।।

इति श्री विष्णु सहस्र नाम भाष्यानुवाद सहित पद्यात्मक पद्यानुवाद समाप्त

~ अष्टोत्तरशत नाम माला ~

इन्दव छन्द

नाम अनन्त स्वरूप अनन्त है, अनन्त गुण के सागर भारी।
कैसे पुकार करूँ किस नाम से, निर्गुण सर्गुण रूप अपारी ।।
मेरे आधार हो पूरण सामर्थ, अरज सुनो प्रणाम हमारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।१।।

अलख निरँजन अजर अमर, स्वामी अविगत कुञ्जविहारी।
अविनाशी पुरुषोत्तम मुकुन्द, पुरुष पुरातन प्रभु मुरारी ।।
कृष्ण कन्हैया विष्णु नारायण, अन्तर्यामी प्रभु लीला धारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।२।।

अपरम्पार विधाता निर्भय, ज्योति स्वरूप अहंकार अहारी।
दीनबन्धु वृजनाथ श्री हरि, मुकन्द माधव मोहन अपारी ।।
यादवपति जगदीश चतुर्भुज, निर्भय अभय गर्वप्रहारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।३।।

पारब्रह्म प्राणन को दाता, घट घट वासी निर्विकारी।
कमल नयन माधव गोविन्द, मुरलीधर केशव गिरधारी ।।
हृषिकेश मधुसूदन भगवत, मोहन सब में ओम उचारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।४।।

वासुदेव अयोनी ज्ञानी, राम अखिल अखिलेश खरारी।
दीनानाथ गोपाल हरि हर, गरुडध्वज ध्यानी असुरारी ।।
गरुडध्वज घनश्याम अनूपम, भक्त वत्सल सन्त भयहारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।५।।

अधिष्ठान अधिष्ठाता कारण, करण अकारण देव विहारी।
आदि प्रधान देवकीनन्दन, यशोदानन्दन यशुमति वारी ।।
नन्द के नन्दन श्याम शरीर में, बल के धाम अप्रबल धारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।६।।

धरणीधर हो माधुरी मूरति, परशुराम नरसिंह अपारी।
विश्वम्भर विश्वपती अचल, अखण्ड अगोचर अक्षय त्यारी ।।
दयासिन्धु अगोचर ईश्वर, करुणामय बहु रूप विहारी।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।७।।

जगद्गुरू परमानन्द नरहरि, कृपासिन्धु मनहर बनवारी।
जगन्नाथ करुणा वरुणालय, आनन्दकन्द परम विहारी ।।

परमदयालु कृपानिधि रघुवर, कँश निकन्दन फलदातारी ।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।८।।

दामोदर सो रावण गञ्जन, निराकार हो सर्गुण धारी ।
लक्ष्मीकान्त गुरू जगन्नाथ, निर्गुण बद्रीनाथ अचारी ।।
सन्तन रक्षक दुष्ट निकन्दन, सृष्टि नायक कुञ्ज विहारी ।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।९।।

अनगिनति कौतुक कारण, दुःखहरण सभी सुखकारी ।
प्रातः शायँ पाठ करे नित, कुल पीढि भव तारणहारी ।।
सतगुरू कृपा साक्षी हनुमत, तीन ताप विपदा हर सारी ।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।१०।।

परब्रह्म हो अपरब्रह्म पूरण, शब्दब्रह्म जगदीश्वर न्यारी ।
दीनदयाल अच्युत अनन्य, सच्चिदानन्द घन अव्यय वारी ।।
पर अपर अजन्मा व्यापक, अज अनादि अक्षय अनुभारी ।
हरि राम की लीला को गावत, "रामप्रकाश" सदा बलिहारी ।।११।।

~ दोहा छन्द ~

अष्टोत्तरशत हरि नाम यह, जपे तपे मन लाय ।
कष्ट कटे सम्पति बढे, लोकालोक सुख पाय ।।१२।।

।। इति अष्टोत्तरशत नाम माला समाप्त ।।

श्री रामप्रकाश छन्द संग्रह

दोहा

मुख पावन हरि नाम जप , हृदय होय ब्रहज्ञान ।
पद पावन सन्त दर्शन हित, हस्त पावन कर दान ।।१।।
बिना त्याग के ना मिले, छोड़ी अगली श्वास ।
ब्रह्मज्ञान का मूल है, त्याग ही "रामप्रकाश" ।।२।।
बिना अनुबन्ध चलता नही, जगत काम व्यवहार ।
"रामप्रकाश" पालन करो, अनुबन्ध वेदान्त के चार ।।३।।
सतसंग विवेक अभ्यास है, उपशम तितिक्षा वैराग ।
इन के बिन मिलती नही, "रामप्रकाश" की राग ।।४।।
गुड़ मिश्री के कहन से, मुख मीठा नही होय ।
साधन चार किये बिना, सच्चिदानन्द ना जोय ।।५।।
भूतकाल भूलो सभी, भविष्य चिन्ता दो खोय ।
ये वर्तमान सुधारिये, बुरा करो मत कोय ।।६।।
वाणी विचार दो अक्षय निधि, रखिये शुद्ध उर गोय ।
उलट सुलट फल देत शुभ, "रामप्रकाश" कहै जोय ।।७।।
पूण्य धोखा नही देत है, सगा पाप नही होय ।
सम्पति के हकदार सब, कर्म बाँटे नही कोय ।।८।।
प्राण वायु ईश्वर सदा, हरदम चहिये खास ।
दीखे नही रह सके नही, साक्षी "रामप्रकाश" ।।९।।
नाम रूप लीला सघन, ध्यान स्मरण हरि धाम ।
पूर्ण "रामप्रकाश" शुन्य, सात साधना नाम ।।१०।।
जो चन्दन घिसता सदा, चढता हरि के शीश ।
"रामप्रकाश" जो ना घिसे, वह जले आग में पीस ।।११।।
सुन्दर दृष्टि से लगे, सृष्टि सुन्दर तमाम ।
वाणी "रामप्रकाश" से, आप लगो घनश्याम ।।१२।।
कोई भरोसा कर रहे, ईश्वर देखे सब काम ।
कोई भरोसे में रहे, साक्षी है श्री राम ।।१३।।
स्वर्ग गमन, सतसँग वृति, भोजन भजन विलास ।
निज के किये ही फलित हो, यों कहै "रामप्रकाश" ।।१४।।
भोजन भजन विवाह रु, मृत्यु स्वर्ग रु प्यास ।
यह अपने से होत है, और सके नही खास ।।१५।।
स्नान ध्यान जप तप सभी, दान मान सन्मान ।
अपने किये फल होत है, विनय कृषि मतदान ।।१६।।
सुने नही कछु और की, अपनी सुनावे आप ।
पागल प्रमादी मूढ रु, पूर्ण ज्ञानी हरि जाप ।।१७।।
अहँम हवा लागी जिसे, दवा लगे नही कोय ।
नित दूवा उन को मिले, "रामप्रकाश" का होय ।।१८।।
नमक बराबर सम्पति, समता भोज सुहाय ।

अधिक परे विकरित करे, दीजे दान लुटाय ।।१९।।
गुण विशेष अनन्त के, ब्रह्म प्रभाव गुण धाम ।
दोष अस्तित्व प्रमाद के, "रामप्रकाश" परिणाम ।।२०।।
धनबल तनबल बाहुबल, जनबल है बहूकाम ।
सभी बल बेकाम है, जहाँ नही हरि नाम ।।२१।।
तन मन बल रु बाहुबल, जन धन हो बल धाम ।
"रामप्रकाश" अन्त समय में, कोई न आवे काम ।।२२।।
व्याकुलता उद्विग्नता, अनुभव शिक्षा देत ।
जग विद्यालय कोई भी, दे न सके कर हेत ।।२३।।

~सोरठा~

साथी मिले अनेक, सन्त मिले सज्जन कभी ।
शाश्वत सन्त है नेक, "रामप्रकाश" या जगत में ।।१।।

कुण्डलिया छन्द

ऊषण अँधेरे में पड़ा, परख हीरे की होय ।
मूढ काच चमके भले, दीपक रश्मि से जोय ।।
रश्मि काच से जोय, अपने ही घर मे दमके ।
कठिन तितीक्षा साधना, क्षमा शील सँग चमके ।।
सँस्कारवान आगे बढे, आलसी बैठे धूषण ।
"रामप्रकाश " ज्ञानी बने, भूषण तपते ऊषण ।।१।।

~ सवैया छन्द ~

धन्य कृपा गुरुदेव दया कर, उज्वल मति कृति दीन अपारी ।
ज्ञान कला कविता नित नूतन, लोक शिक्षा हित पार उजारी ।।
निन्दक इर्षालू कृतघ्नी जन, नकल करें सब कृति हमारी ।
गुरू समान जो अधिक करे कछु, "रामप्रकाश" ताकी बलिहारी ।।१।।
नूतन रचना कर दिखलावत, वहीं है गुरुदेव हमारे ।
शिक्षा शिक्षक और परीक्षक, गुरू भ्राता सो है बुद्धि वारे ।।
निन्दक ईर्षा वश कुटिल स्वभाव के, भ्रम रु नकल फैला्वन हारे ।
पूत कपूत समान लखो तिहिं, "रामप्रकाश" मुख धूड़ बुहारे ।।२।।
दरिद्रता जावत उद्यम से अरु, हरि नाम जपे सब पाप नसावे ।
मौन रहन से कटे कलेश रु, जागृत से भय शोक विलावे ।।
सतगुरू शरण कटे भव बन्धन, राम शरण ते दुःख न आवे ।
"रामप्रकाश" सतसँगत ते सब, ज्ञान रु ध्यान से मोक्ष समावे ।।३।।
नाचत गावत भजन सुनावत, कथा करे धन धाम बनावे ।
साज सजावत भीड़ जमावत, आपने समाज को जोड़ जमावे ।।
पहने जुराब रु बने नबाब, मुख में पान तम्बकू चबाने ।
"रामप्रकाश" यह साधु पाखण्ड में, भगवत भेष को योंहि लजावे ।।४।।
भगवत भेष मरियाद रही नहीं, भगवां पिताम्बर गले लगावे ।
नशे रु व्यशन मद्य अचे वह, गृहस्थ कलह में त्याग जचावे ।।
षट् भ्रम भरे गृह काम करे, मूंछ रखे या मूंड मुडावे ।
"रामप्रकाश" यह साधु पाखण्ड में, भगवत भेष को योंहि लजावे ।।५।।

जामा जामा पायजामा धारक, लम्बा चौगा रु छोगा पहनावे।
विविध भेष आडम्बर राखत, कौ कहै जग भ्रम भ्रमावे ।।
भगवा पहन के घर में राचत, अहँकार भरे कुल वँश बतावे।
"रामप्रकाश" यह साधु पाखण्ड में, भगवत भेष को योंहि लजावे ।।६।।
वशिष्ठ रु शक्ति पाराशर व्यास ये, जन्म जातक शूद्र उपाये।
वँश हीन रु कुल हीन रहे वह, तप बल उच्च वरण को पाये ।।
सँस्कारवान पायो कुल उज्वल, वेद पुराण रु स्मृति रचाये।
"रामप्रकाश" यही वर्ण व्यवस्था, भारत के इतिहास बताये ।।७।।
राम भक्त हनुमान जाबालि जो, भये कुल हीन जाति में जाये।
वेदवेता सूत भाण्ड कुल भूषण, पुराण वेता विद्वान सुहाये ।।
अट्ठाईस हजार ऋषि महर्षि जन, श्रोता भये ब्राह्मण कुल आये।
"रामप्रकाश" यही वर्ण व्यवस्था, भारत के इतिहास बताये ।।८।।
चोरी यारी झूठ रु हिंसा गण, दम्भ पाखण्ड यह पाप गनाये।
राग द्वैष रु काम क्रोधादिक, ईर्षा दर्प अहँ दूर्गुण गाये ।।
सतसंग किये रु हरि नाम लिये, पाप रु तप कटे भव छाये।
"रामप्रकाश" सतगुरू शरणागत, बन्धन दोष सब दूर नशाये ।।९।।
स्नेह आँख में होठौँ मुस्कान हो, हृदय सरलता से भर आवे।
मन अपनापन करुण व्यवहार में, मित्र - परिवार वही मन भावे ।।
भारी भरकम शब्द जाल हो पर, मन अनुकूल नही दरसावे।
"रामप्रकाश" भाव नित भावत, नीति शास्त्र यही बतलावे ।।१०।।
निश्चल मन से स्थिर आसन धर, खेल चक्षु बिन अजब निहारा।
कर बिन ताल रु पग बिन नाचत, कण्ठ बिन सुररँग राग उचारा ।।
मुख बिन शँख - झालर झिनझिन, नर्तकी नाचत दो इकसारा।
अनहद नाद श्रवण बिन सुनते, "रामप्रकाश" भया आनन्दकारा ।।११।।
अन्तस्थ के जब द्वार खुले तब, भीतर ज्योति प्रकाश दिखावे।
हृदय प्रसन्नता प्रफुल्ल होवत, कमल खिले उर अज्ञ मिटावे ।।
ग्रन्थी सर्व विसर्जित खोवत, अष्टपुरी गुण खोज विलावे।
निर्दोष चेतना "रामप्रकाश" ही है, जागृत में जागृति हो आवे ।।१२।।
नश्वर शरीर में अमर आतम, कैसे रहे कहूं युक्त विचारी।
दूध एक दिन दही दोय दिन, मख्खन दश दिन आयु है सारी ।।
ताहि से पावत घृत अनमोल सो, शतक वर्ष तक आयु सुधारी।
ऐसे ही आतम अजर अमर सो, "रामप्रकाश" है अनूप अपारी ।।१३।।
देखत देखत आँखें थकही, श्रवण सुनते सुनत थक जावे।
सूँघते नाक रु बोलते जीभ हि, करते काम से हाथ थकावे ।।
चालते पाँव रु थके पेट खावते, अँग थके सब शीश धुनावे।
तृष्णा थके नही नित बढे वह, "रामप्रकाश' यह आश्चर्य आवे ।।१४।।
चिन्तन चित के चितवृति चित, मनन मानत मै नही वोई।
बोद्धत बुद्ध बोध भयो ब्रह्म, अहँ की शुद्धि अहँब्रह्म सोई ।।
आस वासना मोह मिटा भय, मूल अविद्या खोज विलोई।
"रामप्रकाश' सच्चिदानन्द सोहँ, आपनो स्वरूप निश्चय होई ।।१५।।

सादगी बिन साधु भया जग, सँशय धार के सन्त भयाई।
पाँव को धोय के पीर भये सब, फिकर धार फकीरी को पाई।।
गुरू आश्रय बिन आश्रम धारत, कलियुग नुगरे रीति विहाई।
"रामप्रकाश" अब कूरा कपूतन, साधु के भैष शैतान सँभाई।।१६।।
अच्छे की दृष्टि अच्छे है हम ही, दुर्जन दृष्टि मे दुष्ट हम वोई।
साधु के सँग मे साधु ही है हम, असाधु के चक्षु में होई घमोई।।
जाही की जैसी है भावना भावित, उसी दृष्टि से देखे हम सोई।
"रामप्रकाश" फले मन भाव हि, जैसी दृष्टि तब तैसी सृष्टी होई।।१७।।
अपने उद्देश्य का ध्येय मार्ग, पूछते रहोगे जन जन को प्यारे।
भूले भटकते योंही रहोगे, सब के ढँग हैं न्यारे न्यारे।।
ध्येय उद्देश्य आप का महत्व, आप जानो वह जाने ना सारे।
"रामप्रकाश" चलो निज पुरुषार्थ, निश्चय सफलता हो निस्तारे।।१८।।
ब्रह्म स्वरूप सदा शुद्ध उज्वल, जल समान जानिये भाई।
जल ही तरँग रु बुदबुद झाग है, सिन्धु वही बहु रूप समाई।।
छोटी बड़ी वह तरँग भी जल है, जल बनना पड़ता नही राई।
ऐसे ही जीव ब्रह्म स्वरूप है, "रामप्रकाश" निज निश्चय करवाई।।१९।।
ऊँगू श्रोता सतसंग में सोवत, सूँगू देखत बैठन सुहावे।
चूँगू श्रोता रस कस जानत, डूँगू कुल जग रीति निभावे।।
श्रोता श्रवण ज्ञान ध्यान चित, स्रोता नदी की धार बहावे।
चौथा सरोता जन "रामप्रकाश" है, तर्क वितर्क बात चलावे।।२०।।
चोरी यारी झूठ रु हिंसा गण, दम्भ पाखण्ड यह पाप गनाये।
राग द्वैष रु काम क्रोधादिक, ईर्षा दर्प अहँ दूर्गुण गाये।।
मिल कर रहिये नीति निभाय के, मानव प्रसन्नता हेतु त्रलखावे।
गृहस्थ जीवन के यही अष्ठ खम्भ है, "रामप्रकाश" यह नीति दरसावे।।२१।।
स्वयँ के साथ में सप्त परिवार है, बहिन भाई मिल एक कहावे।
सहकर्मी, मित्र है रिस्तेदारी भी, पड़ोसी, परिचित, शत्रु जनावे।।
मिल कर रहिये नीति निभाय के, मानव प्रसन्नता हेतु लखावे।
गृहस्थ जीवन के यही अष्ठ खम्भ है, "रामप्रकाश" यह नीति दरसावे।।२२।।
पुरुषोत्तम परब्रह्म ईश्वर वन्दन, सच्चिदानन्द व्यापक इकसारा।
सन्त त्रिकालज्ञ ब्रह्मवेता सब, भक्त ज्ञानी योगी जन सारा।।
सतगुरू सामर्थ ब्रह्मनिष्ठ वर, उतमराम गुरू जन प्यारा।
एक स्वरूप मे "रामप्रकाश" यह, वारम्वार प्रणाम हमारा।।२३।।
शहद है अमृत शक्ति प्रदायक, कुत्ता खाये तो जीवन गमावे।
देशी घृत शुद्ध गाय का अमृत, मख्खी जो चाटते प्राण उडावे।।
मिश्री परम मिष्ठान में अमृत, प्राण गमावत जो खर खावे।
"रामप्रकाश" शुभ ज्ञान शिक्षा गुण, मूर्ख के मन द्वैष दिखावे।।२४।।
पकी निम्बोली नीम की अमृत, काग खाय तब प्राण गमावे।
जो धरा पर अमृत गुण औषधि, साधन सुख भण्डार कहावे।।
दम्भी निन्दक अवगुण देखत, पाय सके नहि लाभ कमावे।
"रामप्रकाश' शुभ ज्ञान शिक्षा गुण, मूर्ख के मन द्वैष दिखावे।।२५।।

कुते को शहद रु मख्खी घृत औगुण, खर को मिश्री कदापि न भावे।
दाख काग को दुष्ट को सद्गुण, अधिकारी बिन लाभ न पावे।।
दुर्व्यशनी रु दुष्ट स्वभाव को, सतसंग सन्त सो नाहि सुहावे।
"रामप्रकाश" जो साची कहो मुढ, विपरीत मान के वैर बढावे।।२६।।
समय विचित्र प्रकृत्ति का अवसर, नही किसी को मिलता प्यारा।
किसी दुखी का कटता नही यह, पास होता नही किसी के धारा।।
दिखता नही यह दिखा देता है, भूत भविष्य वर्तमान को सारा।
अपना कौन है समय दिखाता, अपनापन "रामप्रकाश" विचारा।।२७।।
धन कमावत परिश्रम से सब, सुख मूल समझ कर के भाई।
धन ही अनर्थ मूल कहावत, भय शत्रूता रक्षण कठिनाई।।
तृष्णा बढाय विश्राम को खोवत, चित अशान्ति घटे चतुराई।
"रामप्रकाश" निज नाश होवे अथ, सम्पति नाश होवे दुखदाई।।२८।।
हठिता क्रोध की बहिन जिद है, पत्नी हिँसा भय पिता कहावे।
अहँकार अग्रज है बैटा जान वैर, निन्दा चुगली दो बेटी सुहावे।।
बहु ईर्षा रु पोती घृणा लख, माता उपेक्षा दादा द्वैष बतावे।
"रामप्रकाश" यह क्रोध परिवार है, साधक दूर रहे सुख पावे।।२९।।
दान का देवन अन्न रु धन पट, ज्ञान ज्ञानी जन से नित लीजे।
त्याग करो हर समय चित से, अहँकार हठ तन क्रोध से सीजे।।
तजिए मान दीजे सम्मान ही, शास्त्र अध्ययन सतसंग को कीजे।
"रामप्रकाश" गुरू शरण में साधन, नीति का मार्ग प्रेम को पीजे।।३०।।
विश्वास आप में जिस सज्जन का, ताहि को जोड़ते नित ही जावो।
जिन का विश्वास ना आप में होवत, ताहि को तोड़ते मित्र बनावो।।
मीत प्रतीत न हो शुभ लक्षण, ताहि को त्यागत दूर भगावो।
आतम विश्वास को तोड़ रहे जन, 'रामप्रकाश' ताहि सों नेह न लावो।।३१।।
भय चिन्ता रु प्रेम अनुभव, ममता मोह ना प्रत्यक्ष दिखाई।
प्रत्यक्ष प्रमाण विषय नही पावत, पय में घृत मिले नही भाई।।
परब्रह्म प्रत्यक्ष ना पाय परमेश्वर, मरजीवा हो मरजीया ही पाई।
'रामप्रकाश" सतगुरू साधन सँग, श्रद्धा विश्वास सँग सहजे आई।।३२।।
भूप स्वप्न मे भिक्षु भयो जब, भिक्षाटन गाँव में घर घर धायो।
रँकपति नाक भयो सुरपति, पाय पँचामृत मोद अघायो।।
अविद्या की रात अज्ञान अँधेर में, मोह की नींद में यों बरलायो।
जागृत ज्ञान भयो तब आनन्द, 'रामप्रकाश' भ्रम स्वप्न विलायो।।३३।।
भूप भिक्षाटन रँक जु सुरपति, अज्ञ तज्ञानुवृत मोह विलायो।
भ्रम नींद से जब जाग गयो तब, आनन्द आपने आपको पायो।।
अज्ञ रु तज्ञ की गति अज्ञात है, द्वन्द्व गति रु निर्द्वन्द छायो।
जागृत सुख समाय रह्यो वह, 'रामप्रकाश' भ्रम मोह विलायो।।३४।।
दु:ख को कारण रागद्वैषादिक, भ्रान्ति नाना कर मन भ्रमावे।
पूर्व पूण्य हो जागृत पूरण, सतसंग सतगुरू सामर्थ पावे।।
शास्त्र शासन साधन हो शुभ, सँकल्प विकल्प मन दूर भगावे।
"रामप्रकाश" शान्ति चित आवत, परम परमानन्द मांहि समावे।।३५।।

वायुयान या जहाज के चालक, बस गाडी या रेल में जाते ।
जान पिछान बिना सब चालक, निश्चिंत यात्रा हम कर पाते ।।
ऐसे ही है सृष्टि का चालक, निश्चिंत विश्वास क्यों ना ठहराते ।
“रामप्रकाश” निश्चिंत रहो नित, चालक कुशल वह हमे चलाते ।।३६।।
धन मान प्रतीष्ठा शान मिले सब, देव कृपा ऋद्धि सिद्धि को पावे ।
मानव देह मे शुभ इच्छा फल, परम कल्याण उपाय उपावे ।।
यत्न सहित अनुग्रह गुरू सन्त, परम सँयोग जो ईश बनावे ।
पुरुषोत्तम “रामप्रकाश” कृपा बल, मानव जीवन सफलता लावे ।।३७।।
करना धरना कुछ नही पर, भीड़ इक्कठी खूब जमावे ।
धर्म अर्थ जनता पद अर्जित, अपनी जय जयकार बुलावे ।।
शास्त्र ज्ञान बोध रु ध्यान में, ईर्षा द्वैष का द्वन्द मचावे ।
“रामप्रकाश” यह भेष आडम्बर, कलि में सोई सन्त कहावे ।।३८।।
साधन आसन व्यायाम पावनता, तन शुद्धि तन्त्र रूप लखावे ।
सँयम सत्य प्रिय वाणी कह कर, यन्त्र सिद्धि सन्त यह दरशावे ।।
मन इन्द्रियादिक सँयम साधन, मन्त्र सिद्धि कर हरि को पावे ।
"रामप्रकाश" गावे गुण गोविन्द, भवसागर गोखुरतर जावे ।।३९।।
वस्तु नाम के अक्षर चौगुन, चार पुरुषार्थ हेतु कहावे ।
धर्म सनातन देव मिला पँच, द्विगुण लोक परलोक सुहावे ।।
अपरा अष्ट भाग दे विनसत, शेष रमणीय राम कहावे ।
"रामप्रकाश" की कविता गावत, राघव रमता राम बतावे ।।४०।।
वायुयान या जहाज के चालक, बस गाडी या रेल में जाते ।
जान पिछान बिना सब चालक, निश्चिंत यात्रा हम कर पाते ।।
ऐसे ही है सृष्टि का चालक, निश्चिंत विश्वास क्यों ना ठहराते ।
“रामप्रकाश” निश्चिंत रहो नित, चालक कुशल वह हमे चलाते ।।४१।।
करणीय साधन नहीं पूण्य कृत बल, प्रारब्ध हीन नही कृत कोई ।
भव में भटकत अति दु:ख दुखित, रक्षक कोई नही दीखत जोई ।।
पूर्व पूण्य अँकुर जगे कछु उज्वल, कृपा ईश्वरीय मानव तन होई ।
"रामप्रकाश" सतगुरू शरणागत, परम कृपाल दियो भव धोई ।।४२।।
बहुत विकार भरे घट भीतर, महां क्रोधी रू नमक हरामी ।
महां रोगी हूं रु महा भोगी भव, नहीं योगी मैं महा अघ धामी ।।
आय शरणागत दीन पड़्यो अब , भव को कीचड़ हूं महां कामी ।
"रामप्रकाश" के आप हो रक्षक, कृपा सिन्धु श्री अन्तर्यामी ।।४३।।
धन सुत नारि नही कुल बान्धव, मात पिता नही गीत हमारो ।
नही सँग जाति जमात ना कछु, लोक परलोक में कोई सहारो ।।
मीत प्रतीत की रीत नही जग, नही विद्या बल बुद्धि को चारो ।
"रामप्रकाश" हरि गुरू शरण है, एक सहाय भरोस तुम्हारो ।।४४।।
आस सहाय सदा जग भीतर, रही नही अब रँच लिगारी ।
मात पित कुल मीत की रीत में, नही प्रतीत सो मोह बिसारी ।।
सुत वित नारि न स्वपन चाहत, एक हरि सँग प्रीत हमारी ।
रामप्रकाश” पुकार करे हरि, यही फकीर है शरण तुम्हारी ।।४५।।

सर्व विकार भरे उर भीतर, कर्म क्लेश रु द्वैष पिटारो।
झूठ कठोरता निन्दक पूरण, काम क्रोध सँग महा धुतारो ।।
अवगुण धाम रु हूँ गुणचोर हूँ, कोई सहायक होय हमारो।
"रामप्रकाश" हरि शरण गहि अब, पतित पावन एक सहारो ।।४६।।
मठ बनाय होवे मठाधीश ही, महा मण्डलेश्वर हो छत्र लगावे।
शिष्य सम्पति शाख बढावत, चित विद्वान उपाधि कमावे ।।
लापर चापर चातुरता कर, लोकान्तर ऐषणा लोक रिझावे।
'रामप्रकाश" ये राम भजन बिन, अन्त समय कछु काम न आवे ।।४७।।
हरि चरण जल पावन हो वह, अज कमण्डल शिव शीश धरायो।
मन्दाकिनी होय प्रभावती वह, होय उद्धारक गँग समायो ।।
मात पिता गुरू चरण नमन ते, आयु ऐश्वर्य यश भाग्य को लायो।
'रामप्रकाश" चरण नत मस्तिष्क, नित्य नमन कर पूण्य कमायो ।।४८।।
जाति में जाति वर्णाश्रम मानत, सद् साँसारिक गृहस्थ सुहावे।
व्यवहार सिद्धि कार्य सिद्ध कर, सब काहू मे आवत जावे ।।
अजाति ईश्वर के साधु भी मानत, जाति भेद सो नर्क सिधावे।
जाति विहीन साधु भ्रम भेदक, "रामप्रकाश" हरि भक्त कहावे ।।४९।।
पृथ्वी में अन्न बोवन पहले से, मूल बीज दाना रहवाया।
वपन बाद भी वही बीज रूप में, मध्य घास कचरा पाया ।।
विलग किया तब मूल अन्न ही, अविनाशी ऐसे ही कहलाया।
"रामप्रकाश" कचरा कुल कुटुम्ब, साक्षी निर्लेप लखो हे भाया ।।५०।।
धन्य प्रभु प्रभुत्व के मालिक, रात कुशल से नींद सुहाई।
धन्य हो गुरू गोविन्द नित ही, ब्रह्म मुहूर्त में दियो जगाई ।।
धन्य हो सतगुरू देव दया कर, नव जीवन की प्रात दिखाई।
"रामप्रकाश" हो कृपा के सागर, भक्ति ज्ञान गुण दीजो सदाई ।।५१।।
अविद्या रात स्वप्न सुषोप्ति, चार पहर खानि चव धायो।
जागृत पूर्व पूण्य भये प्रबल, ईश कृपा मानव तन पायो ।।
वेद कृपा उज्वल मति आयुष, बालयोगी गुरू शरण में आयो।
"रामप्रकाश" धन्य भयो जीवन, हरि शरण होय साधु कहायो ।।५२।।
पूर्व प्रारब्ध उज्वल कारण, नैष्ठिक बालयोगी जीवन गायो।
भवसागर के भय से आतुर, डर कर सतगुरू शरण में आयो ।।
सतसंग रु साधु जन साथ में, साधन साथ हरि नामको ध्यायो।
"उतमराम" ब्रह्मज्ञानी मिले तब, "रामप्रकाश" दो अक्षर पायो ।।५३।।
अलिख लिखे लखे पुनि आप ही, अव्यक्त व्यक्त करे गुरू सोई।
अलिप्त आप रहे जग भीतर, अपनो स्वरूप लखावत जोई ।।
मौन रहे मन वाणी विचारत, ज्ञान रु ध्यान से धीरज होई।
"रामप्रकाश" मिले गुरू सामर्थ, अलख लखावत घट में कोई ।।५४।।
अविद्या चौंसठ चार विघ्न ही, पाँच क्लेश चित भूमिका जानो।
सँशय दोय रु मूल अज्ञान सो, अष्टपुरी कर्म वासना मानो ।।
बाधक यही सब साधक के उर, हटे जु कटे साधन संग आनो।
सतगुरू शरण में "रामप्रकाश" हो, पाय ब्रह्मानन्द त्रिगुण भानो ।।५५।।

ग्रन्थ खरीद करे बहु ढेर जु, बुद्धि विद्वान बने नही वोई।
शस्त्र खरीद रखे सब भान्तिन, वीर बने न कहावत सोई।।
आसन योग करे नट विविध, साधक तपस्वी कभी ना होई।
भेष माला धर साधु ना होवत, "रामप्रकाश" गति जानत कोई।।५६।।
साक्षर अक्षर बाँच सके सब भाँतिन, शिक्षण सँस्थान क्यों जावत भाई।
करे आवेदन शुल्क जमा करे वह, अध्ययन परीक्षा परिणाम से लाई।।
होय स्टाम्प हजार को भी टँकित, छाप मोहर बिन काम न आई।
ऐसे ही ज्ञान रु योग प्रवीण हो, 'रामप्रकाश" ना सो फल पाई।।५७।।
मानव के उपहास का कारण, भिखारी को धनवान पुकारो।
रँकपति को कुबेर उपाधि दो रु, मूर्ख को जिलाधीश उचारो।।
दरिद्रनारायण श्री पति बोलत, मान बढे हँसी पात्र सहारो।
गृह में पूजित मुग्ध सभी सुत सु, "रामप्रकाश" यह मानद सारो।।५८।।
मूढप्रसाद अलँकार से हर्षित, पण्डितराज कहि मूढ सराहो।
ग्राम भिक्षुक हो धनराज ही, शहनशाह ठगराज बराहो।।
ठाकुर को महाराज सरदार ही, कखपति को लखपति कराहो।
"रामप्रकाश" उपहास में प्रसन्न, साहित्य के अलँकार ठहराहो।।५९।।
कोई आचार्य जाति पुकारत, जनम आचारज गेह बसावे।
कोई के पण्डित गौत्र है घर, श्वपच समाज सम्बोधन पावे।।
बहुरुपिए नटराज बने बहु, मान उपाधि सबे मन चावे।
"रामप्रकाश" मन मानन्दी के पद, योग्यता के बिन मान बढावे।।६०।।
शुद्ध व्यवहार को ध्यान रखे नित, मिथ्या आरोप कभी नही राखे।
परम परमार्थ चित में चिन्तन, हरदम साधन अध्यात्म चाखे।।
रहणी कहणी साच निरन्तर, आपनो आप सरलीकरण भाखे।
"रामप्रकाश" यह साधु के लक्षण, शास्त्र सन्त सदा कह साखे।।६१।।
सँस्थान पँजीकृत सभा प्रस्तावित, मानद योग्यता जानन आवे।
ठीक उत्सव विद्वान सभा बिच, सँग घोषणा घोषित भावे।।
या विधि मानद सम्मानित मानव, शोभित सभा में मान्यता पावे।
"रामप्रकाश" वैधानिक वेधता, मानद उपाधि शुभ कहलावे।।६२।।
स्पर्श वायु बिन रस जल बिन, ताप तेज बिन नाहि तपावे।
गन्ध पुष्प बिन अवकाश नभ बिन, खार लवण बिन नाहि रहावे।।
ज्ञान गुरू बिन निर्गुण सगुण बिन, रहे नही कछु दृश्य दिखावे।
याहि ते कर्म उपास किये बिन, "रामप्रकाश" ना मन ठहरावे।।६३।।
मानव के उपहास का कारण, भिखारी को धनवान पुकारो।
रँकपति को कुबेर उपाधि दो रु, मूर्ख को जिलाधीश उचारो।।
दरिद्रनारायण श्री पति बोलत, मान बढे हँसी पात्र सहारो।
गृह में पूजित मुग्ध सभी सुत सु, रामप्रकाश यह मानद सारो।।६४।।
शुद्ध व्यवहार को ध्यान रखे नित, मिथ्या आरोप कभी नही राखे।
परम परमार्थ चित में चिन्तन, हरदम साधन अध्यात्म चाखे।।
रहणी कहणी साच निरन्तर, आपनो आप सरलीकरण भाखे।
"रामप्रकाश" यह साधु के लक्षण, शास्त्र सन्त सदा कह साखे।।६५।।

सँस्थान पँजीकृत सभा प्रस्तावित, मानद योग्यता जानन आवे।
ठीक उत्सव विद्वान सभा बिच, सँग घोषणा घोषित भावे।।
या विधि मानद सम्मानित मानव, शोभित सभा में मान्यता पावे।
"रामप्रकाश" वैधानिक वेधता, मानद उपाधि शुभ कहलावे।।६६।।
ब्राह्मण होटल खाना खावत, जूते पहने पान चबावे।
नाक छींकते करे अपावन, भूल कभी ना खाना खावे।।
माता बहिनें घरमें बनाकर, प्रेम से भोजन वही करावे।
प्रभु प्रसाद पावे अति उतम, 'रामप्रकाश" हरि भक्त कहावे।।६७।।
खाना तामस भोजन राजस, सात्विक प्रसाद नित करिये भाई।
खाना अपावन भोजन पावन, अत्युत्तम सो प्रसाद कहाई।।
खाना राक्षस का मानव भोजन, देव प्रसाद को पाय सदाई।
"रामप्रकाश" भोज है त्रिविध, मानव की यह वृति बताई।।६८।।
खाया जाय वह खाना होवत, पाया जाय सो भोजन कहावे।
लिया जाय प्रसाद है उतम, मर्दन बनावत खाना भावे।।
माता बहिने बनावत भोजन, हरि भक्त प्रसाद बनावे।
"रामप्रकाश" भाषा है परीक्षण, हो विद्वान सो परिक्षण पावे।।६९।।
धन सम्पति बल शस्त्र बाहुबल, घटे बढे थिर होवत नाही।
परिजन पुरजन दुरजन ये सब, होय मिटे जग स्थिर काही।।
शास्त्र बुद्धि बल एक विद्या धन, अक्षय सम्पति नित रहाही।
ज्ञान बिना सब निष्फल जीवन, "रामप्रकाश" ये है उर माही।।७०।।
जन्म रु मरण जरा दु:ख व्याधि यह, वृद्धि ह्रास न मन चित सारे।
विकास प्रकाश अवकाश नही कछु, प्राण अप्राण न इन्द्रियां हमारे।।
अहँ ब्रह्म शुद्ध सत चित आनन्द, सोहँ तत्वमसि एक उजारे।
सर्वखल्विदं रु अयम आतमा, "रामप्रकाश" श्रुति सन्त पुकारे।।७१।।
राजसी ठाठ रु रहन फकीर सी, निर्द्वन्द निष्प्रह जीवन धारा।
सतगुरू सन्त की शरण में राजत, मस्त की मोज से ब्रह्म विचारा।।
खीर पुरी कभी धीर खरी, फाके प्रारब्ध से करे गुजारा।
"रामप्रकाश" सिद्धांत का जीवन, जन्म मरण नही होय हमारा।।७२।।
माया के रूप अनूप उजागर, जोड़ कमाय आयु भर सारा।
एक खाय रहे एक खोय रहे, इक राम के काम लगावत प्यारा।।
एक लेजावत नरक मे डारत, माया का खर्च है चार प्रकारा।
"रामप्रकाश" सुनो गुणी सज्जन, हृदय में सोच के खर्च विचारा।।७३।।
एक माया ततकाल फले सुख, एक जो खावत खूटत धारा।
एक बनावत राम सम्बन्ध को, लगे परमार्थ के उपकारा।।
एक लेजावत यमराज के घर, चित्रगुप्त वश नर्क मँझारा।
"रामप्रकाश" माया फल पावत, शुभ अशुभ के द्वार है चारा।।७४।।
सर्वत्र व्यापक एक अनूप है, ब्रह्माण्ड ब्रह्म स्वरूप अखण्डा।
अन्य नही सब एक अनन्त है, विधि निषेध न होवत खण्डा।।
लोम नही प्रतिलोम नही कछु, एक न दोय अपेक्षित पिण्डा।
"रामप्रकाश" नही इष्ट अनिष्ट है, अनन्य अव्यय में मुण्ड न रुण्डा।।७५।।

शीश जटा रु पटा शिर मुण्डित, लठ धारी मठ धारी विहारे।
तपधारी जप धारी निहारत, भगवें श्वेत पिताम्बर सारे ।।
त्यागी वैरागी रु रागी भी देखे, शील क्षमा व्रत पालन हारे।
ईर्षा द्वैष रु निंदा के त्याग में, "रामप्रकाश' नहीं नैन निहारे ।।७६।।

ईश्वर का अँश है जीव प्रमाणित, नही ब्रह्म का रूप है भाई।
जीव रु ईश्वर दोनौं ही अँश है, सच्चिदानन्द ब्रह्म के दाई ।।
प्रेमा भक्ति से ईश्वर प्राप्ति हो, चार मुक्ति पद पावत जाई।
ब्रह्मज्ञान से मुक्त हो जावत, "रामप्रकाश" यह सन्त बताई ।।७७।।

ब्रह्म कुटस्थ से ईश्वर भाषत, कुटस्थ ते चिदाभास दिखाई।
शूक्ष्म देह मिले चिदाभास तो, यही जीव स्वरूप लखाई ।।
जीव लखे तत आप रु ईश्वर, साधन प्रक्रिया सतसँग पाई।
सतगुरू प्रसाद पावे ब्रह्मज्ञान ही, "रामप्रकाश" स्वरूप समाई ।।७८।।

स्थूल देह मे शूक्षम तन है, ता सँग कारण अज्ञान है भाई।
ताहि मे जो चिदाभास राजत, सो वह जीव कह्यो यों गाई ।।
जीव मे ईश रु ईश में ब्रह्म है, निर्णय कथ वेदान्त बताई।
"रामप्रकाश" उपनिषद भाषत, शास्त्र सन्त कहै समझाई ।।७९।।

भाल तिलक बिन शून्य है मस्तिष्क, गुरू गायत्री बिन बाणी है खाली।
व्यवहारिक पारमार्थिक धर्म बिना, शिक्षा है पेट को भरण वाली ।।
धर्म रक्षा हित शस्त्र अस्त्र बिन, वीर भोग्य वसुन्धरा जाली।
"रामप्रकाश" सँत यही यथार्थ, इन चारों की कर रखवाली ।।८०।।

श्री रामप्रकाश पद संग्रह

भजन (१) राग

सुमिर मन आदि पुरुष का नाम ॥टेक॥
आदि पुरुष पुरुषोत्तम पूरा, सत चित आनन्द श्याम ।।१।।
अघट अनन्त अपार अनूपम, पूरण व्यापक अभिराम ।।२।।
पर अपर अयोनी आप ही, त्रिगुण जपे तमाम ।।३।।
"रामप्रकाश" अन्वय अविनाशी, नित निर्गुण अविराम ।।४।।

भजन (२) राग आसावरी पद आसा

साधोभाई ! झूठा जगत पसारा ।
झूठा जीव झूठ में राजी, लख चौरासी धारा ।।टेर।।
असँख्य युग में असँख्य प्राणी, किया विषय व्यवहारा ।
शब्द स्पर्श रूप रस भोग्या, गन्ध नाना विध सारा ।।१।।
भोग्ये भोग पीढि धर भोगे, यही झूठ दीदारा ।
तृपति ना होय अनन्त कर भोगे, जन्मो जन्म मतवारा ।।२।।
स्थिर वस्तु एक नही जग में, पलटे वारम वारा ।
आज पदार्थ काल सो नासे, तीनों काल का चारा ।।३।।
हुआ होवे मिटे फिर होवे, यही झूठ विसतारा ।
रामप्रकाश समझ कर त्यागा, लिया साच इतबारा ।।४।।

भजन (३) राग आसावरी पद आसा

साधोभाई ! मैं योगी मतवारा ।
योग भक्ति साँख्य बिन शूना, ज्ञान वेदान्त विचारा ।।टेर ।।
सतसँग सार विवेक धारणा, वृति वैराग्य उर धारा ।
शम दमादि योग भक्ति में, साधन है इकसारा ।।१।।
जीव ईश प्रक्रिया समुचित, सोई साँख्य गुण वारा ।
सतगुरू सम्मुख होय दृढासन, श्रवण ज्ञान गुर द्वारा ।।२।।
मनन एकान्त निदिध्यासन निश्चल, तत्व शोधन यह सारा ।
आतम परमात्म योग क्षेम कर, पाय प्रयोजन पियारा ।।३।।
कर्म योग भक्ति बिन साधन, पावे नही सचियारा ।
" रामप्रकाश" पावे पद निश्चल, निर सँशय निरधारा ।।४।।

भजन (४) राग आसावरी पद आसा

साधोभाई ! निर्णय करो निरधारा ।
किया विचार गुरूमुख निश्चय, भय बिन नही निस्तारा ।।टेर।।
हरि परमात्म अन्तर्यामी, सब घट जाणण हारा ।
मन भय राख दुर्गुण को त्यागो, तन मन शुद्ध कर सारा ।।१।।
जगत भय से सीधा चालो, शुद्धता करो व्यवहारा ।
खान पान शुद्ध लेन देन से, पालन करो परिवारा ।।२।।
मन में हरदम सतगुरू का भय, दुर्व्यशन सभी निवारा ।
प्रति श्वास साधना चिन्तन, श्रवण मनन चित धारा ।।३।।

भय बिना भव भागत नाहि, करो उपाय हजारा ।
बिन मरियाद डूबे भव सागर, कोई नही तारण हारा ।।४।।
गुरूजन को भय मोक्ष प्रद हो, गोपद सम भव पारा ।
"रामप्रकाश" हरदम भय धारण, निर्भय भया इकसारा ।।५।।

भजन (५) राग आसावरी पद आसा

साधोभाई ! ऐसा साधु मन भावे ।
सरल स्वभाव गुरू मुख रहणी, दम्भ न और दिखावे ।।टेर।।
परम विभुति साधन पूरण, श्रद्धा विश्वास दृढावे ।
अर्थ पँचक ले सतगुरू सम्मुख, श्रवण मनन मनावे ।।१।।
भेष बड़प्पन रँच न राखे, रहस्य भेद सब गुण ध्यावे ।
रहस्य त्रय भली विध जाने, पाँच प्रयोजन पावे ।।२।।
शील स्वभाव भक्ति युत विरक्त, नियम मर्याद निभावे ।
दम्भ आडम्बर से दूरा रहवे, सन्तन मान बढावे ।।३।।
हठ मन्त्र लय राजयोग विधि, योग साँख्य मत ध्यावे ।
"उतमराम " सतगुरू के शरणे, ताके गाऊँ बधावे ।।४।।
प्रेम नियम हरि गुरू सन्तन से, साचा इष्ट सँभावे ।
"रामप्रकाश" चरण रज शरणे, सदा बलिहारी जावे ।।५।।

भजन (६) राग आसावरी पद आसा

साधोभाई ! समझे सन्त मस्ताना ।
गुर गम रीति साधन की सँगत, युक्ति मुक्ति परवाना ।।टेर।।
ब्रह्म नही पर ब्रह्म स्वरूपी, कुटस्थ रस्मि रवि जाना ।
वही समाया चिदाभास में, चिदाकाश नही आना ।।१।।
शुद्ध सतोगुणी अन्तस्थ मन में, चिद्घन आय समाना ।
मन स्वरूप उपहित चेतन, अविद्या माँहि अलुझाना ।।२।।
मनन ही मान विपरीत भाव से, अष्टपुर में भ्रमाना ।
जीव स्वरूप चिदाभास कुटस्थ सो, द्वैत अद्वैत कहाना ।।३।।
चेतन मन अवचेतन आप ही, त्रिगुण रूप भया ज्ञाना ।
“रामप्रकाश” गुरू गम समझ्या, उलट भया ब्रह्म समाना ।।४।।

भजन (७) राग राजेश्वरी हेली पद

प्याला अजर जर गया, सतगुरू पाया जोर ।।टेर।।
साधन अनुबन्ध साध के, गया गुरू दरबार ।
सन्त सानिध्य बैठ के, पिया श्रवण द्वार ।।१।।
सोहम प्याला नाम का, हृदय ठहरया जाय ।
अनुभव आई डकार सो, निदिध्यासन लिव लाय ।।२।।
सत स्वरूप आया नशा, सत चित आनन्द कार ।
दृश्य बिसरया द्वैत का, छाया एक विचार ।।३।।
जिन पिया जग जीत के, अमर भया ब्रह्म आप ।
मस्त भया निज आप में, बिसरया सभी सँताप ।।४।।
"उतमराम" पाया सही, पीये कोई सचियार ।
"रामप्रकाश" निर्भय भया, आवागमन विडार ।।५।।

भजन (८) राग आसावरी पद आसा

साधोभाई ! माया बड़ी नखराली ।
छद्म स्वरूप दोय फल दाता, प्रकृति त्रिगुण बिखराली ।।टेर।
अपना रूप दो सात्विक तामस, माया अविद्या ताली ।
एक एक की अनन्त चाल है, जगत रिझावन चाली ।।१।।
सात्त्विक माया लीली सूकी, शुभ अशुभ फल वाली ।
यही डुबावे भव के भीतर, यही देव भूतनी साली ।।२।।
अविद्या चार रूप से फेली, ताकी चाल निराली ।
विपर्यय स्वरूप भुलावे प्राणी, या चौसठ रूप धराली ।।३।।
कोई हरिजन सतगुरू शरणे, हरि भज माया पाली ।
"रामप्रकाश" शुभाशुभ माया, जाण करी रखुवाली ।।४।।
कयीयक स्थूल लीली अलुझ्या, कयी सुक्ष्म मन झाली ।
भोगी योगी रोगी सारा, माया मोह्या मतवाली ।।४।।
कोई हरिजन सतगुरू शरणे, हरि भज माया पाली ।
"रामप्रकाश" शुभाशुभ माया, जाण करी रखुवाली ।।५।।

भजन (९) राग आसावरी पद आसा

क्या पीठ थपाई पगला ।
गुरूजनों की रीत चालतां, पाँव सभालो अगला ।।टेर।।
सात नियम जो पीठ धर्म के, कौन बतावे गुरु ठगला ।
घर घर बँधी लाग भाग को, गाँव फिरे बहु जग कँगला ।।१।।
महामण्डलेश्वर कौन बनाया, अँग सात है पद मँगला ।
भेद बिना रँग कपड़ा भगवाँ, साँग लजाते कयी बुगला ।।२।।
त्रय रहस्य व्याख्या आचार्य, मुख नही आवे थगला ।
भेष पहन्याँ भक्ति नही पाके, अर्थ पँचक बिन तगला ।।३।।
धनपत नाम रु काम भिक्षाटन, यही पाखंड का पगला ।
उतम गुरू बिन नाम धारी बहु, गुरू शिष्य डूबे सगला ।।४।।
“रामप्रकाश” चेतावे हितकर , जो समझे कोई हँसला ।
इर्षा द्वैष में भटका मारे, जगत आस का दगला ।।५।।

भजन (१०) राग आसावरी पद आसा

साधो भाई ! अष्टपुरी विगताना ।
जनम मरण का कारण यह है, जीव स्वरूप बखाना ।।टेर।।
ईश्वर कृत प्राकृतिक कारण, पाँच अवस्तु आना ।
तन्मात्रा पाँच ज्ञानेद्रिय पाँचों, पाँच कर्मेंद्रिय जाना ।।१।।
पाँच प्राण रु चारों अन्त:करण, जानत सन्त सुजाना ।
अज्ञान मिला तब सभी बँधाना, अविद्या जाल बिछाना ।।२।।
कारण में अकारण मिलिया, कुटस्थ ब्रह्म अधिष्ठाना ।
चिदाभास प्रकाश मिल के, जीव स्वरूप ठहराना ।।३।।
अनन्त जन्म सँस्कार हो जाग्रत, सँचित कर्म कहाना ।
कर्म आगामी वासना तीनों, जीव रचा कमठाना ।।४।।
सतसँग सतगुरू शरण साधना, पावे ठोर ठिकाना ।

उतम “रामप्रकाश” का निश्चय, आवागमन मिटाना ।।५।।

भजन (११) रामगिरि प्रभाती पद

कोई आवे शरण हमारी जिज्ञासु, आवे शरण हमारी ।।टेर।।
परम जिज्ञासा हृदय धरके, साधन चार उरधारी ।
आवे शरण सन्तन की कोई, सँशय दूर निवारी ।।१।।
श्रवण करे महावाक्य यथार्थ, मनन करे उर सारी ।
बैठ एकान्त विचारे आतम, खुले मोक्ष की बारी ।।२।।
निदिध्यासन चित चेतन निश्चय, शास्त्र ग्रन्थ विचारी ।
जन्म मरण की खोऊँ वासना, अष्टपुरी खोज विडारी ।।३।।
ब्रह्मात्म महात्म सत लखता, भौतिक भ्रम को हारी ।
चेतन आप आप में दरसे, मुक्ति आस विसारी ।।४।।
"उतमराम" सतगुरू आप हि, सत चित ब्रह्म अवतारी ।
"रामप्रकाश" भक्तों वश आये, सर्गुण स्वरूप पुकारी ।।५।।

भजन (१२) राग रामगिरि प्रभाती पद

कोई माने वचन हमारा साधो, वह जन माने हमारा रे ।।टेर।।
सतसँग करे हरे मन ममता, होय दुर्व्यशन से न्यारा रे ।
सन्त सेवा श्रद्धा कर मन में, हरदम रह हुशियारा रे ।।१।।
शम दम साधन ईर्षा त्यागे, साधन चार सुधारा रे ।
साँख्य योग धरे तन मन में, अध्ययन रत आचारा रे ।।२।।
सतगुरू वचन विचारे उर में, तीव्रतम उतम व्यवहारा रे ।
“उतमराम” के शरणे भव से, “रामप्रकाश” हो न्यारा रे ।।३।।

भजन (१३) राग छन्द भैरवी ,पार वा पद

वाह वाह जी रथ चिदाभास का, गुण गावे वेदान्ती सारा ।।टेर।।
पाँच प्राण का वाहन बनाया , प्राण उदयान रु व्यान कहाया ।
समान अपान ने काम सँभाया, यह वायु स्वरूप आभास का ।।
आवागमन भार सँभारा ।।१।।
पाँच ज्ञानेद्रियाँ द्वार सजाये, श्रोत्र त्वचा चक्षु लाये ।
जिभ्या घ्राण के रस सुख लाये, सुन्दर सुहावन खास का ।।
यह सुविधा दायक प्यारा ।।२।।
पाँच कर्मेन्द्रियाँ सेवक प्यारा, वाक पाणी रु पाद सुधारा ।
उपस्थ मूल सहित विचारा, यह सेवा धर्म उजास का ।।
सब काम सुधार सँभारा ।।३।।
पाँचों भोग लगे नित हाजिर , शब्द स्पर्श रूप रस राजिर ।
गन्ध सुगन्ध सहायक धारा, सब चार विधि से पास है ।
रस देवत न्यारा न्यारा ।।४।।
पाँच तत्व के पिँजरे माँही, चेतन आप अलोगत साही ।
करे करावे कुछ भी नाही, निर्लेप स्वयँ शुद्ध खास है ।।
उतमराम निरधारा ।।५।।
मन बुद्धि रु चित अहँकारा, कर्ता भोक्ता सब विधि सारा ।
आप साक्षी करावण हारा, कुटस्थ “राम प्रकाश” है ।।

अभोक्ता ब्रह्म अपारा ।।६।।

भजन (१४) राग छन्द भैरवी ,पार वा पद

महावक्य अर्थ विचार के, सतगुरू से ज्ञान विचारा ।।टेर।।
प्रथम सतसँग भेद सुधारा, साधन चार हृदय में धारा ।
सतगुरू शरण भया न्योछारा, मन सर्वस्व भेंट उदार के ।।
सत शास्त्र वेदान्त चितारा ।।१।।
अयँमात्म ब्रह्म अथर ने गाया, माण्डूक्य उपनिषद् पाया ।
चार विभाग ताही के लाया, मैं आत्म ब्रह्म चित सार के ।।
श्री गीता ज्ञान पुकारा ।।२।।
तत्वमसी वाक्य साम पुकारे, छान्दोग्य उपनिषद् प्यारे ।
सत ईश्वर जीव एकता ढारे, सब सँशय मूल उखार के ।।
चित चेतन एक उचारा ।।३।।
यजुर्वेद अहँब्रह्मास्मि गावे, वृहदारण्य उपनीषद् भावे।
शब्द विचारत हृदय आवे, सन्त शुद्ध अद्वैत को सार के ।।
सब भ्रम भेद को टारा ।।४।।
प्राज्ञामानन्द ब्रह्म ऋग्वेद बतावे, एतरेय उपनिषद् ध्यावे ।
विवृत उतमराम दिखावे, "रामप्रकाश" भ्रम डार के ।।
कोई माने वचन हमारा ।।४।।

श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी "अच्युत" का जीवन परिचय

स्वाधीष्ठाता~उतम आश्रम (आचार्य पीठ) जोधपुर-६
अवतरण- १९३० ई. आध्यात्मिक जन्म- १९३५ ई. कार्यकाल-१९५० ई. से अद्यावधि
जीवन में सामाजिक,प्रचार-प्रसार एवँ पारमार्थिक भीति कार्यों की विभिन्नताओं के साथ कालजयी सृजनात्मक साहित्य सेवा सूची

(१)- पूर्वाचार्यों का गुरूजन अनुभव साहित्य~~

१-सन्तदास अनुभव विलास~ श्री वैष्णव सम्प्रदाय के परिवाराचार्य कृत ।
२-हरिसागर ~ स्वामी हरिरामजी वैरागी कृत ~मूल तथा भाषानुवाद टीका (दोनों)
३-वाणीप्रकाश~स्वामी हरिरामजी, श्रीजीयाराम जी , श्रीसुखराम जी श्रीअचलराम जी, श्रीउतमराम जी ,रामप्रकाश जी (छ: महात्माओं की वाणी) मूल ।
४-अचलराम भजन प्रकाश ~ स्वामीअचलरामजी कृत भजन (तीन साईज अलग में) मूल ।
५-उमाराम अनुभव प्रकाश ~ अवधूत श्रीउमाराम जी कृत भजन (स्वामी सुखराम जी द्वारा लिखित एवँ स्वामी अचलराम जी द्वारा सँशोधित - शुद्ध प्रकाशन का पुनरावर्तन) ।
६-उतमराम भजन प्रकाश ~ स्वामी श्रीउतमरामजी कृत भजन ।
७-अवधूत ज्ञान चिन्तामणि ~ स्वामी उतमरामजी कृत ~ इन्दव, झूलना इत्यादि छन्द काव्य ।
८-सुगम चिकित्सा (दो भागों में) ~ स्वामी श्री अचलराम जी द्वारा लिखित ।
९-सुगम उपचार दर्पण ~ स्वामी देवीदानजी महाराज द्वारा अनुभूत औषधीय भण्डार।
१०-हिन्दू धर्म रहस्य ~ स्वामी अचलराम जी द्वारा सौ वर्ष पूर्व की लिखित
११-सन्ध्या विज्ञान~स्वामी अचलराम जी द्वारा लिखित जीवन परिचय सहित ।

(२)-विभिन्न टीकाकृत भाष्यानुवाद के ग्रन्थ~

१-हरिसागर ~ ग्यारह सौ साखियों की सरस एवँ सरल भाषा-टीका ।
२-सुबोध टीका दर्पण~ (हरिरामजी वैरागी कृत ६२ भजनों ,जीयाराम जी कृत ५ भजनों, उतमराम जी कृत ९ विपर्यय भजनों , सुन्दरदासजी कृत विपर्यय अँग के छन्दों की टीकाएँ और रामप्रकाशाचार्य कृत भजन। ,
३- सुखराम दर्पण ~स्वामी सुखरामजी कृत चौरासी भजनों की सविस्तृत भाषा-टीका ।
४-अचलराम ग्रन्थावली (तीन जिल्दों में) तीन भाग ~भजनो की सरल टीकाकरण
५- अवधूत गीता ज्ञान दर्शन ~श्री सुखराम जी कृत छन्दों एवँ श्रीबनानाथजी कृत परवाणा की सरल टीका।
६-श्री अचलरामजी कृत सैनाणी (सैलाणी) की सरल टीका।
७-उतम ज्ञान कटारी ~स्वामी हरिसिंह जी कृत छन्दों की टीका ।
८-नासकेत गीता~नचिकेता जनम सहित चरित्र काव्य -सरल टीका सहित ।
९-चर्पट पँचक दर्शन ~शँकराचार्य कृत चार पँचक, विष्णु सहस्र नाम ,वज्रसूचिकोपनिषद, श्रीसूक्त आदि विविधता में आठों की सरल भाष्यानुवाद टीका एवँ पद्यानुवाद छन्द ।
१०-ज्ञान कटारी ~हरिसिंह जी कृत ज्ञान कटारी की अनुपम भाषा-टीक

(३)-शोध कार्यकारी साहित्य~~

१-रामदेव ब्रह्म पुराण ~सरल भाषा में रामदेवजी का सम्पूर्ण जीवन शोद्ध रहस्य बिन्दुओं सहित।
२-लोक देवता बाबा रामदेव (पोल में ढोल) - दो सौ से अधिक प्रश्न और समीक्षात्मक लेख का
३-विश्व सर्व वाद कोश~ विश्व मे प्रचलित १२६ वाद का विधैय- परिचय ।
४-वेदान्त शब्द कोश~विभिन्न वेदान्त के आर्ष ग्रन्थों मे प्रयुक्त कठिन शब्दों का सरल अर्थ ।
५-अध्यात्म सन्त वाणी शब्द कोश~ विविध सन्तों के भजनो में आये शब्दों का सरलार्थ ।
६-भारत का व्यास ? (भारत के अट्ठाईस व्यास के सम्बन्धित इतिहास) कथन ।

(४)-स्वकृत गद्यपद्य निजी साहित्य~

१- अध्यात्म दर्शन (दो खण्ड-वेदान्त) -इन्दव छन्दों एवँ सरल व्याख्या में स्थूल-शूक्ष्म प्रक्रिया सहित वेदान्त के गूढ विषयों का रहस्यमयी कथन एवँ शब्द कोश सरलार्थ (दो जिल्दों मे) है ।
२स्वप्न फल दर्पण इक्कीस सौ से अधिक स्वप्न फल सहित , स्वप्न कब क्यों आता है ,सफल कब होता है ,मान्यता सही है या गलत ?
३-उतम स्वर योग~ स्वरोदय का सम्पूर्ण विश्लेषण सहित साधना की विधि ।
४-भेष यष्टिका ~भेष परिचय प्रश्नावली एवँ भजन ।
५-रामप्रकाश ज्योतिष दोहावली~ज्योतिष की सम्पूर्ण जानकारी ,लग्न-मुहुर्तादि विधि सहित ।
६-ज्योतिष मुहूर्त दोहावली ~विविध प्रकार से गृहस्थाश्रम एवँ आजीविका उद्योगों सहित विभिन्न डेढ सौ से अधिक मुहुर्त के लिये प्रयुक्त सरलीकरण ।
७-सँस्कार चन्द्रिका~मानव जीवन को सँस्कारवान बनाने मे सनातन सौलह सँस्कार सरल भाषा मे
८- नशा खण्डन दर्पण~छब्बीस नशों का परिचय ,परिणाम ,होनेवाली हानियाँ, छोड़ने के उपाय ।
९-विश्वकर्मा कला दर्शन~ विश्वकर्मजी का परिचय, वास्तु के साथ सचित्र गज-निर्माण-पूजन
१०-श्री विश्वकर्मा भजन माला ~ समस्त कला के सृजेता विश्वकर्मा जी की महिमा के भजन
११-कामधेनु~गायों के प्रकार, पँचगव्य से बनने वाले सौ से अधिक औषधियों का प्रयोग, प्राचीन प्रमाणों के साथ महिमा मण्डन ।

~ (५)-पद्यात्मक भजन-छन्द रचना ग्रन्थ ~

१-रामप्रकाश भजन प्रभाकर~ पाँच सौ से अधिक भ्यानक ,रोचक, यथार्थ सहित विविध विषय ।
२-रामप्रकाश शब्द सुधाकर~ सात द्वीपों में ब्यालिस खण्डों ,पर्वतों, समुद्रों सहित पूरा परिचय ।
३-रामप्रकाश शब्दावली~ विषयों की विभिन्नता के साथ आध्यात्मिक वेदान्त के छन्द-भजन ।
४-उतमराम अनुभव प्रकाश~ केवल भजनों का भण्डार प्रत्येक राग-रागनियों में ।
५-उतमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका~ स्वामी उतमरामजी के चयनित एवँ रामप्रकाशाचार्य कृत भजनों का भक्ति~ज्ञान ,नीति मय सँगम ।
६-रामप्रकाश वेदान्त दोहावली~ हजार से ऊपर सरल दोहों में जीव-ईश्वर, माया-ब्रह्म, का वेदान्त विवेचन और श्री पुरुषोत्तमदास (पीताम्बर जी) कृत तीन भजनों की अनुपम टीका ।
७-रामप्रकाश छन्दावली~सवा दो हजार इन्दव-सवैयों एवँ दोहों का भण्डार ।
८- गूढार्थ भजन मञ्जरी~ गूढार्थ के सौ दोहे-राश्यार्थ के सौ दोहे, शिक्षा दोहा शतक ।
९-निर्गुण राम भजनावली ~ १५० वेदान्त के भजन
१०-लाख वर्षीय ईसवी कैलेण्डर (पत्राकार) - एक ही वृताकार ग्लेज कागद पर छपा वार-मास सहित तथा बिना कैलेण्डर के वर्तमान काल की वार तारीख और बिना घड़ी के समय देखने की प्राचीन विधि।
११-रामप्रकाश भजन माला - सँगीत के सर्गुण-निर्गुण ,ज्ञान, भक्ति मय डेढ सौ भजन ,अनुपलब्ध ।

~ (६)-अन्य सँशोधित प्रचलित ज्ञान साहित्य ~

१- सर्व सिद्ध नव राम स्तोत्र - केवल नित्य पाठ करने मात्र से स्वतः सिद्धि फलदायक स्तुतियाँ ।
२-गायत्री सँग्रह ~चालीस देवोपासना की विभिन्न मूल गायत्री पाठ ।
३-राम रक्षा सँग्रह ~ विभिन्न प्रतिष्ठित महात्माओं की इक्कीस रामरक्षा सिद्धि विधि सहित ।
४-निर्गुण राम भजनावली ~ वेदान्त प्रक्रिया के १५० भजनों का अपूर्व ग्रन्थ।
५-गोरख बोध वाणी सँग्रह~ दोसौ वर्ष पूर्व के हस्त लिखित ग्रन्थ की टीका सहित भजन ।
६- गुरू गीता सरल भाषा -शिव-शिवा सँवाद मूल गरूगीता का सरलीकरण भाषा।
७-अन्त्येष्टि शव यात्रा~मानव के अन्तिम समय में रोगी की सेवा सँस्कार सहित अन्त्येष्टि क्रिया विधि ।
८-स्वाध्याय वेदान्त दर्शन (सारुक्तावली,विचार माला, विचार चन्द्रोदय , विचार सागर, ज्ञान कटारी-मूल काव्य पाठ ग्रन्थ)जिज्ञासाओं के लिये उपयोगी ।
९-वेदान्त भूषण-वैराग्य दर्शन (भृतहरि वैराग्य शतक-हरद्याल कृत ,भावरसामृत,बोध सागर का मूल काव्य पाठ-कण्ठस्थ करने व चित शान्तिपूर्ण प्राप्ति के लिये उपयोगी ।
१०-व्यासपीठ के वक्तागण सावधान ! समाज और साधु सावधान इत्यादि कुछ छोटे पाकेट बुक ।
११- अस्सी के लगभग बाहरी सन्तों के भजन ग्रन्थों का सँशोधन-प्रकाशन -निशुल्क सेवा ।